

कोल्हानम्

छोटानागपुर पठार की जनजातियों के सनातन संपर्कों को
तलाशती ईसा-पूर्व 100 की महागाथा

द्वितीय संस्करण / 2021

लेखक

डॉ० मिथिलेश कुमार चौबे

editorjrr@gmail.com

Ph-09334077378

M

K

ज्ञानज्योति एजुकेशनल एंड रिसर्च फाउंडेशन ट्रस्ट

जमशेदपुर, झारखण्ड..831005

संपर्क-9334077379

Second Edition © 2021 Author

कोल्हानम् (उपन्यास) के प्रथम संस्करण 2020 का प्रकाशन एवं मुद्रण लेखक द्वारा ज्ञानज्योति एजुकेशनल एंड रिसर्च फाउंडेशन, जमशेदपुर के सहयोग से किया गया है।

सर्वाधिकार सुरक्षित है। इस उपन्यास के किसी भी अंश को लेखक की अनुमति लिए बिना किसी भी रूप में चक्र-मुद्रण द्वारा या अन्यथा पुनः प्रकाशन करने की अनुमति नहीं है।

प्रकाशक:

ज्ञानज्योति एजुकेशनल एंड रिसर्च फाउंडेशन(ट्रस्ट)
शास्त्रीनगर-3, कदमा, जमशेदपुर, झारखण्ड- 831005

दूरभाष : 91-9334077378

Email : editorjrr@gmail.com

ISBN : 978-93-5457-769-7(Second Edition)

मूल्य : 150 रुपये

मुद्रण : जमशेदपुर रिसर्च रिव्यू ,62, ब्लॉक-3, कदमा,
जमशेदपुर, झारखण्ड-831005

प्रस्तावना

झारखण्ड के पहाड़ पठार और आरण्यक विभिन्न वनवासी समूहों के सदियों से निवास-स्थान रहे हैं। कोल्हानम् की कहानी इन्हीं धरतीपुत्रों के शौर्य, बलिदान और सनातन धर्म-संस्कृति के लिए मर मिटने की गाथा है। यह वह कहानी है, जो लिखित इतिहास में नहीं, बल्कि इन वनवासियों की लोक-कथाओं, लोक-कलाओं तथा लोकगीतों में कहानियों की शक्ल में आदि काल से दर्ज हैं, तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक निरंतर प्रवाहित होती रही हैं।

भारतीय भारतीय पुरातात्विक विभाग द्वारा इस प्रदेश में कई प्रागैतिहासिक असुर-स्थलों, शिलाचित्रों, प्राचीन मंदिरों आदि की खोज की गई है। कोल्हानम् में इन्हीं पुरातात्विक साक्ष्यों की पृष्ठभूमि में इन वनवासियों की शौर्य-गाथाओं को एक बेहद रोचक कहानी के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

इस उपन्यास में जिन ऐतिहासिक घटनाओं और स्थानों का जिक्र किया गया है, वे किसी न किसी रूप में भारतीय पुरातात्विक विभाग के नवीनतम उत्खननों, प्राचीन बौद्ध ग्रंथों, इतिहास की मानक पुस्तकों आदि में उपलब्ध है, तथा आधुनिक इतिहासकारों द्वारा उद्धरित हैं।

इस उपन्यास में वर्णित स्थान, जैसे: मुंडेश्वरी मंदिर (कैमूर), टंगीनाथ धाम (गुमला), हंसा (खूंटी), सरिद्वेल (खूंटी), तसना एवं करकरी, नदियाँ (खूंटी), सीताकुंड (हजारीबाग), सरजमहातू (चाईबासा), हाराडीह (राँची) इत्यादि वर्तमान झारखण्ड राज्य में पुरातात्विक महत्व के स्थान हैं।

उपन्यास को रोचक बनाने तथा ऐतिहासिक स्थानों एवं घटनाओं को एक कहानी का रूप देने के उद्देश्य से लेखक द्वारा कुछ काल्पनिक घटनाओं एवं काल्पनिक चरित्रों की मदद ली गई है।

इस उपन्यास में इस क्षेत्र की दो प्रमुख जनजातियों असुरों और मुंडाओं के मगध के मौर्य, शुंग और कण्व और दक्षिण के आंध्र-भृत्य सातवाहन राजवंशों के साथ ईसा-पूर्व संबंधों का वर्णन है। कोल्हानम् में सम्राट अशोक, पुष्यमित्र शुंग और आंध्र भृत गौतमी-पुत्र शतकर्णी का चरित्र-चित्रण रूढ़िबद्ध न होकर बल्कि आधुनिक अनुसंधानों के आधार पर किया गया है। कोल्हानम् की कहानी में 'तिस्स' जैसे कुछ ऐसे चरित्रों को भी शामिल किया गया है, जिनकी चर्चा बौद्ध इतिहासकारों द्वारा की गई है, लेकिन उन्हें इतिहास की किताबों में अधिक महत्व नहीं दिया गया है।

वैदिक, बौद्ध, जैन, आजीवक, आदि बृहद सनातन धर्म समाज का अभिन्न हिस्सा हैं। सनातन धर्म समाज की वर्तमान चुनौतियों को रेखांकित करता यह उपन्यास, भारतीय इतिहास और पौराणिक कथाओं को वर्तमान सन्दर्भ में प्रस्तुत करता है, तथा अपने कथ्य के माध्यम से झारखण्ड के जंगल और पठार में युद्ध स्तर पर जारी धर्म परिवर्तन के जूनून तथा आधुनिक भारत में शोध, शोध-पत्र लेखन और इतिहास-लेखन के नाम पर होने वाले बौद्धिक घोटालों और साजिशों की बेहद सूक्ष्मता से परतें उधेड़ता है।

डॉ० मिथिलेश

दिनांक 20 अक्टूबर 2021

स्थान:

1

छरहरे जिस्म वाली उस युवा लेखिका की त्वचा का रंग गहरा तांबई था और उसकी आँखों की चमकती पुतलियाँ ‘एमराल्ड’ की तरह गहरे हरे रंग की।

सधे कदमों से मंच की तरफ बढ़ती आज वह दो हजार लोगों से भरे इस प्रेक्षागृह का प्रमुख आकर्षण थी।

पलों में उसकी प्रभावशाली आवाज प्रेक्षागृह की बंद दीवारों के बीच गूँजने लगी- “वे कोल्हान की दुर्गम और कठोर पठारी ढलानों के आदिम निवासी थे- इंद्र के वज्र से भी कठोर और कर्ण के कवच से भी मजबूत लोहे के आयुधों के आदिम निर्माता! उनके द्वारा निर्मित लोहे की तलवारें भारत के पहले साम्राज्य की स्थापना और मौर्य सम्राटों के दिग्विजय का कारण बनीं।”

वह साँस लेने के लिए एक पल के लिए रुकी, लेकिन, अगले ही पल सन्नाटे को चीरती उसकी आवाज फिर से प्रेक्षागृह में गूँजने लगी- “बात ईसा-पूर्व 266 की है। अशोक मौर्य ने कलिंग विजय के उपरांत बौद्ध धर्म को राजधर्म घोषित कर, अपनी रक्तरंजित तलवार अपने एकमात्र जीवित सहोदर भाई तिस्स को सौंप दी। कहते हैं, निर्ग्रन्थ से नवबौद्ध बने तिस्स की हत्या के बाद, उसके अंध-समर्थकों ने हजारों जैनियों, वैदिकों और आजीवकों के कटे मस्तकों का पहाड़ खड़ा कर दिया। लेकिन, तिस्स की हत्या के तीस वर्ष बाद जब यह फौलादी तलवार अंतिम मौर्य सम्राट बृहद्रथ के वैदिक सेनापति पुष्यमित्र शुंग के हाथों में प्रगट हुई तो उसने मगध के अयोग्य और कायर सम्राट बृहद्रथ मौर्य का वध कर भारत के इतिहास की दिशा बदल दी।

कालान्तर में वही तलवार, शृंग और कण्व शासकों के हाथों से फिसलती हुई दक्षिण के आंध्रभृत्य सातवाहनों के पास पहुँची। यह वही तलवार थी, जिसने सनातन की मर्यादा को फिर से स्थापित किया।

मेरी यह पहली पुस्तक 'कोल्हानम्' समर्पित है उन्हें, जिन्होंने यह अजेय तलवार बनायी, और उन्हें, जिन्होंने मरकर भी सनातन संस्कृति को पुनर्जीवन दिया।

मेरी नयी पुस्तक 'कोल्हानम्' इतिहास है, उन जनजातियों का जिन्होंने अपना इतिहास तो नहीं लिखा, किन्तु पहाड़ों, गुफाओं, लोक-कलाओं, लोक-गीतों, तथा लोक-कथाओं के माध्यम से अपने शौर्य, पराक्रम और प्रकृति-प्रेम का अद्भुत वर्णन किया।

.....परन्तु, इससे पहले कि वह अपनी बात को आगे जारी रख पाती, अचानक ही प्रेक्षागृह की दीवारें गोलियों की आवाज से काँप उठीं और एक गोली उस युवा लेखिका के उदर को छेदती हुई स्टेज के पीछे की सफेद दीवार में कहीं गुम हो गई।

गोली लगने के अगले ही पल वह स्टेज पर भरभरा कर गिर पड़ी और उसके जिस्म से रिसते रक्त के कतरे, उसकी कृति 'कोल्हानम्' के पन्नों को रक्ताभिसिक्त करने लगे।

धीरे-धीरे बिजली सी कौंधती उसकी आँखों की हरी पुतलियों की चमक मंद पड़ने लगी।

पुस्तक विमोचन समारोह का यह एक रक्तरंजित समापन था!

*

उसे घायल अवस्था में अस्पताल पहुँचाकर, देर रात जब वह अपने घर लौटा तो उसका मन भरा हुआ था। उसने टेलीविजन ऑन किया। लोकल टीवी न्यूज़ पर इस हमले की खबर सुर्खियों में थी- 'आज संध्या सात बजे

एक युवा लेखिका को उस वक्त गोली मार दी गई जब वह अपनी पहली पुस्तक के विमोचन समारोह के दौरान उपस्थित लोगों को संबोधित कर रही थी। आनन-फानन में उसे निकटवर्ती अस्पताल पहुँचाया गया, जहाँ उनकी हालत अब भी गंभीर बनी हुई है।¹

निशांत ने निराशा के भाव के साथ टीवी को बंद कर दिया और अपनी आँखें बंद कर ली।

निशांत को अपनी डेढ़ साल की पुलिस की नौकरी के दौरान मरे हुए, मारे हुए और मरते हुए लोगों को देखने की आदत पड़ गई थी। लेकिन, यह वारदात उन वारदातों से काफी अलग थी। गोली से घायल ब्यूटी नगनिका उसके बेहद करीबी मित्रों में शामिल थी। इतनी करीबी कि गोलीबारी के उपरांत प्रेक्षागृह में मची भगदड़ और फैलती दहशत बीच तेजी अचेत होती ब्यूटी ने अपना बैग तथा अपनी पुस्तक 'कोल्हानम्' की रक्त-रंजित प्रति उसके हाथों में थमा दी थी।

वैसे तो वह ब्यूटी को पिछले दस सालों से जानता था, किन्तु, पिछले तीन-चार सालों में उनकी घनिष्टता काफी बढ़ गई थी। यही वजह थी कि सप्ताह भर पहले जब उसे ब्यूटी के पुस्तक विमोचन समारोह का निमंत्रण-पत्र मिला तो वह स्वयं को कार्यक्रम में आने से रोक नहीं पाया था। परन्तु, इस कार्यक्रम के इस तरह के रक्त-रंजित समापन की आशंका उसे कतई नहीं थी।

निशांत ने अपनी आँखें खोल, एक नजर सामने टेबल पर पड़ी खून से सनी पुस्तक पर डाली। पुस्तक के मुख्य पृष्ठ पर लगा खून अब जम कर थोड़ा सूख गया लगता था। उसने पुस्तक को अपने हाथों में लेकर उलट-पलट कर देखा। खून के कुछ कतरे अंदर के पन्नों में भी रिस गए थे। इस विचार से कि यह खून ब्यूटी का है, उसका मन अजीब सा हो गया।

इसके बाद उसने पुस्तक को पुनः टेबल पर रखकर पास ही पड़े ब्यूटी के बैग को उठाया। कौतूहलवश, बैग का चेन खोल कर अन्दर देखा। बैग में

लड़कियों की जरूरतों के सामान के अलावा एक डायरी भी थी। उसने जिज्ञासावास डायरी के पन्ने पलटने शुरू किये तो उसकी आँखें फैल गयीं। डायरी के पहले पन्ने के उपरी हिस्से में एक स्थान का नाम और एक तारीख दर्ज थी- **कोल्हानम्-13 जुलाई 2016**

*

निशांत की आँखों के सामने कोल्हानम् का तीन साल पुराना वह दृश्य ताजा हो गया, जब उसकी ही सलाह पर ब्यूटी नगनिका प्रोफेसर मित्रा से मिलने उसके घर पहुँची थी और वह स्वयं प्रोफेसर मित्रा के बागीचे में रखे गमलों में उग आई घास-पात को उखाड़ रहा था।

ब्यूटी ने उसे घास उखाड़ते देख बेहद मजाकिया लहजे से पूछा- “कोल्हानम् में पीएचडी कर रहे हो या घास उखाड़ रहे हो?”

“उखाड़ तो घास ही रहा हूँ, किन्तु इंडिया में इसी को पीएचडी करना कहते हैं।” निशांत ने व्यंगात्मक लहजे में उत्तर दिया।

“घास उखाड़ते हुए कितने साल साल हो गए?” ब्यूटी ने मुस्कराते हुए दूसरा सवाल दाग दिया।

“छः साल!” निशांत अपने चेहरे पर आये निराशा के भाव को छिपा नहीं पाया।

“क्यों? कमलेश का तो दो साल में ही गया था” ब्यूटी ने ताना मारा।

“कमलेश का रिसर्च गाइड उसका फूफा था। हमारा रिसर्च गाइड तो मेरी कास्ट का भी नहीं है।” निशांत की आवाज में कसैलापन साफ-साफ झलका।

“पीएचडी के बाद क्या करोगे?” ब्यूटी ने विषय बदलने की गरज से सवाल किया।

“परमानेंट बहाली होने से तो रही। अगर किस्मत ठीक रही तो किसी डिग्री कॉलेज में अस्थायी टीचर बन जाऊँगा। सरकार को जब टके सेर के भाव से पीएचडी-नेट पास शिक्षक मिल रहे हों तो फिर जरूरत क्या है परमानेंट टीचर बहाल करने की!” निशांत ने तल्लू से उत्तर दिया।

ब्यूटी ने भी निराशा से अपना सर हिलाते हुए उसकी बातों का समर्थन किया।

निशांत आगे बोला- “देखो ब्यूटी, अपने देश में सारे के सारे सरकारी कॉलेज और युनिवर्सिटी मैनी गाय जैसे हैं, जिसे मुठ्ठी भर लोग दूह रहे हैं, अस्थायी वाले या तो गाय को चारा खिला रहे हैं, या उसका गोबर फेंक रहे हैं।”

“और, स्टूडेंट?” ब्यूटी ने सवाल किया।

“स्टूडेंट तो गाय की थन पर टकटकी बांधे, खूटे से बंधे बछड़े हैं, जिन्हें दिखाकर गाय के थन में दूध उतारा जाता है।”, निशांत का चेहरा गंभीर हो गया।

“निशांत, तुम तो पीएचडी करते-करते फिलासफर हो गए हो!” ब्यूटी, माहौल को हल्का करने के ख्याल से बोली।

“तुमको पता है, पीएचडी का फुल-फार्म क्या होता है?”, निशांत ने पूछा।

“डॉक्टर आफ फिलासफी”, ब्यूटी ने उत्तर दिया।

“जब हिस्ट्री, में पीएचडी कर रही हो तो फिर ‘डॉक्टर ऑफ फिलासफी’ की डिग्री क्यों?” निशांत ने सवाल किया।

ब्यूटी ने अनभिज्ञता से कन्धा उचकाया।

“इसलिए, क्योंकि आठ साल तक युनिवर्सिटी में चप्पल घिसते-घिसते हर शोधार्थी फिलोसफर हो जाता है।”, निशांत व्यंग भरे लहजे में बोला

“अगर तुम्हारा रिसर्च गाइड डॉ० मित्रा इतना बड़ा भारी घाघ है तो मुझे इसके चक्कर में क्यों फंसा रहे हो?”, ब्यूटी ने बनावती गुस्सा दिखाया।

“अरे यार! हिस्ट्री डिपार्टमेंट में पीएचडी कराने वाले दो ही स्थायी प्रोफेसर हैं। एक का नाम है प्रोफेसर मित्रा, और दूसरे का प्रोफेसर विभीषण शाक्य! प्रोफेसर विभीषण शाक्य से मिलोगी तो त्राहिमाम करने लगोगी। पिछले दस साल में उसके तीन स्कॉलर डिप्रेशन में चले गए हैं।”, निशांत ने कहा।

इसके बाद कुछ पल चुप रहने के उपरांत वह एक गहरी साँस लेकर बोला- “प्रोफेसर मित्रा और प्रोफेसर विभीषण के रिश्ते भी अजीब हैं। डिपार्टमेंट में दोनों दिनभर साथ-साथ खाते और हँसी-मजाक करते हैं। लेकिन, फाइनल मौखिक परीक्षा के वक्त एक दूसरे के रिसर्च स्कॉलर की पीएचडी डिग्री में अडंगा लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ते।

मतलब, पूरा हिस्ट्री डिपार्टमेंट बर्बाद है?”, ब्यूटी ने निराशा के साथ कहा।

निशांत व्यंग भरे लहजे में बोला- “कोई आज से थोड़े ही है। जब से विश्वविद्यालय बना है, तब से है। पहला हेड स्वयं पीएचडी नहीं था, दूसरे वाले से पीएचडी हुआ नहीं, तीसरा डिग्री खरीदकर लाया था। उसके खिलाफ आज भी इन्क्वायरी चल रहा है।”

अचानक निशांत ने उसे इशारा किया- “लगता है, प्रो० मित्रा तुम्हे बुला रहे हैं।”

ब्यूटी ने कमरे के अन्दर घुसते ही कंप्यूटर टेबल के पास खड़े प्रो० मित्रा पर एक सरसरी नजर डाली।

प्रो० मित्रा, अधेड़ से दिखने वाले माध्यम कद के एक गोल-मटोल व्यक्ति थे। उन्होंने अपनी पतलून को पेट के उपर जरूरत से थोड़ा ज्यादा चढ़ाकर बेल्ट से टाईट कर रखा था। ब्यूटी को पहली नजर में प्रो० मित्रा ‘श्री इंडियट’ फिल्म के ‘प्रोफेसर वायरस’ जैसे दिखे, जो उस फिल्म में गंभीरता का जबरन लबादा ओढ़ कर प्रोफेसरी का रुतबा बनाये रखना चाहता था।

निशांत ने उसे थोड़ी देर पहले ही पीएचडी करने वालों के लिए अघोषित किन्तु अनिवार्य नियम समझाए थे। यह वह ब्रह्म-ज्ञान था जो हर सीनियर पीएचडी रिसर्चर अपने जूनियर को देता है। मसलन, पीएचडी रिसर्चर के लिए यह अनिवार्य होता है कि जब भी वह अपने रिसर्च गाइड से मिलें, खीसें निपोरतें हुए उसका चरणस्पर्श करें, और अपने हाव-भाव से यह जतायें कि ‘हम आपके शरणागत हैं गुरुदेव!

निशांत की सलाह मानते हुए ब्यूटी ने भी प्रो० मित्रा का चरणस्पर्श कर इसी परम्परा को आगे बढ़ाया।

“प्रो० मित्रा बगैर किसी भूमिका के सीधे-सीधे मुख्य विषय पर आ गए- “किस टॉपिक पर पीएचडी करना चाहती हो?”

“सर, मैं भारत के प्राचीन इतिहास के किसी अछूते हिस्से का अध्ययन करना चाहती हूँ।”, ब्यूटी ने विनम्रता के साथ उत्तर दिया।

“देखो, ये टॉपिक बहुत ही डिफिकल्ट है। कोई ऐसा सिंपल टॉपिक ले लो, जिसका मटेरियल आसानी से इन्टरनेट पर मिल जाए। लड़की हो, मटेरियल के लिए कहाँ-कहाँ मारी-मारी फिरोगी?”, उसकी बातें सुनकर प्रो० मित्रा भावहीन स्वर में बोले।

“सर, मुझे लगता है कि हमें अपने देश के प्राचीन इतिहास के अनछुए हिस्सों का अध्ययन करना चाहिए।”, ब्यूटी ने आत्मविश्वास के साथ अपनी बात रखी।

“सुनो, मेरे पास 20 साल के रिसर्च का अनुभव है। जोश में आकर कोई उलटा-सुलटा टॉपिक मत लो। तुम्हारा पीएचडी लटक जाएगा। तुम ऐसा करो, भारत के स्वतंत्रता संग्राम में ‘आदिवासियों की भूमिका पर पीएचडी कर लो। अभी ये हॉट टॉपिक है। इसपर बहुत मटेरियल नेट पर उपलब्ध है। तुम्हे दो-तीन साल में पीएचडी की डिग्री मिल जाएगी।”, प्रो० मित्रा ने उसकी दलील को अनसुनी करते हुए हिदायत दी।

“लेकिन सर, मेरी दिलचस्पी प्राचीन भारत के इतिहास में ही है”, ब्यूटी ने दृढ़तापूर्वक अपनी बात रखी।

“सुनो, तुम पहले पीएचडी की डिग्री ले नौकरी ज्वाइन कर लो। उसके बाद जिन्दगी भर सरकारी अनुदान पर रिसर्च करती रहना। अगर पीएचडी लटक गया तो तुम्हारा करियर डीरेल्ड हो जायेगा।”, मित्रा ने उसे समझाने की कोशिश की।

प्रो० मित्रा पर अपनी दलील का कोई असर न होते देख, ब्यूटी निराश स्वर में बोली- “ठीक है सर, मैं आपकी सलाह पर विचार कर जल्दी ही आपसे फिर मिलूँगी।”

इसके बाद प्रो० मित्रा के जवाब का इन्तजार किये बगैर वह तेजी से उनके कमरे से बाहर निकल आयी।

प्रो० मित्रा के घर के गेट के ठीक बाहर निशांत, उनके बच्चों को स्कूल पहुँचाने लिए अपनी मोटरसाईकिल स्टार्ट कर रहा था। ब्यूटी ने एक नजर निशांत पर डाली और लगभग चीखते हुए बोली- “पीएचडी के नाम पर होने वाले रिसर्च इस देश के सबसे बड़े बौद्धिक घोटाले हैं!”

उसकी बात सुनकर निशांत ने घबरा कर प्रो० मित्रा के कमरे की तरफ देखा। प्रो० मित्रा अपने कमरे से बाहर निकलकर क्रोध और आश्चर्य की साझा अनुभूति के साथ ब्यूटी की तरफ ही देख रहे थे।

वह प्रो० मित्रा के घर से निकलकर कुछ ही कदम आगे बढ़ी होगी कि उसे सामने एक कैटीन दिखा। गर्मी और प्यास से बेहाल उसके पैर, अनायास ही कैटीन की तरफ बढ़ गए।

*

कोल्हानम् का कैटीन एक खंडहरनुमा जन्नत था। जिसके छत पर टंगी एस्बेस्टस की टूटी हुई चादरें अनुपम सौन्दर्य उत्पन्न कर रहीं थीं। कैटीन के

एक कोने में एक लड़का पकौड़े तल रहा था, तथा उसका साथी वहाँ मौजूद ग्राहकों को चाय, पकौड़े आदि सर्व कर रहा था। एक खाली बेंच देख, ब्यूटी उस पर बैठ गयी।

तभी, पीछे से किसी ने उसे टोका- “देवीजी, उस बेंच पर मत बैठिये, उसके ठीक ऊपर शांतिदूत कबूतरों का सार्वजनिक शौचालय है।” ब्यूटी ने ऊपर की तरफ देखते हुए जल्दी से अपने बैठने की जगह बदली।

चायवाला लड़का बिना कुछ बोले उसके सामने पानी की एक बोतल रख गया। तभी पीछे से किसी ने उसे टोका- “प्रोफेसर मित्रा से मिल कर आ रही हो? टॉपिक फाइनल हो गया क्या?” उसने गर्दन घुमा कर पीछे की तरफ देखा। सांवले रंग की तीखे नैन-नक्श वाली एक लड़की हौले-हौले मुस्कुराती हुई उसी की तरफ देख रही थी।

ब्यूटी ने निराशा के साथ ‘न’ की मुद्रा में सर हिलाया।

इसी बीच सांवले रंग और तीखे नैन-नक्श वाली वही लड़की उसके ठीक बगल में आकर बैठ गयी और बोली- “मै मैत्रेयी हूँ। मै भी प्रोफेसर मित्रा के मार्गदर्शन में ही पीएचडी कर रही हूँ। मुझे पता है, वह तुम्हारे टॉपिक पर कभी नहीं मानेंगे।”

“तुम्हे कैसे पता”, ब्यूटी ने हैरत से पूछा।

“क्योंकि, कोल्हानम् में सभी शोधार्थियों साथ ऐसा ही होता है। कितना भी अच्छा रिसर्च प्रपोजल लेकर जाओ ‘हेड’ या ‘डीन’ उसपर कलम जरूर चलायेंगे और अंत में अपने मन का टॉपिक फाइनल कर देंगे।”, मैत्रेयी ने गंभीरता के साथ उत्तर दिया।

“लेकिन, टॉपिक का चॉइस तो रिसर्चर का अधिकार है”, ब्यूटी उत्तेजित होती हुई बोली।

“तुम्हारी बात तो ठीक है, लेकिन अगर पीएचडी करनी है तो रिसर्च गाइड की बात भी माननी पड़ेगी। प्रोफेसर मित्रा उसी टॉपिक पर पीएचडी करवायेंगे, जिसका उसके पास रेडीमेड मटेरियल उपलब्ध है। उन्हें प्रमोशन चाहिए, वह जल्दी में हैं।”, मैत्रेयी ने वजह स्पष्ट किया।

“तुम्हारा टॉपिक क्या है?”, ब्यूटी ने जिज्ञासा दिखाई।

“भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में झारखण्ड के मूल निवासियों की भूमिका”, मैत्रेयी ने उत्तर दिया।

“हे भगवान! प्रोफेसर मित्रा ने तो मुझे भी लगभग यही टॉपिक सजेस्ट किया है।”, ब्यूटी हैरत भारी आवाज में बोली।

मैत्रेयी हँसते हुए बोली- “अब आश्चर्य से जान मत दे देना! “उनके दो स्कॉलर पहले से ही इसी से मिलते-जुलते टॉपिक पर रिसर्च कर रहे हैं। “वैसे, तुम किस टॉपिक पर काम करना चाहती हो?”, उसने पूछा।

“मैं भारत के प्राचीन इतिहास के किसी अनछुए हिस्से का अध्ययन करना चाहती हूँ।”, ब्यूटी ने उत्तर दिया।

“फिर तो तुम प्रोफेसर विभीषण शाक्य से मिलो। उन्होंने नागपुर युनिवर्सिटी में प्राचीन बुद्धिस्ट साहित्य पर बहुत काम किया है।”, मैत्रेयी ने सुझाव दिया।

“लेकिन, क्या वे तैयार होंगे?” ब्यूटी ने संदेह जताया।

“तुम एक बार उनसे मिलो तो!” मैत्रेयी ने उसे आश्वस्त किया।

“ये प्रोफेसर विभीषण शाक्य कहाँ मिलेंगे मुझे?” ब्यूटी ने व्यग्रता से पूछा।

“मेरे घर पर। वे पापा हैं मेरे!” मैत्रेयी ने उसे चौकाया।

“ओह!” ब्यूटी के मुँह से अनायास ही निकल गया।

“कल मिलवाती हूँ तुम्हे पापा से! लेकिन रिसर्च से सम्बन्धित सारे लफड़े तुम्हारे। उसमें तुम मुझे मत घसीटना।”, मैत्रेयी ने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा फिर मुस्कुराते हुए बोली- “लो, अब तिवारी के पकौड़े खाओ! सारे कोल्हानम में सिर्फ यही एक चीज मन माफिक मिलती है।”

2

जब ब्यूटी प्रो० विभीषण शाक्य के घर पहुँची तो प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकी। प्रो० विभीषण का कमरा बौद्ध साहित्य और इतिहास की सैकड़ों किताबों से भरा पड़ा था। उसने महसूस किया कि डॉ० विभीषण शाक्य का घर छोटा-मोटा रिसर्च सेंटर ही था।

डॉ० विभीषण शाक्य ने बातों-बातों में ब्यूटी को बताया कि वे लोग मूल रूप से महाराष्ट्र से हैं। फिलहाल, वे चीन की किसी रिसर्च संस्था द्वारा स्पोन्सर्ड एक बड़ी अनुसंधान परियोजना पर कार्य कर रहे हैं। जिसमें, उन्हें यह सिद्ध करना कि पाली भाषा, संस्कृत से ज्यादा प्राचीन हैं, ऋग्वेद की तुलना में बौद्ध ग्रन्थ ज्यादा पुराने हैं, हड़प्पा सभ्यता की स्थापना बौद्ध धर्मावलम्बियों ने की थी तथा उज्जैन के महाकाल का शिवलिंग दरअसल शिवलिंग नहीं, बल्कि एक प्राचीन बौद्ध चैत्य है।

थोड़ी देर बाद प्रो० विभीषण ने बड़े ही अपनत्व भाव से उससे उसके पीएचडी की टॉपिक के बारे में पूछा। फिर, यह जानने के बाद कि वह प्राचीन भारत के किसी अलिखित हिस्से का अध्ययन करना चाहती हैं, उनके चेहरे पर खुशी साफ-साफ झलकने लगी।

*

उनके इस हाव-भाव से ब्यूटी के मन में उम्मीद की किरण जगी।

“तुम्हारा नाम क्या है?” थोड़ी देर इधर-उधर की बातें करने के बाद प्रो० विभीषण ने उससे प्रश्न किया।

“ब्यूटी नगनिका”, ब्यूटी में बेहद शालीनता से उत्तर दिया।

‘ब्यूटी नगनिका’ या ‘नगनिका ब्यूटी?’” प्रो० विभीषण ने ‘नगनिका’ शब्द पर जोर देते हुए पुनः प्रश्न किया।

“लेकिन सर, इससे मेरे रिसर्च का क्या लेना देना?” ब्यूटी ने उलझन भरे स्वर में पूछा।

“क्या तुम नागवंशी हो?” प्रो० विभीषण ने उसके प्रश्न को नजरंदाज करते हुए अगला प्रश्न किया।

“शायद मेरी मम्मी है!” ब्यूटी ने उत्तर दिया।

“और तुम्हारे पिता?” प्रो० विभीषण उसकी पूरी जन्मकुंडली जानने पर तुले हुए थे।

“मैंने उन्हें नहीं देखा। मम्मी बताती है कि जब मैं बहुत छोटी थी, तभी उनके साथ कोई दुर्घटना हो गई थी।”, ब्यूटी ने उत्तर दिया।

“क्या तुम्हारे माता-पिता आन्ध्र-भृत्य ब्राह्मण हैं?” प्रोफेसर ने अपनी आँखें सिकोड़ते हुए अगला प्रश्न किया।

“सर, ये सब मुझे नहीं पता।”, ब्यूटी ने उलझे हुए स्वर में उत्तर दिया।

प्रो० विभीषण ने उसके उत्तर पर ध्यान दिए बगैर अगला प्रश्न किया- “यह ‘नगनिका’ टायटल तुम्हें कैसे मिला?”

“ये मेरा टायटल नहीं है, बल्कि निक नेम है। मम्मी ने प्यार से रखा था, शायद!”- ब्यूटी ने उत्तर दिया।

उसका उत्तर सुनकर थोड़ी देर तक यँ ही सोच की मुद्रा में बैठे रहने के बाद डॉ० विभीषण ने आश्चर्य भाव से अपना सर हिलाया और आलमारी से एक पुस्तक निकाल उसे थमाते हुए बोले-“दो-तीन दिनों तक इसका अध्ययन करने के बाद मुझसे आकर मिलो।”

ब्यूटी ने पुस्तक का शीर्षक देखा- “बौद्ध भिक्खुओं का हत्यारा वैदिक सम्राट ‘पुष्यमित्र शुंग’।”

ब्यूटी ने उलझन भरे स्वर में सवाल किया- “क्या मुझे इसी विषय पर रिसर्च करना है?”

प्रो० विभीषण ने उत्तर दिया- “नहीं! बल्कि, तुम इस अवधारणा को सिद्ध करोगी कि बौद्ध धर्म मानने वालों ने सिन्धु घाटी की सभ्यता विकसित की थी किन्तु, बर्बर वैदिकों द्वारा सिन्धु घाटी की उस महान बौद्ध नागरीय सभ्यता को खत्म कर दिया गया।” ब्यूटी ने प्रतिवाद किया-“लेकिन सर, बौद्ध धर्म तो मात्र ढाई हजार वर्ष पुराना है, जबकि सिन्धु घाटी की सभ्यता तो पांच हजार वर्ष पुरानी सभ्यता है।”

प्रो० विभीषण उसे समझाने हुए बोले-“बुद्ध कोई नाम नहीं है। यह एक पद है। भारत में दस हजार साल पहले भी कई बुद्ध हुए थे। सच तो यह है कि हड़प्पा से मिली पांच हजार साल पुरानी योगी की मूर्ति पशुपति शिव की नहीं बल्कि ध्यान मुद्रा में बैठे किसी बुद्ध की है।”

“सर, हमने तो ऐसा कभी नहीं पढ़ा।”, ब्यूटी के प्रतिवाद किया।

“इसीलिए तो भारत के प्राचीन इतिहास के अध्ययन की फिर से जरूरत है। इस देश में जो है, सब बौद्ध धर्म का है, जिसे वैदिक-सनातन धर्म वालों ने बलपूर्वक हड़प लिया है।”, प्रो० विभीषण ने क्रोधित स्वर में कहा।

“लेकिन सर, ये रिसर्च का टॉपिक कम, उसका निष्कर्ष ज्यादा लग रहा है।”, ब्यूटी ने आपत्ति जताई।

प्रतिक्रिया में प्रो० विभीषण चेतावनी भरे स्वर में बोले- “अगर मेरे मार्गदर्शन में रिसर्च करना है तो तुम्हें इसी विषय पर रिसर्च करना होगा, वरना कोई और रिसर्च गाइड खोज लो।”

ब्यूटी ने हताशा भरी नजरों से मैत्रेयी की तरफ देखा जो अबतक चुप-चाप उनकी बातचीत सुन रही थी। मैत्रेयी ने हाथ हिला कर उसे धीरज धरने का इशारा किया।

थोड़ी देर बाद जब वह विभीषण के घर से निकली तो बेहद परेशान थी। उसे पहली मुलाकात में प्रो० विभीषण पूर्वाग्रहों से ग्रस्त एक ऐसा प्रोफेसर लगा, जो अपने रिसर्च के निष्कर्ष, उसे शुरू करने से पहले से ही तय कर लेता है, और फिर उसे येन-केन-प्रकारेण सिद्ध करने के लिए ऐतिहासिक साक्ष्यों के साथ तोड़-मरोड़ करता है। अगले ही पल में ब्यूटी ने निश्चय कर लिया कि पूर्वाग्रहों से ग्रस्त इस प्रोफेसर के मार्गदर्शन में उसे रिसर्च नहीं करना है। उसे अपने लिए किसी नए मार्गदर्शक की तलाश करनी चाहिए, जो भले ही रिसर्च के कार्य में उसकी मदद न करे, किन्तु उसके अनुसन्धान में गैर-जरूरी हस्तक्षेप भी ना करे।

हफ्ते भर की भाग-दौड़ के बाद ब्यूटी की मुलाकात कोल्हानम् के एक अंगीभूत महाविद्यालय में कार्यरत एक ऐसे व्याख्याता से हुई जिसे उसके रिसर्च से कोई मतलब न था बल्कि, उसे अपनी पदोन्नति के लिए पीएचडी कराने का सिर्फ प्रमाणपत्र प्राप्त करना था।

पहली मुलाकात में ही प्रो० यादव ने ठेठ भाषा में उसे स्पष्ट रूप से कहा- “रिसर्च में क्या करना है, क्या नहीं करना है, यह देखना तुम्हारा काम है। मेरा काम होगा तुम्हारी रुकी फाइल को आगे बढ़वाना। इसके अलावा तुम्हें डीआरसी, प्री-वाइवा, फाइनल-वाइवा आदि का खर्च और बाहर से आये परीक्षक का एयर फेयर तथा उसके अच्छे होटल में ठहरने आदि का इंतजाम करना पड़ेगा। इसमें लगभग एक लाख रुपए खर्च होंगे। अगर तुम यह सब कर लोगी तो तुम्हारी पीएचडी पक्की।”

प्रो० यादव की बातें सुनकर एकबारगी उसे महसूस हुआ जैसे वह कोल्हानम में शोध के नाम पर अपना कीमती समय बर्बाद कर रही हो। उसकी इच्छा हुई कि वह कोल्हानम का मोह छोड़ कर किसी अन्य शोध संस्थान की राह पकड़े। छोटानागपुर के इस जंगल-पहाड़ में उसे कुछ भी नहीं मिलने वाला। लेकिन, फिर न जाने क्या सोचकर ब्यूटी ने प्रो० यादव को अपनी सहमति दे दी और वापस कोल्हानम लौट आयी।

इधर ब्यूटी द्वारा प्रो० यादव को अनुसंधान गाइड बनाने की खबर प्रो० विभीषण शाक्य को हो चुकी थी। उन्हें इसकी बिलकुल उम्मीद नहीं थी कि ब्यूटी जैसी नई रिसर्च स्कॉलर उनकी चेतावनी के बाद भी इतना बड़ा कदम उठाएगी। लेकिन, अब वह कुछ नहीं कर सकते थे।

दरअसल, ब्यूटी के रिसर्च गाइड, प्रो० यादव, राज्य के सत्तारूढ़ दल से जुड़े हुए थे और उनकी पहुँच राजभवन के गलियारों तक थी। इसलिए, प्रो० विभीषण ने उनसे उलझने के बजाय चुप रहना ही बेहतर समझा। लेकिन, उन्होंने ब्यूटी को समझाने का प्रयास नहीं छोड़ा।

3

सावन की तीसरी सोमवारी थी। ब्यूटी निकट के शिवालय से पूजा-अर्चना कर वापस लौट रही थी। अचानक उसे सामने से प्रो० विभीषण की कार आती दिखी। ब्यूटी झट से किनारे हो गई।

लेकिन, प्रो० विभीषण ने उसके करीब आकर अपनी कार रोकी और कार की खिड़की से अपना सिर बाहर निकालकर व्यंगात्मक लहजे से बोले- “नागवंशी होकर हिन्दू-देवी देवताओं की पूजा करती हो। तुम्हारे पूर्वज बौद्ध थे। अगर रिसर्च करना है तो अपने पूर्वजों के गौरवमय अतीत पर करो। अपने उन बदनसीब पूर्वजों पर करो, जिन्हें ईसा-पूर्व तीन हजार साल पहले सनातनियों ने मार डाला था।”

ब्यूटी ने नजर उठा कर प्रो० विभीषण की तरफ देखा और बगैर कुछ कहे आगे बढ़ गयी।

उसे इस तरफ आगे बढ़ते देख प्रो० विभीषण ने अपनी कार सड़क के एक किनारे खड़ी कर दी और उतर कर उसके बराबर में चलते हुए बोले- “मैं सच कह रहा हूँ। बुद्ध की महान आत्मा तुमसे यह महान कार्य कराना चाहती है। यह शोध एक पवित्र खोज होगी। बुद्ध का आशीर्वाद मिलेगा। सिर्फ बुद्ध का मार्ग ही सत्य है। इसके अलावा, बाकि सबकुछ सनातनियों का फैलाया हुआ भ्रमजाल है। तुम आज ही विभाग में आकर मुझसे मिलो। मेरा विश्वास करो, मैं हफ्ते भर में तुम्हारा रिसर्च प्रस्ताव तैयार कर रिसर्च कमिटी से पास करा दूँगा।”

ब्यूटी ने उन्हें टालने की गरज से ‘हाँ’ की मुद्रा में सर हिलाया और सड़क पर आगे बढ़ गयी। उसने मन ही मन सोचा- ‘बुद्ध कब से ‘आत्मवादी’ हो गए? यह प्रोफेसर तो उसे बिल्कुल मुर्ख ही समझ रहा है।’ लेकिन, प्रो० विभीषण के व्यवहार ने उसे संशय में डाल दिया था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि आखिर वे उसका रिसर्च गाइड बनने के लिए इतने व्यग्र क्यों हैं? वे अपनी बेटी से इस विषय पर रिसर्च क्यों नहीं कराते?”

अंततः उसने दृढ़ निश्चय कर लिया कि वह किसी भी कीमत पर प्रो० विभीषण की बातों में नहीं आएगी।

दोपहर के वक्त जैसे ही युनिवर्सिटी से वापस होस्टल पहुँची, मम्मी का फोन आ गया। “बेटी, आज नागपंचमी है। कहीं नागदेवता दिखें तो उनका आशीर्वाद जरूर ले लेना।”, मम्मी ने हिदायत दी।

“अगर कोल्हानम की सड़कों पर चहलकदमी करते हुए नागदेव मिल गये तो उनके चरण-स्पर्श कर तुम्हें खबर जरूर करूँगी।”, ब्यूटी ने मजाकिये लहजे में उन्हें आश्वासित किया, और फोन काट दिया।

*

दोपहर की हलकी नींद लेने के बाद, शाम के वक्त जब वह बाजार जाने के लिए होस्टल से बाहर निकली तो देखा, कोल्हानम् के प्रांगण में स्वतंत्रता दिवस की तैयारियाँ चल रही थीं, तथा आयोजन स्थल के पास ही खड़ी मैत्रेयी तैयारियों का जायजा ले रही थी।

ब्यूटी ने हाथ के इशारे से उसे बाजार चलने के लिए कहा। मैत्रेयी तेज कदमों से चलती हुई उसके पास आ गई। फिर, दोनों पैदल ही बाजार की तरफ निकल पड़ीं।

लगभग दो घन्टे तक खरीददारी करने के बाद दोनों वापस लौटने को तत्पर हुईं। तबतक सूर्य की किरणें लाल हो चलीं थीं और पक्षी अपने बसेरों की तरफ लौटने लगे थे।

वे बाजार से निकलकर अभी दस कदम ही चली होंगी कि पीछे से किसी ने आवाज दी- “दीदी, आज नागपंचमी है। क्या आपलोग नागराज के दर्शन करना चाहेंगी?”

दोनों ने चौक कर पीछे देखा- उनके ठीक पीछे, माथे पर काली पगड़ी बांधे, लम्बे कद का एक काला-कलूटा आदमी खड़ा था।

ब्यूटी को मम्मी की बात याद आ गई। उसने अनमने भाव से कहा- “हाँ भई, नाग देवता के दर्शन तो जरूर करा दो। लेकिन, जरा दूर से ही कराना।”

सँपेरे ने अपने झोले से एक पिटारा निकाला और एक झटके से उसके ऊपर से ढक्कन हटा दिया। फनफनाता हुआ नाग भक्क से ब्यूटी के सामने एक फीट तक तन कर खड़ा हो गया।

भयभीत ब्यूटी के हलक से चीख निकल गयी।

सँपेरे ने हँसते हुए ब्यूटी की तरफ देखा और बोला- “अम्मा, नागराज से आप क्यों डरती हैं? ये नाग तो आपके वंश के रक्षक हैं। आप नागवंशी हो न इसलिए!”

ब्यूटी चौकी- “तुम्हे कैसे पता कि मैं नागवंशी हूँ?”

“अम्मा, अपनी आँखें देखो-हरी आँखें!” सँपेरे ने उसे फिर से चौकाया ।

भय और असमंजस के मिश्रित भाव से अभिभूत ब्यूटी ने अपने बैग से पचास का एक नोट निकला और सँपेरे के सामने फेंकती हुई, तेज कदमों से कोल्हानम की तरफ भागी ।

उसके पीछे-पीछे मैत्रेयी भी भागी ।

बदहवास सी वह जैसे ही कोल्हानम गेट के अंदर पहुँची, उसकी साँस में साँस आई । लेकिन, उसका कलेजा ऊपर तक उठ कर, अब भी हलक में फँसा था ।

तभी पीछे से मैत्रेयी लगभग भागती हुई आई और बोली - “अरे क्या हुआ? तुम वहाँ से इस तरह घबरा कर क्यों भागी?”

वह अभी उत्तर देने के लिए खुद को तैयार कर ही रही थी कि पीछे से किसी ने भारी स्वर में पूछा- “अम्मा, क्या नागराज का प्रसाद नहीं लोगी?”

उसने धड़कते दिल से पीछे पलट कर देखा- “उसके सामने वही काला भुजंग सरीखा सँपेरा, अपने हाथों में काले कपड़े से बंधी एक छोटी सी पोटली लिए खड़ा था ।

ब्यूटी ने न जाने किस भावना से अभिभूत होकर उसके हाथों से वह पोटली ले ली ।

सँपेरा कुछ बोले बगैर लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ सड़क के उस पार कोहरे में कहीं गुम हो गया ।

थोड़ी देर बाद जब वह थोड़ी संयत हुई तो मैत्रेयी ने उसे सुझाव दिया- “क्या पता, इसमें बेहोशी या नशे वाली कोई चीज हो । इसलिए हमें इसे खोले बिना ही फेंक देना चाहिए ।”

किन्तु, अपनी ही सलाह को नजरंदाज करते हुए मैत्रेयी ने वह छोटी सी पोटली ब्यूटी के हाथ से अपने हाथ में ले ली, और उसे खोल दिया। पोटली के अन्दर जो कुछ भी था, वह बेहद चौकाने वाला था- प्राचीन काल का एक सिक्का, जिसके एक तरफ गौतम बुद्ध नागों के बीच ध्यान की मुद्रा में बैठे थे, और दूसरी तरफ 'धर्म-चक्र' बना हुआ था।

ब्यूटी को लगा जैसे वह कोई सपना देख रही हो। उसने काँपते स्वर में मैत्रेयी से पूछा- “ये क्या है? इसका क्या मतलब है?”

मैत्रेयी भी घोर असमंजस के भाव के साथ बोली- “इसके बारे में तो शायद पापा ही कुछ बता सकते हैं।”

ब्यूटी के सहमति की मुद्रा में सर हिलाया और सहमी चाल से अपने होस्टल की तरफ बढ़ गई।

आज की रात उसके लिए हाहाकारी थी। वह रात भर नागों और साँपों के सपनें देखती रही, और अर्ध-निद्रा में न जाने क्या-क्या बड़बड़ाती रही।

अगले दिन सुबह जब मैत्रेयी उसे लेने के लिए होस्टल आई तो उसका सारा शरीर दर्द से टूट रहा था। वह जैसे-तैसे तैयार हुई और मैत्रेयी के साथ युनिवर्सिटी की तरफ निकल गयी।

आधे घंटे बाद दोनों प्रो० विभीषण के साथ लाइब्रेरी में बैठी थीं। प्रो० विभीषण आश्चर्य के साथ सिक्के को उलट-पलट कर देख रहे थे। उन्होंने सिक्के को धीरे से जमीन पर गिराया- फिर आवाज सुन कर बोले- “लोहे का है। कमसे कम पांच हजार साल पुराना! फिर भी इसमें जंग नहीं लगी है। पांच हजार साल पहले सारी दुनिया में सिर्फ इसी इलाके की असुर जनजाति के लोगों को ही लोहा ढालने का ज्ञान था। यानि, इस सिक्के को असुरों ने पांच हजार साल पहले ढाला होगा। तकनीक इतनी पुराना है कि इसमें आज तक जंग नहीं लगी है।”

“और, ये चित्र किसके हैं?” ब्यूटी ने सवाल किया।

ये कोई और नहीं बल्कि बुद्ध हैं। मेरी समझ के अनुसार यह सिक्का हड़प्पा काल का है। छोटानागपुर के पठार से जाकर हड़प्पा में बसे असुरों ने इसे सिन्धु नदी के तट पर ढाला होगा।”

ब्यूटी ध्यान से उनकी बातें सुन रही थी।

एक मिनट रुकने के बाद प्रो० विभीषण ब्यूटी की तरफ मुखातिब होकर बोले- “भगवान् बुद्ध के संकेतों को समझो। यह सिक्का इस बात का गवाह है कि बुद्ध ने तुम्हें किसी महान कार्य के लिए चुना है। तुम्हें यह महान कार्य करना ही होगा अन्यथा तुम्हें बुद्ध का श्राप लगेगा।”

ब्यूटी ने अपनी बढ़ती धड़कनों को सँभालते हुए कहा- “सर, 21 वीं सदी में आप ये कैसी बातें कर रहे हैं? मैं बुद्ध के श्राप वाली बात नहीं मानती। लेकिन, मेरी दिलचस्पी इस सिक्के में जरूर है। क्योंकि, मेरी जानकारी के अनुसार लोहे का इतना पुराना सिक्का भारत में पहले कभी देखा नहीं गया।”

लेकिन, पांच हजार साल पुराना ये लोहे का सिक्का उस सँपेरे के पास कहाँ से आया? और फिर, उसने इसे मुझे ही क्यों दिया?”, ब्यूटी ने प्रोफेसर से सवाल किया।

उत्तर में प्रो० विभीषण ने अनभिज्ञता के भाव के साथ अपना सिर हिला दिया।

अगले दिन जब ब्यूटी सो कर उठी तो उसका सिर भारी था। मोबाइल फोन की तरफ देखा तो सुबह के साढ़े नौ बज रहे थे। उसे तो दस बजे तक लाइब्रेरी पहुँचना था इसलिए, वह फटाफट तैयार होकर लाइब्रेरी की तरफ भागी।

वह इस पठार के उन प्राचीन लौह निर्माताओं के बारे में जानना चाहती थी, जिन्होंने आज से पांच हजार साल पहले ऐसे लोहे के सिक्के ढाले, जिनमें

आज तक जंग नहीं लगी थी। इसके अलावा नागों को लेकर भी उसकी जिज्ञासाएँ अनंत थीं।

उसे बहुत ही मुश्किल से कोल्हानम् की लाइब्रेरी में एस० सी० राय नामक किसी पुराने इतिहासकार की सन 1915 की लिखी एक पुरानी पुस्तक मिली, जिसमें उसने आदिवासियों की एक लोकगाथा 'सोसोबोंगा' का जिक्र किया था। इस लोककथा में छोटानागपुर पठार पर हजारों साल पहले निवास करने वाली असुर जनजाति का जिक्र था। इस पुस्तक के अनुसार, ईसा के जन्म से भी कई हजार साल पहले से ये असुर छोटानागपुर के पठारी क्षेत्र में निवास करते थे। वे हजारों सालों तक लोहा गलाने की तकनीक अपने पास रखने में सफल रहे थे।

पुस्तक के अनुसार, असुर जनजाति के लोग अद्भुत वीर थे, तथा उनकी कई प्रजातियाँ आज के राजस्थान, पाकिस्तान, मिस्र और बेबीलोन तक फैली थी। ईसा-पूर्व 5000 साल पहले असुरों का एक महान साम्राज्य था, जो हड़प्पा, मोहनजोदड़ो से लेकर मिस्र और बेबीलोन तक को अपने प्रभाव में रखता था।

एक पुस्तक में नेतरहाट की पहाड़ियों में बसे टांगीनाथ नामक एक स्थान का जिक्र था। इस पुस्तक के अनुसार, टांगीनाथ धाम के आसपास की पहाड़ियों के बीच बसे गाँवों में असुरों के वंशज आज भी निवास करते हैं।

शाम को जब वह लाइब्रेरी से वापस होस्टल लौटी तो उसे लग रहा था कि भारत के प्राचीन इतिहास के एक अनछुए हिस्से के अध्ययन के लिए उसने अपना पहला कदम बढ़ा लिया है।

उसका पहला लक्ष्य टांगीनाथ धाम था।

*

अगले दिन ब्यूटी ने निशांत से पूछा कि क्या वह उसके साथ टांगीनाथ धाम जायेगा। बेचारे निशांत ने तो टांगीनाथ धाम का नाम भी नहीं सुना था। उसने अचकचाते हुए पूछा- “ये कहाँ है? टिम्बकटू में क्या”?

“गुमला जिले में है। यहाँ से 6 घंटे का रास्ता है। दुर्गम पहाड़ी इलाका है, इसलिये सुबह-सुबह मोटरसायकिल से ही निकल पड़ेंगे”, ब्यूटी ने हँसते हुए उत्तर दिया।”

“कल नहीं, बल्कि परसों चलेंगे! रविवार को दारोगा के पोस्ट पर भर्ती के लिए राँची में मेरा एक फिजिकल टेस्ट होना है। अगले दिन यानि सोमवार को हम सुबह-सुबह राँची से टांगीनाथ धाम के लिए निकलेंगे।” निशांत ने अपना निर्णय सुनाया।

शनिवार की दोपहर दोनों कोल्हानम से राँची के लिए रवाना हो गए। निशांत अगले दिन सुबह-सुबह फिजिकल टेस्ट देने के लिए राँची के मोरहाबादी मैदान चला गया।

निशांत के जाने के दो घंटे बाद ब्यूटी होटल के कमरे से बाहर निकली। होटल के नीचे कई रिक्शे खड़े थे। उसने एक रिक्शे पर बैठने के उपरांत रिक्शेवाले से राँची युनिवर्सिटी के जनजातीय विभाग चलने के लिए कहा। होटल से राँची युनिवर्सिटी के जनजातीय विभाग का रास्ता महज पंद्रह मिनट का था।

लगभग 11 बजे के आसपास जब वह राँची युनिवर्सिटी के जनजातीय विभाग के दरवाजे पर पहुँची तो देखा, अन्दर एक वृद्ध सज्जन, लकड़ी की एक बेहद खस्ताहाल कुर्सी पर बैठे कुछ लिख रहे थे।

ब्यूटी ने उनका अविवादन कर अपने आने का मकसद बताया। वृद्ध सज्जन जो संभवत कोई रिटायर्ड प्रोफेसर थे, हँसते हुए बोले- “लम्बे समय के बाद यहाँ कोई शोधार्थी आया है। आजकल, सारे शोधार्थी जनजातियों से सम्बंधित सारी सूचनायें इन्टरनेट के मध्यम से ही खोज लेते हैं।”

ब्यूटी ने उनकी बातों से सहमति जताई फिर लोहे का सिक्का उनके सामने रख कर बोली- “सर, क्या आप मुझे इसके बारे में कुछ बता सकते हैं? किसी ने मुझे बताया है कि यह 5000 साल पुराना सिक्का हड़प्पा काल का है, तथा इसे छोटानागपुर पठार के निवासी असुरों ने हड़प्पा में जाकर ढाला था।”

बुजुर्ग ने सिक्के को उलट-पलट कर देखा, फिर हँसते हुए बोले-“किसी ने तुम्हे बेवकूफ बनाया है। ये सिक्का नकली है।”

“आप ऐसा कैसे कह सकते हैं?” ब्यूटी ने चौकते हुए पूछा।

बुजुर्ग भावहीन मुद्रा में बोले- “भारत का लौह युग वैदिक काल, मतलब ईसा के जन्म के 1,500-1600 साल पहले आया। हड़प्पा सभ्यता वाले तो लोहे के बारे में जानते भी नहीं थे। वे कांस्य का इस्तेमाल करते थे। अगर छोटानागपुर के असुरों ने हड़प्पा में ये सिक्के बनाये होते तो हड़प्पा वालों को लोहे का ज्ञान जरूर होता।”

वे आगे बोले- “देखो बेटी, असुर, छोटानागपुर और राँची के पठारों के राजा थे। खूंटी जिले के करकरी तथा ताजना नदियों के किनारों पर अवस्थित हंसा, टिटोला, कुंजला, और सरिदकेल में उनकी हजारों कब्रें आज भी मिलेंगी। वे इतने शूरवीर थे कि उनके पूर्वजों ने देवताओं को भी चुनौती दी थी। लेकिन, वे किसी दूसरी दुनिया से आये लोग नहीं थे। वे यहीं के थे। हमारे बीच के ही थे।”

ब्यूटी ने हैरत के साथ पूछा- “फिर इतिहास की किताबों में हम उनके बारे में कुछ भी क्यों नहीं पढ़ते।”

“अपने खून-पसीने से इतिहास बनाता कोई और हैं, और उसे लिखता कोई और है। दरबारी कलमकारों के एक खम से हजारों सालों के इतिहास का नामों-निशान मिट जाता है”, बुजुर्ग ने क्षोभ भरे शब्दों में उत्तर दिया, फिर मौन हो गए।

ब्यूटी ने घड़ी की तरफ एक नजर डाली। दोपहर के तीन बजने वाले थे। कुर्सी से उठते हुए उसने कहा- “सर, अब मुझे इजाजत दीजिये। अगर मौका मिला तो मैं कल भी आपको परेशान करूँगी।”

इसके बाद जैसे ही वह उठने के लिए तत्पर हुई, बुजुर्ग ने तेज आवाज में कहा- “अरे, अपना नकली सिक्का तो वापस लेती जाओ।”

ब्यूटी ने हाथ बढ़ा कर उनके हाथ से सिक्का लेकर बैग में रख लिया और उन्हें प्रणाम कर उस खंडहरनुमा कमरे से बाहर निकल गई।

ब्यूटी ने संतुष्टि से अपना सिर हिलाते हुए सोचा- “अब उसके पास एक आगे बढ़ने के लिए एक नया सूत्र है। राँची के पास खूँटी जिले में करकरी और ताजना नदी के पूर्वी किनारों पर असुरों की हजारों कब्रें।” उसने तय किया, टांगीनाथ धाम से लौट कर वह इस जगह को एकबार जरूर खंगालेगी।

अगली सुबह ब्यूटी ने तय किया कि टांगीनाथ धाम के लिए प्रस्थान करने से पहले वह उक्त बुजुर्ग से पुनः मिलेगी। शायद टांगीनाथ धाम के बारे में किसी नयी जानकारी का पता चले।

थोड़ी देर बाद जब ब्यूटी होटल से बाहर निकली तो देखा, गेट पर निशांत मोटरसायकिल लेकर पहले से ही खड़ा था। ब्यूटी ने उससे राँची यूनिवर्सिटी होते हुए टांगीनाथ रवाना होने का अनुरोध किया।

पांच मिनट बाद जब वे राँची यूनिवर्सिटी के जनजातीय विभाग के दरवाजे पर पहुँचे तो देखा, डिपार्टमेंट के गेट पर ताला लटक रहा है। थोड़ी देर इन्तजार करने के बाद ब्यूटी ने पास से गुजर रहे एक कर्मचारी को टोका- “सर, ये विभाग कब खुलेगा?”

कर्मचारी ने जो उत्तर दिया वह ब्यूटी के लिए बम के फटने जैसा था- “ये डिपार्टमेंट तो चार साल पहले ही नयी बिल्डिंग में शिफ्ट कर चुका है।”

“हे भगवान, कल जो यहाँ ऑफिस खोल कर बैठा था वह कौन था?”, ब्यूटी के मुख से सिसकारी निकल गयी।

निशांत भी चौक गया- “क्या तुम इस बंद कमरे में कल किसी से मिली थी?”

“हाँ, शायद कोई बुजुर्ग प्रोफेसर थे”, ब्यूटी बेहद घबराए स्वर में बोली।

कर्मचारी जो अबतक उनकी बातें चुपचाप सुन रहा था, बोला- “परेशान होने की कोई बात नहीं है। राय सर होंगे। वह अक्सर इस ऑफिस में आकर बैठते हैं। उनको थोड़ी मानसिक समस्या है। सुना हैं, बरसों पहले किसी ने उनके सिर में गोली मार दी थी।”

उसकी बातें सुनकर ब्यूटी की जान में जान आई। उसने बैग में रखे सिक्के को टटोला। सिक्का अपनी जगह मौजूद था।

4

राँचीसे लगभग 150 किलोमीटर प्राचीन टांगीनाथ धाम मंदिर एक पहाड़ी की चोटी पर स्थित था। जंगलों और पहाड़ियों से गुजरता टांगीनाथ धाम का रास्ता अद्भुत रोमांच पैदा कर रहा था।

सावन का महीना चल रहा था। टांगीनाथ मंदिर का समस्त मार्ग शिव भक्तों के अटा पड़ा था। उबड़-खाबड़ रास्ते से गुजरते, भीड़ के बीच रास्ता बनाते हुए वे किसी तरह टांगीनाथ के मुख्य मंदिर के नजदीक पहुँचे। मंदिर के प्रांगण में हजारों शिव भक्त ‘हर-हर महादेव’ के नारे लगा रहे थे। मैदान के बीचो-बीच लोहे का एक बेहद प्राचीन फरसा गड़ा हुआ था। हर भक्त फरसे की पूजा कर नारियल की बलि दे रहा था।

देर शाम तक पूजा और नारियल की बलि का यह कार्यक्रम चलता रहा। इस दौरान ब्यूटी और निशांत पूजा स्थल के आसपास की जगहों का सर्वेक्षण करते रहे। मंदिर के आसपास सैकड़ों शिवलिंग बिखरे पड़े थे।

शाम के सात बजे उन्हें बड़ी मुश्किल से मुख्य पुजारी से मिलने का मौका मिला। मंदिर का पुजारी लगभग 70 साल का आदिवासी बुजुर्ग था। उसने अपना नाम बताया-‘बेंगा पाहन।’

मौका देखकर ब्यूटी ने उसके सामने लोहे का सिक्का रख दिया और पूछा-“बाबा, क्या आप हमें इसके बारे में कुछ बता सकते हैं?”

पुजारी ने सिक्के को उलट-पुलट कर देखा फिर आश्चर्य के साथ पूछने लगा-“ब्रह्मा जी का ये सिक्का आपको कहाँ मिला? ऐसे सिक्के तो सिर्फ चार हैं। दो सिक्के हमारे परिवार के पास थे और दो, भारत सरकार के पास। एक सिक्के को आज से सत्तर-अस्सी साल पहले मेरे पिता ने किसी खोजी को दे दिया था। दूसरा, आज भी हमारे परिवार के पास है, जो इस मंदिर के गर्भगृह के दरवाजे पर जड़ा है।”

“लेकिन, बाबा ये सिक्का तो बुद्ध का है?” ब्यूटी ने पुजारी की बात को विनम्रता से काटा।

“नहीं बेटी, आप इसे गौर से देखिये। ये ब्रह्माजी का सिक्का है।”, पुजारी विश्वास के साथ बोला।

“निशांत, देखो तो क्या ये सिक्का ब्रह्माजी का है?” ब्यूटी ने पुजारी के हाथ से सिक्का लेकर निशांत के हाथ में दे दिया।

निशांत ने लगभग काले पड़ चुके सिक्के को गौर से देखा और निर्णायक स्वर में बोला- “हाँ, इसपर तीन सरोँ वाले ब्रह्मा की ही तस्वीर है।”

“क्या कह रहे हो?” ब्यूटी ने उसके हाथ से सिक्का झपटते हुए बोली।

लेकिन, जब उसने सिक्के को अपने हाथों में लिया और देखा तो लगा कि उसका सिर फट जायेगा- ये वह सिक्का नहीं था, जिसे सँपेरे ने उसे नागपंचमी के दिन दिया था। इस सिक्के में नागों के सिंहासन पर बुद्ध की जगह तीन सरोँ वाले कोई देवता बैठे थे।

पुजारी ने उससे प्रश्न किया- “बेटी, ये सिक्का तुम्हारे पास कैसे आया?” फिर कुछ क्षण चुप रहने के बाद वह बोला- “ये सिक्का हमारे असुर समुदाय की अमानत है। मैं इसे तुमसे मांग तो नहीं रहा हूँ, लेकिन, जब भी तुम्हें लगे कि तुम्हें इसकी जरूरत नहीं रही, तुम इसे हमें वापस कर देना। क्योंकि यह सिक्का इस क्षेत्र के असुर इतिहास की एक अमूल्य धरोहर है।”

उसकी बात सुनकर ब्यूटी ने बेहद विनम्रता के साथ उसे आश्चस्त करने वाली मुद्रा में अपना सिर हिलाया।

पुजारी से विदा लेकर जब वे टांगीनाथ पहाड़ी से नीचे उतरे तो रात के साढ़े आठ बज रहे थे। हिम्मत करके वे रात के वक्त ही कोल्हानम् लौट पड़े।

अगले दिन सुबह-सुबह जब ब्यूटी वापस कोल्हानम् पहुँची तो एक नयी समस्या उसका इन्तजार कर रही थी। प्रोफेसर मित्रा ने नोटिस निकाला था कि सभी शोधार्थी अपने-अपने रिसर्च प्रपोजल एक हफ्ते के अन्दर विभाग में जमा कर दें, अन्यथा, उनका नामांकन रद्द कर दिया जाएगा। ब्यूटी की समस्या यह थी कि उसे अबतक अपने रिसर्च के सिर-पैर का कुछ भी पता ही नहीं था।

अगले दिन जब वह युनिवर्सिटी गई तो मैत्रेयी उससे मिलते ही बोली- “पापा तुम्हें दो दिनों से खोज रहे हैं। उन्होंने तुम्हारा रिसर्च प्रपोजल तैयार कर दिया है। तुम्हें उसे सिर्फ डिपार्टमेंट में जमा भर कर देना है।” ब्यूटी ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया। वह उसका हाथ पकड़ कर कैटीन की तरफ बढ़ती हुई बोली- “चल, आज मैं तुझे तिवारी के पकौड़े खिलाती हूँ।”

मैत्रेयी कैटीन के अंदर घुसते हुए धीरे से फुसफुसाती हुई बोली- “लगता है, आज फिर से कैटीन में शोध-गुरुओं की महफिल सजी हुई है।”

“ये शोध-गुरु कौन हैं?” ब्यूटी ने सवाल किया।

“अरे, वे शोधार्थी जो अपनी थीसिस पूरी करने से पहले अपने गाइड के दो तीन रिश्तेदारों की थीसिस लिख चुके होते हैं, तीन-चार बार रिसर्च बोर्ड

की थर्ड-डिग्री झेल चुके होते हैं और कमसे कम दो बार जिनकी थीसिस, रिसर्च बोर्ड के सदस्यों की आपसी पोलिटिक्स में रिजेक्ट हो चुकी होती है।”, मैत्रेयी हँसते हुए बोली।

“और ये थर्ड डिग्री टाचर क्या होता है?” ब्यूटी ने अगला सवाल ठोका।

“एक बार रिसर्च बोर्ड के सामने पड़ोगी तो समझ जाओगी”, मैत्रेयी आँखे झपकाते हुए बोली।

अचानक ब्यूटी के कानों में एक आवाज आई।

“क्या बे अविनाश! सुना है कोल्हानम् के अगले कुलपति के लिए तेरे रिसर्च गाइड प्रो० नरोत्तम का नाम सबसे आगे चल रहा है। न्यूज सही है क्या?”, किसी शोध गुरु ने अपनी भड़ास निकाली।

अविनाश धीमे स्वर में बोला- “भाई, सुना तो हमने भी है!”

“अविनाशजी, आपके गुरुजी के मैथिली विभाग में अभी कितने स्टूडेंट हैं?” मैत्रेयी ने बात को आगे बढ़ाने की गरज से अविनाश को टोका।

अविनाश ने बिना सिर उठाये उत्तर दिया-“चार!”

“सिर्फ चार?” पीछे से किसी ने टोका।

ब्यूटी ने धीरे से निशांत से पूछा- “ये प्रोफेसर नरोत्तम का क्या चक्कर है?”

निशांत बोला- “प्रोफेसर नरोत्तम एक क्षेत्रीय भाषा ‘मैथिली’ के विभाग का हेड हैं। प्रोफेसर साहब मैथिली भाषा के प्रचार-प्रसार की जगह अपने प्रमोशन के जुगाड़ में ज्यादा संलग्न रहते हैं। हर साल इनके विभाग में बमुश्किल आठ-दस विद्यार्थी एडमिशन लेते हैं। उसमे से आधे उसके अपने रिश्तेदार ही होते हैं। हद तो तब हो गई जब पिछले साल उन्होंने अपने सत्तर वर्षीय रिटायर्ड ससुर का नामांकन भी मैथिली विभाग में करा दिया।”

उसने आगे बताया- “फिलहाल, प्रो० नरोत्तम के जिम्में दो-तीन काम हैं- सेमीनार का सर्टिफिकेट बटोरना, किसी चेले से रिसर्च पेपर लिखवाना और फिर मोटी फीस देकर उसे किसी रिसर्च जर्नल में छपवाना। अपनी इसी उपलब्धि के दम पर वह अब कोल्हानम् का कुलपति बनने के सपने देख रहा है।”

इधर अविनाश इस चर्चा से दूर अपने मोबाइल फोन पर कोई विडियो देख रहा था।

“ये अविनाश कौन है?” अविनाश की तरफ देखते हुए ब्यूटी ने सवाल किया।

उत्तर मैत्रेयी ने दिया- “जीनियस लड़का है। दिल्ली में सिविल सर्विसेज की तैयारी कर रहा था। पांच साल पहले पापा इसे कोल्हानम् ले आये और इसका पीएचडी रजिस्ट्रेशन नरोत्तम सर के अंडर में करा दिया। अब प्रो० नरोत्तम के रिश्तेदारों की पीएचडी की थीसिस यही बंदा लिखता है। अबतक अविनाश प्रो० नरोत्तम की बेटी, बेटा और साली की पीएचडी की थीसिस लिख चुका है, लेकिन, इसकी अपनी खुद की पीएचडी लटकी हुई है। प्रो० नरोत्तम कोई न कोई बहाना बना कर बेचारे को फाइनल थीसिस जमा नहीं करने देते।”

ब्यूटी ने सहानुभूति भरी नजरों से अविनाश की तरफ देखा। अविनाश इस चर्चा से दूर, अब भी अपने मोबाइल फोन में खोया हुआ था।

थोड़ी देर बाद जब वह यूनिवर्सिटी से होस्टल पहुँची तो मन थका-थका लग रहा था। वह निढाल होकर बिस्तर पर गिर पड़ी। फिर, अचानक उसका हाथ अपने तकिये के नीचे रखे सिक्के पर चला गया। सिक्के पर हाथ पड़ते ही उसकी थकान एकाएक गायब हो गई। उसने सिक्के को तकिये के नीचे से निकाल कर अपने हाथ में ले लिया और फिर उसे उलट-पलट कर देखने लगी।

ये निश्चित तौर पर वह सिक्का नहीं था, जो उसे उस दिन सँपेरे ने सौपा था। ये कोई और सिक्का था। इस सिक्के के एक तरफ तीन सिरों वाला योगी सिंहासन पर बैठा था, और दूसरी तरफ एक भैसे का मस्तक बना हुआ था।

उसने मस्तिष्क पर जोर डाल कर सँपेरे वाले सिक्के की बनावट फिर से याद किया- उस सिक्के के एक तरफ बुद्ध थे और दूसरी तरफ ‘धर्म-चक्र’ बना हुआ था। उसने मन में सोचा- ‘जरूर, ये काम जनजातीय विभाग वाले राय का होगा। उसी के पास मौका था, इसे बदलने का। और फिर उसने, उस सिक्के को नकली सिक्का भी तो कहा था। लेकिन, राय ने ऐसा क्यों किया? फिर टांगीनाथ धाम के पुजारी बेंगा पाहन ने उसके दिए सिक्के को असली क्यों कहा? क्या राय ने उसे नकली सिक्के के बदले असली सिक्का सौप दिया था? लेकिन, उसने ऐसा क्यों किया?’

ब्यूटी को लगा जैसे उसके सिर के अंदर पटाखे फूट रहे हों। उसने तय किया कि वह एक बार फिर से टांगीनाथ धाम जाएगी। क्या पता सिक्कों का रहस्य कहीं न कहीं टांगीनाथ से ही जुड़ा हुआ हो?

दो दिनों बाद जब वह निशांत के साथ दुबारा टांगीनाथ धाम पहुँची तो देखा, टांगीनाथ मंदिर में अन्य दिनों की तुलना में उस दिन कम भीड़ थी। यह शायद, सावन के पवित्र महीने के खत्म होने का प्रभाव था।

बेंगा पाहन फुर्सत में था। दोनों को अपने पास आता देख वह धीरे से मुस्कुराया। फिर, उसने सामने पड़ी लकड़ी की चौकी की तरफ इशारा करते हुए उन्हें बैठने का इशारा किया।

थोड़ी देर इधर-उधर की बातें करने के उपरान्त ब्यूटी मुख्य मुद्दे पर आ गई, बोली- “बाबा, ये मंदिर तो शिवजी का है। फिर, इस जगह का ‘ब्रह्मा’ और ‘भैसे के मस्तक’ से क्या सम्बन्ध है?”

बेंगा पाहन थोड़ी देर तक चुप रहा, फिर बेहद संयत मुद्रा में बोला- “हजारों साल पहले ‘प्रजापति ब्रह्मा’ हम असुरों के आराध्य देव थे और महिषी अर्थात भैस हमारे राजा महिषासुर के राज्य का प्रतीक चिन्ह थी।

वह एक क्षण के लिए रुका फिर आगे कहना शुरू किया “ब्रह्मा अर्थात प्रकृति के निर्माता!”। लेकिन, हमारे एक महान पूर्वज असुरराज रंभ ने ब्रह्मा का एक नियम तोड़ दिया था, जिसके प्रभाव से कालान्तर में समस्त असुर साम्राज्य नष्ट हो गया।

राजा रंभ को जल में रहने वाली एक भैस से प्रेम हो गया था। उसके और महिषी के योग से असुर वंश में परम प्रतापी सम्राट महिषासुर का जन्म हुआ। टांगीनाथ धाम दरअसल असुर कुल के उसी महान राजा महिषासुर की तपोभूमि है। इसी प्रदेश में उसने ब्रह्मा को प्रसन्न करने के लिए सैकड़ों सालों तक कठोर तप किया था।”

उसने आगे बताया- “इस तपोभूमि पर हमारे पूर्वजों ने हजारों सालों तक राज किया था। इस समस्त क्षेत्र के कण-कण में हजारों साल पुराने शिवलिंग और ब्रह्मा की मूर्तियाँ मिलेंगी।”

“शिवलिंग क्यों?” असुरराज तो ब्रह्मा के उपासक थे।”, ब्यूटी ने जिज्ञासा प्रगट की।

उत्तर में वृद्ध आदिवासी पुजारी ने सामने गड़े हुए फरसे की तरफ इशारा करते हुए कहा- “अपने पिता के आदेश से भगवान परसुराम ने इसी फरसे से अपनी माता का वध कर दिया था। तत्पश्चात, असीम दुःख और वेदना से अभिभूत भगवान् परसुराम इसी स्थान पर वह फरसा धरती में गाड़, शिव की तपस्या में लीन हो गए तथा अपने तपस्या के प्रभाव से समस्त वनभूमि को शिवमय बना दिया।”

“क्या आपको लगता है कि यह फरसा भगवान् परसुराम के काल से लेकर अभी तक इसी तरह गड़ा हुआ है? ब्यूटी ने आश्चर्य से पूछा।

“नहीं, किन्तु ये फरसा दो हजार साल पुराना हो सकता है।”, पुजारी ने उत्तर दिया।

“यह आप कैसे कह सकते हैं?” ब्यूटी ने संदेह जताया।

“तुम अपने पास के सिक्के के लोहे को इस फरसे के लोहे से मिला कर देख लो। दोनों के लोहे एक जैसे ही मिलेंगे”, पुजारी ने उत्तर दिया।

“क्या वाकई?” ब्यूटी ने आश्चर्य से पूछा।

“तुम मिलाओं तो!” पुजारी विश्वास भरे शब्दों में बोला।

ब्यूटी ने झटपट अपने बैग से सिक्का निकाला और उसे धरती पर गड़े परसुराम जी के फरसे से मिलाने लगी। दोनों के लोहे आश्चर्यजनक रूप से एक जैसे ही थे।

ब्यूटी वापस आकर चौकी पर बैठ गयी और बोली- “मान लिया कि इन दोनों का लोहा एक जैसा है, किन्तु इससे यह कैसे सिद्ध होता है कि ये दोनों दो हजार साल पुरानी हैं?”

बेंगा पाहन हँसते हुए बोला- “महरौली का लौह स्तम्भ भी इसी प्रकार के लोहे से बना है।”

उसकी बात सुनकर ब्यूटी के मुँह से सिसकारी निकल गई- “मतलब, जिन्होंने ये फरसा बनाया, ये सिक्का ढाला उन्होंने ही महरौली का लौह स्तम्भ भी बनाया?”

बेंगा पाहन ने सहमति की मुद्रा में अपना सिर हिलाया।

“आप ये कहना चाहते हैं कि इस पठार के असुर जनजाति के लोगों ने ही महरौली का लौह स्तम्भ बनाया था?” निशांत ने आश्चर्य से पूछा।

“हाँ, ये कारनामा करने वाले हमारे पूर्वज ही थे।”, सत्तर साल का असुर पुजारी ‘बेंगा पाहन’ गर्व से मुस्कुराता हुआ बोला।

निशांत ने बैंगा पाहन से सवाल किया- “बाबा, आप इतना सब कुछ कैसे जानते हैं?”

“हर जागरूक असुर जानता है। हमारे लोक-गीतों, लोक-कलाओं और लोक-कथाओं में हमारा इतिहास दर्ज है। हर असुर स्वयं में जीवित इतिहास का हिस्सा है”, पुजारी ने उत्तर दिया।

ब्यूटी ने सहमति की मुद्रा में सिर हिलाया।

क्या यह सच है कि आपलोग अपने पूर्वज महिषासुर की पूजा करते हैं।”, निशांत ने सवाल किया।

हाँ, आज भी हम असुर जनजाति के लोग अपने पूर्वज महिषासुर के पिंड की पूजा करते हैं। लेकिन, हम महिषासुर की मूर्ति नहीं बनाते। बल्कि उनके पिंड की पूजा करते हैं।”, बैंगा पाहन ने उत्तर दिया।

“पिंड क्यों?” निशांत ने काफी देर बाद सवाल किया।

“अपने मृत पूर्वजों को पिंड देने का रिवाज तो सनातन समाज में काफी पुराना है। देश के कई हिस्सों में आज भी देवी की पूजा पिण्डी रूप में की जाती है। यह हमारी सनातन पूजा परम्परा का अभिन्न अंग है। बैंगा पाहन ने उत्तर दिया

“मतलब यह कि असुर भी देवी-देवताओं की पूजा करते हैं?” निशांत ने सवाल किया।

“हाँ, हम असुर दीपावली के दिन लक्ष्मी और गणेश सहित अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियों की पूजा करते हैं।”, बैंगा पाहन ने स्पष्ट किया।

फिर वह बोला- “कैमूर की पहाड़ियों में असुरों द्वारा विन्ध्य के पत्थरों से निर्मित देवी का एक बहुत ही प्राचीन मंदिर है। इसका नाम है मुंडेश्वरी मंदिर। हजारों साल पुराना यह मंदिर, असुरों की आराध्या देवी ‘आदिशक्ति’ का है।”

“लेकिन बाबा, इसका क्या प्रमाण है कि यह मंदिर असुरों द्वारा निर्मित है? निशांत पूछा।

“क्या तुमने कभी आदिशक्ति की प्रतिमा को शेर की जगह महिषी पर आरूढ़ देखा है? कैमूर का यही मंदिर, प्राचीन असुर साम्राज्य की पश्चिम सीमा का द्वार था।”, वृद्ध बैंगा पाहन ने आँखों में दृढ़ विश्वास की चमक के साथ उत्तर दिया।

थोड़ी देर बाद जब दोनों बैंगा पाहन से मिलकर पहाड़ी से नीचे उतर रहे थे, उनकी नजर कुछ बौद्ध भिखवुओं पर पड़ी, जो पहाड़ी के एक कोने में खुदाई का काम कर रहे थे।

ब्यूटी को प्रो० विभीषण की याद आ गई। अगर वह यहाँ होते तो कहते- “महिषासुर बौद्ध धर्मावलम्बी था, और टांगीनाथ धाम भी कभी एक बौद्ध मठ था, जिसपर वैदिकों ने जबरन कब्जा जमा रखा है”। सोचते-सोचते उसके चेहरे पर अनायास ही मुस्कराहट कौंध गयी। फिर, वह निशांत को संबोधित करते हुए बोली- “अजीब बात है, यह पूरा क्षेत्र विशुद्ध रूप से शिव का प्रभाव क्षेत्र है। कई आधुनिक इतिहासकार महिषासुर को एक अनार्य राजा मानते हैं। प्रजापति ब्रह्मा तो ऋग्वेद के सबसे बड़े देवता हैं फिर, अनार्य महिषासुर ने आर्य देवता ‘प्रजापति ब्रह्मा’ की तपस्या क्यों की? उसे तो महादेव शिव की तपस्या करनी चाहिए थी।”

निशांत ने कुछ समय तक सोचने के बाद उत्तर दिया- “मेरे हिसाब से आर्य-अनार्य का भेद वास्तव में ‘बाहरी-भीतरी’ भेद नहीं है। बल्कि, यह नगरों, जंगलों और पहाड़ों में रहने वाले यहाँ के मूल निवासियों की जीवन-शैली और भाषा का भेद है। प्राचीनकाल में नगरों में रहने वाले नागरिक अपने समाज के संभ्रात लोगों को ‘आर्य’ शब्द से संबोधित करते थे। फिर, धीरे-धीरे नगरों में आर्य कहने की यह परिपाटी चल निकली होगी। पढ़े-लिखे और संभ्रात नागरिक ‘आर्य’ और कम पढ़े-लिखे गरीब लोग ‘अनार्य’ वर्ग में विभाजित हो गए होंगे। कालांतर में यही वर्ग विभाजन, नस्लीय विभाजन

के रूप में स्थापित हो गया होगा। बाद में अंग्रेज इतिहासकारों ने श्वमअपकम - त्समश् की नीति के तहत इस विभाजन को स्थायी रूप देकर आर्य-अनार्य का भेद खड़ा कर भारतीय समाज को बाँट दिया होगा।”

पहाड़ी से नीचे उतरने हुए निशांत ने प्रश्न किया-“ इसके बाद अब कहाँ जाना है?”

“महरौली!” ब्यूटी ने भावहीन चेहरा बनाते हुए उत्तर दिया।

“मजाक कर रही हो क्या? महरौली दिल्ली में है!” निशांत आतंक से चिल्लाया।

“अगर महरौली दूर है तो मुंडेश्वरी टेम्पल चलते हैं। यहाँ से सिर्फ साढ़े तीन सौ किलोमीटर है।”, ब्यूटी हौले से मुस्कराई।

“लेकिन, अभी कहाँ चलें?” निशांत ने थके हुए स्वर में प्रश्न किया।

“नेतरहाट चलते हैं। सन-सेट देखेंगे। फिर कल सुबह कैमूर के लिए प्रस्थान करेंगे”, ब्यूटी ने अपना मंतव्य जाहिर किया।

निशांत ने राहत की साँस लेते हुए हामी भरी।

5

अगले दिन चार बजे सुबह दोनों, नेतरहाट से कैमूर के लिए निकल पड़े। लगभग सात घन्टे तक साढ़े तीन सौ किलोमीटर की दूरी और साढ़े छह सौ फीट की ऊँचाई वाली कैमूर की पहाड़ी का कठिन रास्ता तय कर दोनों कैमूर स्थित माता मुंडेश्वरी के प्राचीन मंदिर में पहुँचे। मंदिर में सबकुछ बेहद पुरातन और रहस्यमय लग रहा था।

“क्या तुम्हे लगता है कि इस मंदिर का कोई सम्बन्ध पठार के असुरों के पूर्वजों से रहा होगा?” ब्यूटी ने सवाल किया।

“असुरों के पूर्वज अर्थात, महिषासुर और उसके लोग?” निशांत ने सवाल किया।

ब्यूटी ने ‘हाँ’ की मुद्रा में सिर हिलाया और बोली- “चलो, अंदर देखते हैं। कुछ तो मिलेगा”।

“लगता है जैसे इस मंदिर को तोड़ने का प्रयास किया गया है। बाहर पड़ी मूर्तियों के अंग भी ऐसे टूटे हैं, मानो तेज हथियारों से उन पर चोट की गयी हो।”, निशांत, ब्यूटी की तरफ मुखातिब होते हुए बोला।

ब्यूटी ने सहमति की मुद्रा में सिर हिलाया और दोनों मंदिर के गर्भगृह प्रवेश कर गए।

बैंगा पाहन की बात सही थी, मुंडेश्वरी देवी की साढ़े तीन फीट की काले पत्थर की प्रतिमा, महिषी अर्थात भैंस पर आरुढ़ थी। महिषी जो महिषासुर के साम्राज्य का प्रतीक चिन्ह थी, इस मंदिर में वही महिषी मुंडेश्वरी देवी का वाहन थी।

मंदिर के पुजारी को जब पता चला कि दो शोधार्थी मंदिर के इतिहास के बारे में जानने के लिए आये हैं तो वह खुद ही उनके पास चला आया।

बातचीत के क्रम में पुजारी ने उन्हें मुंडेश्वरी मंदिर से जुड़ी एक विचित्र बात बतायी- “मुंडेश्वरी माता रक्त की बलि नहीं लेती। जब भी बलि हेतु किसी मेमने को देवी की मूर्ति के सामने लाया जाता है वह तत्क्षण मृतप्राय हो जाता है। लेकिन, थोड़ी देर के बाद जब उसपर ‘मन्त्र अभिसिक्त’ अक्षत फेंका जाता है तो वह स्वतः उठ खड़ा होता है।”

पुजारी की बातें सुनकर, निशांत ने ब्यूटी की तरफ देखा।

ब्यूटी ने धीरे से कहा- “होगा कोई रीजन। लेकिन, फिलहाल हमें इस विषय पर तो रिसर्च नहीं करना है न? निशांत ने धीरे से ‘सहमति की मुद्रा में सिर हिलाया।

पुजारी को साथ लेकर जब वे मंदिर की पहाड़ी का मुआयना करने लगे तो पाया कि मंदिर के चारो तरफ पहाड़ी पर श्रीयंत्र सरीखे कई सिद्ध-यंत्र एवं मंत्र उत्कीर्ण हैं। प्रत्येक कोने पर शिवलिंग हैं। ऐसा लगता था कि पहाड़ी के पूर्वी-उत्तरी कोने में जब माता मुण्डेश्वरी का मंदिर स्थापित हो रहा होगा तो उसके चारों तरफ विभिन्न देवी-देवताओं के मूर्तियां भी स्थापित कर दी गई होंगी। इस मंदिर में तीन ऐसी विचित्र चीजें थीं, जो उन्हें चकित कर रही थी- देवी का वाहन, टूटी मूर्तियाँ, और देवी के मंदिर में रक्त बलि का निषेध।

अचानक ब्यूटी की नजर मूर्तियों की भीड़ में उपेक्षित पड़ी एक प्रतिमा पर पड़ी। वह एक श्यामवर्ण धनुर्धर की मूर्ति थी, जिसके तीर पर एक नाग फन काढ़े बैठा हुआ था।

“अरे, ये किसकी मूर्ति है?” ब्यूटी ने आश्चर्य से पूछा।

पीछे से पुजारी बोला- “ये धनुर्धर शिव की मूर्ति है।”

“अगर ये धनुर्धर शिव की मूर्ति है तो शिव के सिर पर जटायें क्यों नहीं हैं? और फिर, उनके गले की जगह तीर पर नाग क्यों टंगा है?”, ब्यूटी ने सवाल किया।

पुजारी के पास इसका कोई उत्तर नहीं था।

“ये प्राचीन मूर्ति शिव की नहीं बल्कि किसी मानव या देवता की है”, ब्यूटी निर्णायक स्वर में बोली।

“किसकी होगी? क्या किसी असुर वीर की?”, निशांत ने ब्यूटी से प्रश्न किया।

“असुर और नागों के बीच कई सीधा सम्बन्ध हो, ऐसी मुझे जानकारी नहीं। ये मूर्ति किसी अन्य मनुष्य की है।”, ब्यूटी ने कुछ सोचते हुए उत्तर दिया।

थोड़ी देर इधर-उधर भटकने के बाद निशांत ने पूछा- “बहुत थकान लग रही है। क्या वापस लौटें?”

ब्यूटी ने सहमति की मुद्रा में सिर हिलाया।

कैमूर से राँची वापस लौटते-लौटते रात हो गई। दोनों ने तय किया कि वे रातभर राँची में रुक कर अगले दिन कोल्हानम वापस लौटेंगे।

अचानक, ब्यूटी को न जाने क्या सुझा, वह निशांत से बोली- “राँची यूनिवर्सिटी के जनजातीय विभाग का एक चक्कर लगाते हैं। राय को पकड़ते हैं, और पूछते हैं कि उसने हमारा सिक्का क्यों बदला।”

निशांत ने मोबाइल फोन पर एक नजर डाली, फिर पूछा- “रात के साढ़े आठ बज रहे हैं। क्या वह इस समय वहाँ होगा?”

ब्यूटी ने खुशामदी लहजे में कहा, “एक बार चल कर देखने में क्या हर्ज है? वैसे भी हमें आज कोई दूसरा काम तो है नहीं!”

निशांत ने सहमति की मुद्रा में सिर हिलाते हुए अपनी गाड़ी राँची यूनिवर्सिटी की दिशा में मोड़ दी।

6

राय, राँची यूनिवर्सिटी के जनजातीय विभाग के अंदर कुर्सी पर बैठा, पहले की ही भांति कुछ लिख रहा था। दरवाजे पर हलकी आहट सुनकर उसने सिर उठाया। दोनों को अपने सामने देखते ही उसके चेहरे पर चमक आ गई। बिना किसी भूमिका के वह बच्चों की तरह चहकते हुए बोला- “पिछली बार जो सिक्का तुम लेकर आई थी, वो खांटी था। बिलकुल असली!”

“लेकिन, उस दिन तो आपने कहा था कि वह सिक्का नकली है। फिर, मेरा सिक्का बदल भी दिया”, ब्यूटी नाराज स्वर में बोली।

“तो क्या हुआ? मैं तुम्हारा सिक्का अभी वापस करता हूँ। तुम भी मेरा सिक्का जल्दी से वापस करो।”, वह बच्चों की तरह किलकारी मारते हुए बोला।

ब्यूटी बोली- “पहले मेरा सिक्का दिखाइये।”

“लो देखो!, कहते हुए उसने अपने दाहिने हाथ की मुठ्ठी खोल दी”, उसकी हथेली पर एक बेहद पुराना सिक्का मौजूद था।

ब्यूटी ने झपट कर उसके हाथ से वह सिक्का ले लिया। फिर उलट-पलट कर देखने लगी। फिर आश्चर्य होने के लिए उसने वह सिक्का निशांत की तरफ बढ़ा दिया।

निशांत ने थोड़ी देर तक सिक्के का मुआयना करने के पश्चात संतुष्टि की मुद्रा में अपना सिर हिलाया। फिर, जम्हाई लेता हुआ बोला- “मुझे थकान जैसी लग रही है। मैं थोड़ी देर कार में ही आराम करता हूँ। ब्यूटी ने सहमति में सिर हिलाया।

इधर राय टेबल की दरार में कुछ खोजने में मशगुल था।

ब्यूटी ने अपने बैग में हाथ डालकर राय द्वारा दिए गए सिक्के को बाहर निकाला, और उसे लौटने को तत्पर हुई। राय ने उसके हाथ से सिक्का ले लिया और बोला-“ये सिक्का दो हजार साल पुराना है, लेकिन, तुम्हारा सिक्का उससे भी पुराना है, पुष्यमित्र शुंग के वंश के काल का।

इसके बाद जैसे ही ब्यूटी बाहर जाने के लिए उठी, राय ने अपने हाथ का सिक्का ब्यूटी को थमाते हुए कहा, “इसे भी रख लो?”

इसके बाद वह उसे बैठने का इशारा करते हुए उठा और एक पुरानी सी आलमारी में से एक स्टील का डब्बा निकाल कर ले आया और ब्यूटी को थमाते हुए बोला- “इसे भी रख लो। इसमें रखी चीजें तुम्हारे रिसर्च में काम आयेंगी।”, ब्यूटी ने बेहद सावधानी से डब्बा अपने हाथों में ले लिया।

तभी अचानक बिजली चली गई। रात का धुंधलका दिन पर पूरी तरह हावी हो चुका था। कमरे में अब रात जैसी स्थिति बन गयी थी।

ब्यूटी ने अँधेरे में ही स्टील के डब्बे पर से ढक्कन हटाया। फिर, अचानक चीखते हुए उसने डब्बे को टेबल पर वापस रख दिया।

“क्या हुआ?” राय ने बेहद सहज लहजे में सवाल किया।

“लगता है डब्बे में कोई कीड़ा या छिपकली थी। उसने मेरी उँगलियों में काट लिया है”, ब्यूटी दर्द से कराहते हुए बोली।

राय ने ठन्डे स्वर में कहा- “तुम्हारा वहम है। बंद डब्बे के अन्दर कीड़ा या छिपकली कहाँ से आयेंगे।”

“सर, बहुत ज्यादा दर्द हो रहा है, मैं अपना मोबाइल फोन भी नहीं उठा पा रही हूँ।”, ब्यूटी कराहते हुए बोली

“तुम बैठी रहो, मैं मोमबत्ती जलाता हूँ”, कहते हुए राय धीरे-धीरे उठा और चींटी की चाल चलते हुए आलमारी तक पहुँचा। वहाँ से एक मोमबत्ती निकाली और वापस आकर अपनी टूटी हुई कुर्सी पर बैठ गया।

राय को मोमबत्ती जलाने में पाँच मिनट लग गए। इस दौरान ब्यूटी किसी तरह दर्द को बर्दाश्त करती रही।

इसके बाद मोमबत्ती की रौशनी में राय ने ब्यूटी के उँगलियों का परिक्षण किया फिर उसने मोमबत्ती की रौशनी में ब्यूटी के चेहरे का मुआयना किया। उसके बाद, राहत भरी आवाज में बोला- “घबराने की कोई बात नहीं! पाँच मिनट में दर्द कम हो जायेगा।”

तभी अचानक कमरे में बिजली आ गई और ट्यूबलाइट की रोशनी कमरे में बिखर गई। ब्यूटी ने डब्बे की तरफ नजर दौड़ाई। टेबल पर लोहे के नागों की कई छोटी-छोटी मूर्तियाँ बिखरी पड़ी थीं।

‘इस डब्बे को संभाल कर रखना और अपने सिवा किसी और को भूलकर भी इन मूर्तियों को हाथ मत लगाने देना। अपने दोस्तों को भी नहीं।’, मेज पर बिखरी मूर्तियों को वापस डब्बे में डालते हुए राय चेतावनी भरे स्वर में बोला।

“लेकिन, इनका मैं करूँगी क्या?,” ब्यूटी ने सवाल किया।

कोई जवाब नहीं मिला। उसने चौक कर राय की तरफ देखा। राय मेज पर अपना सर रख कर सो रहा था।

वह दरवाजे से बाहर निकली। बाहर, निशांत भी अपनी कार की ड्राइविंग सीट पर बैठा ऊँघ रहा था।

जब दोनों वहाँ से बाहर निकले तो राँची की सड़कों पर भीड़ कम हो चुकी थी।

रात के साढ़े ग्यारह बज रहे थे। लेकिन ब्यूटी की आँखों से नींद गायब थी। उसने तय किया कि वह कल सुबह एक बार फिर राय से मिलेगी और पूछेगी कि डब्बे में रखी लोहे की इन नाग मूर्तियों का क्या रहस्य है।

सुबह पांच बजे ब्यूटी की नींद खुल गई। वह बिस्तर से उठी और फ्रेश होकर राँची यूनिवर्सिटी की तरफ पैदल ही निकल पड़ी। लगभग तीस मिनट बाद जब वह जनजातीय विभाग के गेट पर पहुँची तो पाया, राय मेज पर टेक लगा कर अभी भी सोया हुआ था।

उसने कमरे के अन्दर जाकर राय की पीठ को हलके से थपथपाया।

राय के चौक कर आँखें खोल दी। ब्यूटी को सामने खड़ा देख राय धीरे से मुस्कराया और बोला- “रात भर नींद नहीं आई? मुझे पता था, नहीं आएगी। मुझे तो चालीस साल से नहीं आ रही थी।”

ब्यूटी में अविश्वास भरी नजरों से उसकी तरफ देखा। “मुझे मालुम था कि तुम वापस जरूर आओगी। इसीलिए, मैं कल रात घर नहीं गया था।”, फिर वह बच्चों की तरह किलकारी मार कर हँसने लगा।

ब्यूटी उससे कुछ पूछने के लिए उद्वत हुई तो वह बोला-“सवाल बाद में पूछना, अभी एक कहानी सुनो-“बात पहली शताब्दी की है। वे असुर थे, जिन्होंने सनातन धर्म को बचाया था। वे असुर ही थे जिन्होंने तुम्हारे वेदों की रक्षा की थी। हाँ, वे इसी वन प्रदेश के आदिम निवासी थे।”

ब्यूटी को लगा जैसे राय के मुहँ से निकलते शब्द, किसी सम्मोहन में बहे जा रहे हों।

“वे इंद्र के वज्र की तरह मजबूत और ब्रह्मा की तरह प्रकृति के सुकुमार प्रेमी थे। वे नागों की तरह खतरनाक, तथा शिव की तरह कठोर जीवन जीने वाले थे। उन्होंने अपनी भुजाओं के बल पर इस समस्त पठार को सुरक्षित क्षेत्र बना दिया था। उनका साम्राज्य कैमूर की पहाड़ियों से लेकर छोटानागपुर के पठार तक फैला था।

वह सांस लेने के लिए रुका फिर बोला- “दरअसल, असुरों और देवताओं के पिता एक ही थे- ऋषि कश्यप!”

ऋषि कश्यप, भगवान् ब्रह्मा के मानस-पुत्र मरीचि के पुत्र थे। कश्यप की सत्रह पत्नियाँ थी। उनकी एक पत्नी का नाम अदिति था। अदिति, देवताओं की माता थी। उनकी दूसरी पत्नी जिसका नाम दिति था, वह असुरों की माता थी। उनकी तीसरी पत्नी का नाम कद्रु था। वह नागों की माता थी।

“तो क्या असुर ‘निर्दयी और नरभक्षी नहीं थे”, ब्यूटी ने आश्चर्य से सवाल किया।

वह आगे बोला, “असुर तो देवताओं के भाई थे। असुर अच्छे और बुरे दोनों गुणों वाले थे। अच्छे गुणों वाले असुरों को ‘आदित्य’ तथा बुरे गुणों से युक्त असुरों को ‘दानव’ कहा जाता था। लेकिन, कालांतर में धीरे-धीरे देवताओं

और असुरों के बीच की दूरी बढ़ती गई। तत्पश्चात, अनगिनत देवासुर संग्राम हुए। लेकिन, असुर कभी भी सनातन परम्परा से अलग नहीं हुए। प्रकृति को ब्रह्मा की संतान मानकर वे पेड़-पौधों, पहाड़ों, नदियों आदि की पूजा करते रहे। वे जानवरों से प्रेम करने वाले आदित्य थे। वे ऋग्वैदिक सनातनी थे।

“ऋग्वैदिक सनातनी?” ब्यूटी आश्चर्य से बोली।

राय बोला- “हाँ, ऋग्वैदिक सनातनी! देखो, ‘असुर’ शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में लगभग 105 बार हुआ है। उसमें 90 स्थानों पर इसका प्रयोग ‘शोभन’ अर्थ में किया गया है और केवल 15 स्थलों पर यह ‘देवताओं के शत्रु’ का वाचक है। ‘असुर’ का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है- प्राणवंत, प्राणशक्ति संपन्न (‘असुरिति प्राणनामास्तः शरीरे भवति, निरुक्ति 3।8) और इस प्रकार यह शब्द वैदिक देवों के एक सामान्य विशेषण के रूप में व्यवहृत किया गया है।”

“लेकिन, असुर जो देवताओं के भाई थे, वे अचानक ही घृणा के पात्र कैसे बन गए?” ब्यूटी ने जिज्ञासा दिखाई।

राय एक क्षण के लिए ठहरा फिर बोला- “उनके एक महान राजा से एक बहुत ही गंभीर गलती हो गई थी। असुरराज रंभ को जल में रहने वाली एक महिषी से प्रेम हो गया था। उसके और महिषी के योग से महिषासुर का जन्म हुआ।

ब्यूटी धीरे से बोली- “जी, यह कहानी हम किसी और से भी सुन चुके हैं।”

राय ने सर हिलाया और आगे बोलना आरम्भ किया-

“महिषासुर में ‘पाशविकता’ अपनी माता से आ गयी, जिसकी वजह से उसके दैवीय और मानवीय नैतिक मूल्यों का क्षरण हो गया। वह पशुओं की तरह स्वछंदता का पोषक हो गया। इसमें महिषासुर की उतनी बड़ी गलती नहीं थी, जितनी कि उसके पिता असुरराज रंभ की थी।”

ब्यूटी ने सर हिलाया ।

राय बोला- “अप्राकृतिक संकरण के कारण महिषासुर का जन्म हुआ था । वह अपने जन्म-दोष कारण आदित्य नहीं बन पाया ।

ब्यूटी बेहद सम्मान के साथ बोली- “सर, आज इस कहानी पर कौन यकीन करेगा?”

राय हँसते हुए बोला- “इन पौराणिक कथाओं पर यकीन न करना चाहो तो मत करो । लेकिन, ‘ब्रह्मा’ अर्थात् ‘प्रकृति के निर्माता’ के संकेतों को तो समझो और उसकी गतिविधियों में अनावश्यक हस्तक्षेप मत करो । अगर मनुष्य के अनावश्यक हस्तक्षेप से कहीं भी महिषासुर जन्म लेता है तो यह गलती उसकी नहीं, बल्कि मनुष्य की है ।

थोड़ी देर सुस्ताने के बाद राय ने आगे कहना आरम्भ किया-“युग बीतते गए । न अलौकिक देवता रहे, न मायावी असुर । लेकिन, उनकी मानव संतानें जीवित रहीं । असुरों की संतानें जंगलों में जिन्दा रहीं और देवताओं की संतानें नगरों और गाँवों में । उनके संस्कार, आचार-विचार और जीवन शैली में अंतर आने लगे, लेकिन सनातन संस्कृति के प्रति उनकी उनकी आस्था ज्यों का त्यों बनी रही ।

राय एक पल के लिए रुका, फिर उसने आगे कहना शुरू किया- ईसा-पूर्व 262 में सनातन धर्म के इतिहास ने नयी करवट ली । चंड अशोक मौर्य अपने निन्यानवे सौतेले भाइयों की हत्या कर मगध साम्राज्य सम्राट बना और उसने कलिंग पर हमला कर एक लाख लोगों की हत्या करवा दी । कहते हैं, उसने इस युद्ध के पश्चात बौद्ध धर्म अपना लिया । लेकिन, यह बात सच नहीं थी । अशोक तो कलिंग विजय के दो साल पहले ही बौद्ध धर्म स्वीकार कर चुका था । अशोक का बौद्ध धर्म अपनाने का देशव्यापी प्रचार सिर्फ शक्तिशाली बौद्ध मठों का समर्थन हासिल करने तथा कलिंग विजय के दौरान हुए रक्तपात पर पर्दा डालने का बहाना मात्र था ।

ब्यूटी बीच में हस्तक्षेप करते हुए बोली- “हाँ, बुद्धिस्ट टेक्स्ट अशोकवदना में लिखा है कि अशोक ने बंगाल में आजीवक सम्प्रदाय के 18 हजार लोगों का एक बार में ही कत्ल करवा दिया था। एक जैन मुनि ने एक तस्वीर बनाई थी, जिसमें उसने बुद्ध को एक जैन गुरु के सामने झुकते दिखाया था। अशोक ने उस जैन को परिवार समेत घर में बंद कर मकान में आग लगवा दी। उसके बाद उसने ऐलान करवा दिया कि जो भी व्यक्ति किसी भी जैन मुनि का सिर काटकर लायेगा उसको सोने का एक सिक्का पुरस्कार स्वरूप मिलेगा। जैन मुनियों की हत्या ये सिलसिला तब खत्म हुआ जब किसी ने एक बौद्ध भिक्षु को जैन मुनि समझकर मार डाला, जो कि वास्तव में अशोक का एकमात्र जिन्दा बचा सहोदर भाई तिस्स था। लेकिन, तिस्स के समर्थकों को लगा कि वैदिकों ने षड्यंत्र करने तिस्स की हत्या करवायी है।”

सहमति की मुद्रा में सिर हिलाते हुए राय बोला- “इसी तिस्स के क्रोधित समर्थकों ने उसकी हत्या के बाद बौद्ध धर्म के प्रेम, दया, करुणा, और अहिंसा के मौलिक सिद्धांत को नजरंदाज करते हुए ‘बुद्ध या युद्ध’ की नीति की शुरुआत की। परन्तु, उनके हिंसक विचारों की वजह से उन्हें बौद्ध धर्म से निष्कासित कर दिया गया। किन्तु वे गुप्त रूप से अपने कार्य में लगे रहे।”

राय ने आगे कहना शुरू किया- “तुम्हे अशोक के कालखंड के लाट, स्मारक, शिलालेख और स्तूप समस्त भारत में मिलेंगे, लेकिन, इस वन प्रदेश में नहीं मिलेंगे। सोचो, ऐसी क्या बात थी कि राजगृह, बैशाली और पाटलिपुत्र से इतना नजदीक होने के बाद भी यहाँ अशोक का कोई शिलालेख उपलब्ध नहीं है? दरअसल, अशोक भारत का सम्राट तो बन गया था, लेकिन असुरों के पराक्रम के कारण वह इस पठार पर नियंत्रण नहीं कर पाया था।

असुरों के पराक्रम के कारण मगध के दक्षिण के पठार का समस्त प्रदेश अजेय था। अशोक के सैनिक भी इस क्षेत्र से दूर ही रहते थे। इसलिए, अशोक के साम्राज्य में धार्मिक रूप से सताए गए जैन, वैदिक और

आजीवकों ने भागकर इस वन प्रदेश में शरण ली और उन्होंने टांगीनाथ जैसी जगहों पर शानदार मंदिर और देवी-देवताओं की खूबसूरत मूर्तियाँ बनायीं। जैनों ने सम्मेद शिखर पर जैन मंदिर बनवाए। स्थानीय ऋग्वैदिक असुरों ने कभी भी उनका विरोध नहीं किया, बल्कि सहजता से उन सभी धार्मिक परम्पराओं को स्वीकार कर इस क्षेत्र में एक ऐसी एक महान सनातन धर्म समाज की नींव रखी, जिसमें जैन, बौद्ध, वैदिक, आजीवक, लोकायत, आदि एक दूसरे का सम्मान करते हुए परस्पर स्नेह से रहते थे।

दूसरी तरफ, मौर्यकाल में अंतिम दिनों में राज्य की जनता मौर्य शासकों और बौद्ध मठों के अत्याचार से त्रस्त थी। राज संरक्षण में अब ये बौद्ध मठ राजनीतिक षड्यंत्र और धार्मिक उत्पीड़न के पर्याय बन गए थे। तिस्स के पुराने समर्थक अब इन मठों को नियंत्रित करने लगे थे। अब ये बौद्ध मठ राग-रंग और दरबारी षड्यंत्रों का अड्डा बन गए थे।

इधर पश्चिमी सीमा पर विदेशी यवन मगध की प्रभुसत्ता को ललकार रहे थे। ऐसे में मगध की सत्ता एक बेहद कमजोर और अय्यास मौर्य सम्राट बृहद्रथ के हाथों में थी। इधर, ग्रीक आक्रमणकारियों ने भारत विजय के लिए कई बौद्ध मठों को अपने साथ कर लिया। ये मठ अब ग्रीक सैनिकों को बौद्ध भिक्षुओं के रूप में अपने मठों में पनाह देने लगे और उनके हथियार छिपाने लगे। इसकी खबर जैसे ही पुष्यमित्र शुंग को लगी उन्होंने राजा से बौद्ध मठों की तलाशी लेने की आज्ञा मांगी। किंतु, सम्राट ने पुष्यमित्र को आज्ञा देने से इनकार कर दिया।

इस दौरान सेनापति पुष्यमित्र राजा की आज्ञा के बिना ही अपने सैनिकों सहित मठों की जाँच करने चले गए। वहाँ इन जाँच के दौरान मठों से ग्रीक सैनिक पकड़े गए। उन्हें देखते ही मौत के घाट उतार दिया गया। वहीं, उनका साथ देने वाले बौद्ध गुरुओं को राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर राज दरबार में पेश किया गया।

मौर्य सम्राट् ब्रह्मद्रथ को सेनापति पुष्यमित्र का यह बर्ताव अच्छा नहीं लगा। एक सैनिक अभ्यास के दौरान ही राजा और सेनापति के बीच बहस छिड़ गई। बहस इतनी बढ़ गई कि राजा ने पुष्यमित्र पर हमला कर दिया, जिसके पलटवार में सेनापति ने ब्रह्मद्रथ का वध कर दिया।

वध के बाद सेना ने पुष्यमित्र का साथ दिया और उसे ही अपना राजा घोषित कर दिया। इसके बाद, पुष्यमित्र ने भारत में पैर पसार रहे ग्रीक शासकों को भारत से खदेड़ा। राजा ने ग्रीक सेना को सिंधु पार तक धकेल दिया।

इस लड़ाई में यवनों की हार के बाद तिस्स समर्थक बौद्ध मठों की कमर टूट गयी। उनमें से कुछ भयभीत होकर जंगल-पहाड़ों की तरफ भाग गए, या भूमिगत हो गए।

पुष्यमित्र शुंग ने भारत में दोबारा से वैदिक सभ्यता का विस्तार किया। इस दौरान जिन लोगों ने भय से बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था, वे फिर से वैदिक धर्म की ओर लौटने लगे।

विदेशियों के साथ लड़ाई में पठार के असुर राजा ने पुष्यमित्र शुंग का साथ दिया। उन्होंने, मगध के लिए लोहे के अस्त्र-शस्त्र बनवाये। ऋषि पतंजलि के पुरोहितत्त्व में मगध सम्राट् पुष्यमित्र शुंग के अश्वमेध यज्ञ को सफल बनाने वाले असुर जाति के अगियार लोहार ही थे, जिन्होंने पहले भी उसकी सेना के लिए लोहे के घातक अस्त्र-शस्त्र बनाये थे और यवनों से देश की रक्षा की थी।”

राय की कहानी अभी समाप्त नहीं हुई थी। राय ने बोलना जारी रखा- “अगर तुम इस लोहे के सिक्के का उस दौर के लोहे के हथियारों से मिलान करोगी तो दोनों के लोहे एक से लगेंगे। ये सिक्के, उस दौर के इस पठार के असुर राजा के हैं, जिसमें एक तरफ उनके कुल देवता ब्रह्मा और दूसरी तरफ महिषी का चित्रण है। यह उनके महिषासुर की माता के प्रति सम्मान का प्रतीक है।”

इतना कह कर राय जब चुप हो गया। इसके बाद कुछ पलों तक कमरे में सन्नाटा पसरा रहा। फिर, जैसे किसी फिल्म का शो खत्म हुआ हो, ब्यूटी की तन्द्रा टूटी। उसने सिर उठा कर राय की तरफ देखा। राय, आँखे बंद किये खरटि ले रहा था।

राय से मिलकर लगभग तीन घंटे बाद जब ब्यूटी वापस गेस्ट हाउस लौटी तो देखा, निशांत का कमरा अब भी बंद था। उसने कमरे की घंटी बजाई। लगभग पांच मिनट बाद निशांत ने आँख मलते हुए दरवाजा खोला।

“पंद्रह मिनट में फ्रेश हो जाओ, कोल्हानम लौटना है।”, ब्यूटी ने फरमान सुनाया। उबासी लेते हुए निशांत ने ‘हाँ’ की मुद्रा में अपना सिर हिलाया।

अगले दिन जब वह लाइब्रेरी पहुँची तो देखा अविनाश एक कोने में बैठा कुछ लिख रहा था।

“गुड मॉर्निंग, अविनाश सर!” उसने धीरे से अविनाश को टोका।” अविनाश ने सिर उठा कर उसके अभिवादन का उत्तर दिया और फिर से लिखने में मशगुल हो गया।

तभी मैत्रेयी भी वहाँ आ गयी। ब्यूटी के पास की कुर्सी पर बैठते हुए बोली- “तीन दिनों से कहाँ गायब थी? प्रो० मित्रा की नोटिस का तुम्हे ध्यान है भी या नहीं? परसों तक रिसर्च प्रोपोजल जमा करना होगा, नहीं तो रजिस्ट्रेशन कैसिल!”

उसकी बात सुनकर ब्यूटी को गुस्सा आ गया। वह गुस्से से बोली- “ये कोल्हानम प्रो० मित्रा की जायदाद है क्या जो वह परसों मेरा रजिस्ट्रेशन कैसिल कर देगा?”

उसकी बात सुनकर अविनाश ने अपना सिर ऊपर उठाया और उसे समझाते हुए बोला- “हेड के बारे में ऐसा मत बोलो। अगर उन्हें पता चल गया तो वे आपको तंग भी कर सकते हैं।”

“अविनाश सर, आप सिर्फ मिश्राजी के रिश्तेदारों की थीसिस ही लिखते हैं, या कुछ सामान्य ज्ञान भी रखते हैं? जब पंजीयन दो साल के लिए हुआ है तो प्रोफेसर मित्रा डेट लाइन तय वाले कौन होते हैं?”, ब्यूटी ने प्रो० मित्रा का सारा गुस्सा अविनाश पर ही उड़ेल दिया।

किन्तु, ब्यूटी का गुस्सा अभी थमा नहीं था। वह उसे डपटते हुए बोली- “सर, अयोग्य लोगों की पीएचडी थीसिस लिखकर उन्हें प्रोफेसर बनाने वाले आप लोग ही हैं। आप लोग भी कोल्हानम् में कम करप्सन नहीं फैला रहे हैं।”

अविनाश चुपचाप सर झुकाये वही बैठा रहा। फिर, अचानक उठ कर वह बाहर निकल गया।

मैत्रेयी ने शिकायती अंदाज में ब्यूटी की तरफ देखा और सामने मेज पर पड़ी अविनाश की डायरी उसके सामने रख दी। डायरी के पन्ने पर अविनाश द्वारा ताजी लिखी हुई एक कविता थी।

ब्यूटी ने कविता पढ़ना शुरू किया-

“मैं बीए कर रहा था,
वह इंजीनियरिंग कर रही थी।
मैं एमए कर रहा था,
वह नौकरी कर रही थी।
मैं पीएचडी कर रहा था,

वह शादी कर रही थी।

मै पीएचडी कर रहा था,

वह बेटी को स्कूल ले जा रही थी।

मै पीएचडी न हुआ,

उसकी बेटी दसवीं पास हो गई।”

कविता जैसे ही खतम हुई, ब्यूटी ने मैत्रेयी की कलाई पकड़ी और उसे खींचते हुए बाहर की तरफ भागी। बाहर आकर उसने इधर-उधर देखा, अविनाश कहीं नजर नहीं आया। उसने मैत्रेयी से पूछा- “अविनाश का फोन नंबर है क्या ?

मैत्रेयी ने उसका मंतव्य भांपते हुए अविनाश को फोन लगा दिया। लेकिन, अविनाश फोन ही नहीं उठा रहा था। दोनों कैटीन की तरफ भागी। सुबह-सुबह कैटीन खाली था। एक लड़का टेबल पर बैठ कर प्याज काट रहा था। ब्यूटी ने घबराये हुए स्वर में मैत्रेयी से पूछा- “कही ये जान-वान तो नहीं दे देगा?”

मैत्रेयी के चेहरे पर भी चिंता की लकीरें स्पष्ट हो गईं।

इसके बाद दोनों लड़कियाँ घंटे भर अविनाश को इधर-उधर तलाशती रहीं, लेकिन अविनाश तो गधे के सींग की तरह गायब था।

“उधर देख!” अचानक ब्यूटी ने मैत्रेयी को गेट की तरफ देखने का इशारा किया। सामने जो नजारा था, उसे देख दोनों लड़कियाँ हैरत में पड़ गयीं

एक जर्सी गाय के गले की रस्सी पकड़े अविनाश धीरे-धीरे कोल्हानम के मुख्य गेट से अन्दर की तरफ आ रहा था।

दोनों लड़कियाँ भागती हुई उसके पास पहुँचीं।

“अरे यार, अचानक कहाँ गायब हो गए थे?”, मैत्रेयी ने पूछा। अविनाश झेंपते हुए बोला- “नरोत्तम सर की गाय सुबह से ही रम्भा रही थी। इसे किसी अच्छी नस्ल के साढ़ से पाल दिलवाने के लिए सर ने कहा था।”

“ये “पाल दिलवाना” क्या होता है?” ब्यूटी ने बहुत ही मासूमियत से पूछा। “गर्भधारण करवाना।”, मैत्रेयी ने धीरे-से उत्तर दिया। “फिर, दोनों लड़कियाँ हँस पड़ी।”

“अविनाश सर, अगर मैंने गुस्से में आपसे कुछ कह दिया हो तो मैं क्षमा मांगती हूँ।” ब्यूटी ने अपने बर्ताव के लिए क्षमा मांगी।

“ऐसा आपने कब किया था?” अविनाश के चेहरे पर असमंजस के भाव उभर आये।

ब्यूटी ने मैत्रेयी की तरफ देखते हुए आश्चर्य प्रगट किया-“ये अविनाश भी अजीब देवता आदमी है! इतने भले आदमी को कोई कैसे तंग करता होगा?”, उसका इशारा प्रो० मिश्रा की तरफ था।

उत्तर में मैत्रेयी धीरे से बुदबुदाई- “यह दुनिया अविनाश जैसे धर्मात्माओं की वजह से ही तो चल रही है।”

“क्या तुमने कुछ कहा?” ब्यूटी ने मैत्रेयी की तरफ देखते हुए सवाल किया।

उत्तर में मैत्रेयी के चेहरे पर एक फीकी सी मुस्कान दौड़ गयी।

अपनी नौकरी के सिलसिले में निशांत के राँची जाने का कार्यक्रम था। ब्यूटी भी उसके साथ हो ली। छोटानागपुर के पठारी और पहाड़ी इलाकों और संकरी घाटियों से गुजरती उनकी कार बार-बार लहरा उठती थी।

आस-पास के नजारे को देख निशांत भाव-विभोर होकर बोला- “अगर कुछ मील दूर से इन काली पहाड़ियों को देखोगी, तो लगेगा, मानो ये पहाड़ियाँ नहीं बल्कि स्वयं साक्षात् शिव ध्यान मुद्रा में बैठे हैं। और, तुम अगर इन पहाड़ियों की चोटियों से नीचे की तरफ इन सड़कों को देखोगी तो प्रतीत

होगा मानो ध्यान-मग्न शिव के गर्दन से लिपटे नागराज उनका श्रृंगार कर रहे हों।

ब्यूटी ने हलके से सर हिलाया। फिर अचानक उसे कुछ याद आ गया, वह बोली- “निशांत, उस सँपेरे ने लोहे का वह सिक्का मुझे ही क्यों दिया था? ये कोई इत्तेफाक था या मुझे जानबुझ कर इस काम के लिए चुना गया था?”

“हाँ, ये सवाल तो मेरे जेहन में भी था,” निशांत ने गंभीरता से उत्तर दिया।

“मेरी रिसर्च नागों से शुरू हुई थी, और असुरों पर अटक गई। मुझे लगता है कि असुरों और नागों के बीच के अंतर्संबंधों पर हमें काम करने की जरूरत है।”, ब्यूटी ने कहा।

“हमें नहीं, सिर्फ तुम्हें! मैं कोल्हानम् छोड़ रहा हूँ। मैं दारोगागिरी करके ही खुश रहूँगा। दारोगागिरी कौन कहे मुझे अगर किसी प्राथमिक विद्यालय में सरकारी शिक्षक की पक्की नौकरी मिल जाये तो मैं पीएचडी छोड़ दूँगा”, निशांत ने गंभीरता से उत्तर दिया।

उसकी बातें सुनकर एक पल के लिए ब्यूटी का मन अवसाद से भर गया। उसने विषय बदलने के लिहाज से सवाल किया - “छोटानागपुर में नागों का क्या इतिहास है?”

“बहुत पुराना! हजारों साल पुराना। “निशांत ने उत्तर दिया।”

“कही ऐसा तो नहीं कि इस क्षेत्र पर नियंत्रण के लिए असुर राजाओं और नागवंशियों में कोई युद्ध हुआ हो?” ब्यूटी ने सवाल किया।

“मैंने ऐसा तो कहीं नहीं पढ़ा। सन 2009 में पुरातत्वविदों के एक दल ने रांची के निकट खुस्वरागढ़ में नागवंशियों के एक प्राचीन साम्राज्य के अवशेषों का खुलासा किया था। यह जगह राँची से लगभग 50 किलोमीटर दूर है। पुरातत्वविदों ने खुदाई करते हुए एक प्राचीन मंदिर की खोज की

थी, जिसका कम से कम दो बार पुनर्निर्माण कराया गया था।”, निशांत ने उत्तर दिया।

“ये मंदिर कब का हो सकता है?” ब्यूटी से सवाल किया।

“बारहवीं शताब्दी या उसके आसपास का।”, निशांत ने उत्तर दिया। “ये तो बहुत बाद की बात है, मुझे लगता है, हमें ईसा-पूर्व या पहली शताब्दी पर फोकस करना चाहिए।”, ब्यूटी ने अपनी राय दी।

निशांत ने सहमति की मुद्रा में अपना सिर हिलाया। उनकी कार अब खूंटी जिले के जिला मुख्यालय के पास से गुजर रही थी।

अचानक ब्यूटी ने निशांत से कहा- “मुझे इसी जगह ड्राप कर दो।” “अरे, यहाँ कहाँ? पागल हो गई हो क्या?”, निशांत बौखलाए स्वर में बोला।

“तुम मुझे यहीं उतार दो। मैं तुम्हें इसी जगह पर शाम पांच बजे मिलूँगी। अगर तुम समय पर नहीं लौटो तो मुझे इसी सड़क के किनारे रात बितानी पड़ेगी।” ब्यूटी ने उसे चेताया।

“यह इलाका बेहद खतरनाक है”, निशांत चिंतित स्वर में बोला।

“यहाँ मुझे कोई खतरा नहीं है।”, लेकिन, तुम शाम को समय पर जरूर आ जाना।”, ब्यूटी ने उसकी चिंता को नजरअंदाज करते हुए उसे आश्वासन दिया।

“लेकिन, तुम्हें जाना कहाँ है?” निशांत ने चिंतित स्वर में पूछा।

“राय ने मुझे बताया था कि ताजना नदी के किनारे हंसा, टिटोला, कुंजला, और सरिदकेल आदि जगहों पर असुरों की हजारों साल पुरानी कब्रें हैं!”, कहते हुए ब्यूटी उसे आश्चर्य में डूबा छोड़ सड़क से नीचे कच्चे रास्ते पर उतर गई।

7

खूंटी जिले के ताजना नदी के पुर्वी छोर पर इंसानी आबादी से दूर सरिदकेल एक बियावान सी जगह थी। उसके समीप से गुजरती ताजना नदी एक दुबली पतली सी बरसाती नदी थी, जो बरसात के इस मौसम में थोड़ी मोटी-ताजी लग रही थी।

लगभग आधे घंटे तक पैदल चलने के बाद वह ताजना नदी के तट पर पहुँची। उसने ताजना नदी के किनारे एक स्थान पर बैठ कर एक बड़े पत्थर को हटाया। फिर, एक नुकीले पत्थर से उसके नीचे की गीली जमीन को धीरे-धीरे खोदना शुरू किया। जमीन गीली जरूर थी, लेकिन पथरीली होने की वजह से खोदना आसान नहीं था।

उसने अभी चार इंच के करीब ही मिटटी निकाली होगी कि अचानक उसे किसी आदमी के चीखने की आवाज सुनाई पड़ी- “ये क्या कर रही हो? यह हमारे पूर्वजों की कब्र है।”

“यह कब्र है?” उसने आश्चर्य से पूछा।

“जी, यहाँ पर हजारों कब्रें हैं। किसी भी बड़े पत्थर के नीचे अगर गड्ढा खोदोगी वहाँ कोई न कोई कब्र जरूर मिलेगी।”, वह आदमी कुपित स्वर में बोला।

उसकी बातें सुनकर ब्यूटी का कलेजा काँप गया। लेकिन, वह हिम्मत बटोरते हुए बोली- “मैं नहीं मानती।”

ग्रामीण बोला- “अगर नहीं मानती तो तुम पागल हो।”

ब्यूटी ने हिम्मत करते हुए उसे लालच दिया- “एक हजार रुपये की शर्त लगा लो। यहाँ कुछ नहीं है।”

प्रतिक्रिया में ग्रामीण तमक कर बोला- “ठीक है। तुम इसी जगह रुको, मैं फावड़ा लेकर आता हूँ।”

फिर वह जिस तरफ से आया था, उसी तरफ वापस लौट गया। लगभग आधे घन्टे बाद वह लौटा तो उसके पास लोहे का एक फावड़ा था। उसने गढ़ा खोदना शुरू कर दिया। ब्यूटी चुपचाप उसे गढ़ा खोदते देखती रही।

लगभग दो फीट गढ़ा खोदने के बाद उसे एक बड़ा सा पत्थर दिखा। ग्रामीण ने सावधानी से उस बड़े पत्थर को हटाया। पत्थर के नीचे एक बड़े मुहँ वाला लाल रंग का मर्तबान था। उसने मर्तबान में हाथ डाला, और जब अपना हाथ बाहर निकाला तो ब्यूटी हतप्रभ रह गई। उसकी मुठ्ठी में हड्डियों के टुकड़े थे, उसने दूसरी बार, तीसरी बार, चौथी बार यही किया। निकाले गए सामानों में तांबे के गहने, पत्थर की मालायें, कांस्य की गेंद, लोहे की अंगूठी, कंगन, पायल और लोहे के औजार थे।

ब्यूटी ने उन सामानों को छुकर देखा। उसे लगा जैसे वह 2000 साल पुराने असुर राज में पहुँच गई हो। उसे राय द्वारा बताई गई बातें याद आ गईं।

उसने मैदान के इधर-उधर नजर दौड़ायी- असुर काल की ईंटें इधर उधर-बिखरी पड़ी थीं। उसका मन यह सोच कर रोमांचित हो उठा कि यह वह जगह है, जहाँ आज से दो हजार साल पहले असुरों का कोई महान राजा निवास करता होगा, और उसके रानीवास में असुर सुंदरियाँ इन आभूषणों को पहनकर उसे रिझाती होंगी।”

उसने नजर उठाकर ताजना नदी की तरफ देखा। सावन के महीने में यह नदी लबालब भरी हुई थी। लेकिन, कुछ चट्टानें अभी भी पानी के ऊपर नजर आ रही थीं। उसने सोचा- ‘ये चट्टान उन असुर राजाओं के ऐश्वर्य के गवाह रहे होंगे, जिन्होंने इस पठारी इलाके के हंसा, टिटोला, कुंजला, और सरिदकेल में हजारों सालों तक निवास किया। उनकी कब्रें आज भी उनके इतिहास की गवाह हैं। उसे लगा मानो वह भी इस इतिहास का हिस्सा बनने वाली है।’

उसने पर्स से पांच-पांच सौ के दो नोट निकाले और उस आदमी के हाथों में थमा दिया।

इसके बाद उसने जैसे ही लोहे की अंगूठी को उठाने के लिए हाथ बढ़ाया, वह आदमी जोर से चीखा- “इसे उठाना मत, महाबली महिषासुर की आत्मा नाराज होकर इसी पवित्र स्थान पर मेरे हाथों तुम्हारा वध करवा देगी।”

ब्यूटी ने सहमते हुए अपना हाथ पीछे खिंच लिया लिया।

वह ग्रामीण एक-एक सामान को वापस जार में भरने लगा। ब्यूटी चुपचाप उसके क्रियाकलापों को देखती रही। देखते-देखते उस ग्रामीण ने मर्तबान को पत्थर से ढँक कर ऊपर से मिटटी डाल दी। फिर उसने ब्यूटी की तरफ खूंखार नजरों से देखते हुए पूछा- “क्यों आई हो यहाँ? तुम्हे यहाँ किसने भेजा है?”

डर के मारे ब्यूटी की जुबान बंद हो गई।

ग्रामीण ने एक झटके से उसका बैग झपट लिया और बैग का सारा सामान जमीन पर उलट दिया। एटीएम कार्ड, मोबाइल फोन, पांच-पांच सौ के नोट जमीन पर बिखर गए। फिर अचानक ग्रामीण की नजर जमीन पर गिरे लोहे के सिक्के पर पड़ी। उसने झपट कर सिक्का अपने हाथों में उठा लिया और उसे अपने माथे से लगाते हुए पूछने लगा- “तुम्हे ये सिक्का कहाँ मिला?”

किसी तरह ब्यूटी की जुबान से बोल फूटे- “राँची में राय नामक एक बुजुर्ग ने दिए थे।”

राय का नाम सुनते ही उसके चेहरे पर नरमी आ गई, वह उसे सिक्का लौटते हुए बोला- “क्षमा करो, मुझे लगा कि तुम हमारे पूर्वजों के कब्र की लुटेरी हो!” फिर विनम्रता से बोला- “आओ मेरे साथ।”

ब्यूटी किसी कठपुतली की भांति उसके पीछे-पीछे चल पड़ी। लगभग बीस मिनट बाद वे दोनों पहाड़ों के पीछे बसे एक छोटे से गाँव में पहुँचे। पूरे गाँव में मात्र आठ-दस कच्चे-पक्के मकान होंगे।

ग्रामीण बोला- “मेरा नाम बिमल असुर है। खूटी जिले से सारे असुर गाँव खत्म हो चुके हैं। सिर्फ कुछ बचे हैं। हम यहाँ अपने पूर्वजों के कब्रों की रक्षा करने के लिए रुके हुए हैं। जिन्दा असुरों की कोई कीमत नहीं, किन्तु असुरों के पूर्वजों की हड्डियाँ करोड़ रुपयों में बिकती हैं। हर महीने कोई न कोई बहुरूपिया पुरातत्ववेत्ता का रूप धर कर इस जगह पर आ जाता है। उसकी मंशा, इन कब्रों के अन्दर के सामान को अपने साथ ले जाने की होती है। हम उन्हें रोकते हैं। हमें न तो सरकार पर यकीन है और न पुलिस पर। उनके लिए ये एक पुरातत्व है, लेकिन हमारे लिए ये हमारी विरासत और हमारी पहचान है।”

ब्यूटी ने सहमति की मुद्रा में सर हिलाया।

इसी दौरान उसकी पत्नी भी वहाँ आ गई। बिमल ने उससे अजीब सी भाषा में कुछ कहा। जवाब में बिमल असुर की पत्नी ने क्या कहा यह तो ब्यूटी की समझ में नहीं आया, किन्तु, थोड़ी ही देर में उसकी पत्नी मिटटी के एक कुल्हड़ में कोई तरल पेय लेकर आई और ब्यूटी की तरफ बढ़ा दिया।

ब्यूटी ने हिचकिचाते हुए कुल्हड़ अपने हाथ में ले लिया।

“यह कोई नशे वाली चीज नहीं है। हम आदित्य असुर हैं, सुरा नहीं पीते।”, बिमल असुर ने उसे आश्चस्त किया।

ब्यूटी ने हिम्मत करते हुए वह तरल पेय पी लिया। तरल पेय पीते ही उसे गहरा झटका लगा। किन्तु, थोड़ी ही देर बाद वह सामान्य हो गई।

इस दौरान बिमल असुर उसे घूरता रहा।

थोड़ी देर बाद जब वह वापस जाने के लिए उठी तो बिमल असुर ने उसे बैठने का इशारा किया। उसी पल, उसकी पत्नी फिर प्रगट हुई। उसके हाथों में एक छोटी सी पोटली थी। ब्यूटी ने प्रश्नवाचक नजरों से बिमल असुर की तरफ देखा।

बिमल बेहद भावहीन मुद्रा में बोला- “ये लोहे के गहने हैं। हमने इन्हें अपने पारम्परिक तरीके से बनाया हैं। आपको बेच रहे हैं, आपके हजार रुपयों के बदले!”

ब्यूटी ने मुस्कराते हुए पार्वती के हाथों से वह पोटली अपने हाथों में ले लिया और पूछा- “आपलोग ये गहनें कब से बना रही हैं?”

बिमल ने उत्तर दिया- “हजारों सालों से ! हम आग से खेलने वाले अगियार असुर हैं। मेरी पत्नी भी असुर जनजाति की ही है। मैंने अपने बाप-दादाओं से लोहा गलाना तथा इसने अपने बाप-दादाओं से लोहे के आभूषण बनाने की कला सीखी है।” फिर वह बाहर की तरफ देखते हुए बोला- “अँधेरा हो रहा है। अब आपको यहाँ से चले जाना चाहिए। इस इलाके में साँपों का बहुत खतरा है। हमलोगों पर तो जहरीले साँपों का असर नहीं होता, किन्तु, वे दूसरों के लिए बेहद खतरनाक हैं।”

“आपलोगों को जहरीले साँपों से खतरा क्यों नहीं है?” ब्यूटी ने आश्चर्य से पूछा।

“हमें साँपों के बीच रहने की आदत पड़ गई है।”, बिमल असुर ने बात टालने की गरज से उत्तर दिया। फिर, कुछ देर खामोश रहने के बाद वह बोला- “आपको पार्वती अपनी सायकिल पर बैठा कर मुख्य सड़क तक छोड़ देगी।”

“क्या तुम सायकिल चलाना जानती हो?” ब्यूटी ने पार्वती से पूछा। ‘जी हाँ!’ पार्वती ने शर्माते हुए उत्तर दिया।

इसके बाद, पार्वती ने ब्यूटी को अपनी सायकिल की पिछली सीट पर बैठा लिया और किसी अनुभवी सायकिल चालक की भांति सायकिल चलाने लगी।

रास्ते में ब्यूटी ने पार्वती से पूछा- “तुम लोगों पर साँपों के जहर का असर क्यों नहीं होता?”

“हमें क्या पता!”, ‘पार्वती ने धीरे से उत्तर दिया।

इसके बाद उसने पार्वती से कोई अन्य सवाल नहीं किया।

वे दोनों जब मुख्य सड़क पर पहुँची, तो शाम के सवा पांच बज रहे थे। निशांत सड़क के किनारे अपनी कार खड़ी कर उसका इन्तजार कर रहा था। जब उसने सायकिल की पिछली सीट पर बैठी ब्यूटी को देखा तो राहत की साँस ली।

ब्यूटी हँसते हुए बोली- “ये पार्वती असुर है। मेरी नयी सहेली!”

निशांत ने खामोशी के साथ अपना सिर हिलाया।

ब्यूटी दरवाजा खोल कर कार के अंदर बैठने लगी। फिर, अचानक न जाने क्या सोच कर वह रुक गई। उसने पलट कर देखा। सड़क के किनारे अपनी सायकिल खड़ी कर पार्वती, उसके जाने का इन्तजार कर रही थी। वह वापस पार्वती के पास गई, और उसे आलिंगन में लेकर बोली- “गहनों के लिए धन्यवाद!”

पार्वती धीरे से उसके कान में बोली- ‘20 अक्टूबर को हमारे गाँव में आना। जलसा होगा।’

उसने चौक कर पार्वती की तरफ देखा- “पार्वती की आँखें हरी थीं, उसकी आँखों की ही तरह!”

रास्ते में ब्यूटी ने निशांत को सारी बातें बताई तो वह आश्चर्य से भर उठा।

ब्यूटी बोली-“ यहाँ मुझे दो बातें बेहद असामान्य लग रही हैं। पहला, ताजना नदी के तट पर असुरों की इतनी सारी कब्रें क्यों हैं? तथा दूसरा, पार्वती और बिमल पर साँपों के जहर का असर क्यों नहीं होता?”

परन्तु, इन प्रश्नों के उत्तर दोनों के पास नहीं थे। साँपों वाली बात पर निशांत को अचानक कुछ याद आ गया।

“चाईबासा के पास एक गाँव है सरजमहातू। पिछले दिनों वहाँ किसी सिंचाई परियोजना की खुदाई के दौरान एक पहाड़ी पर हजारों साल पुराने नागों के चित्र मिले हैं। यह जगह तुम्हारे किसी काम की हो सकती है। हो सकता है, वहाँ से आगे बढ़ने का कोई रास्ता मिले।” निशांत ने सुझाव दिया।

ब्यूटी उसकी बात पर गौर करते हुए बोली- “शायद तुम ठीक कह रहे हो। खूंटी जिले के सरिदकेल गाँव की पार्वती, जो कि असुर जनजाति की है, उसपर नागों के जहर का कोई असर नहीं होता। असुरों द्वारा स्थापित मुंडेश्वरी मंदिर के प्रांगण में एक अज्ञात धनुर्धर की मूर्ति के तीर पर एक नाग पण काढ़ कर बैठा है। अब तुम कह रहे हो कि, चाईबासा के पास के एक गाँव सरजमहातू की एक पहाड़ी पर हजारों साल पुराने नागों के चित्र मिले हैं। देखो, यह समस्त इलाका हजारों साल से असुरों का निवास स्थान रहा है। मुझे लगता है कि इन सभी जगहों पर नागों और असुरों के परस्पर संबंधों का कोई लिंक जरूर है। हमें सरजमहातू जरूर जाना चाहिए।”

“मतलब इसमें नाग बेहद अहम् कड़ी हैं।”, निशांत ने दिमाग लगाया। ब्यूटी ने ‘हाँ’ की मुद्रा में सर हिलाया और बोली-“हमें बीस अक्टूबर को पार्वती के गाँव भी तो जाना है।”

“उसमे तो अभी बीस दिन बाकी हैं।”, निशांत सिर हिलाते हुए बोला।

“तो कल क्या हम सरजमहातू चलें?”, ब्यूटी ने सवाल किया। निशांत ने ‘हाँ’ की मुद्रा में सर हिलाया।

8

अ गले दिन सुबह-सुबह दोनों चाईबासा के निकट सरजमहातू की तरफ निकल पड़े। लगभग डेढ़ घंटे के सफर के बाद दोनों सरजामहातू पहुँचे। सरजामहातू के आस-पास का इलाका सारंडा के विशाल जंगलों से घिरा हुआ था। पास ही हाथियों का एक कॉरिडोर था। इस बियावान जंगल क्षेत्र में प्राचीन चित्रों वाली पहाड़ी की तलाशना आसन काम नहीं था।

किन्तु, पास ही सड़क निर्माण का कार्य करवा रहे एक अभियन्ता ने उनकी खोज को थोड़ा आसान कर दिया। उसने बताया कि यहाँ से तीन किलोमीटर दूर एक सिंचाई परियोजना चल रही है। उसी के पास नागों के प्राचीन चित्रों वाली पहाड़ी अवस्थित है।

लगभग आधे घंटे बाद जब वे उसके बताये स्थान पर पहुँचे तो पाया कि एक पहाड़ी पर पतले धड़ और बड़े हुड वाले साँपों की अद्भुत तस्वीरें बनी हुई थीं। ब्यूटी को राय द्वारा दी गई नागों की मूर्तियों की याद आ गयी। पहाड़ी पर बने साँपों के चित्रों की बनावट उन्ही मूर्तियों जैसी थी।

सामने ही मुंडाओं का एक गाँव था। दोनों पैदल ही गाँव की तरफ चल पड़े।

गाँव के मुख्य द्वार पर एक प्राचीन मंदिर था, जिसके मुख्य द्वार पर लोहे के दो नाग बने हुए थे। निशांत ने मंदिर के अन्दर झाँक कर कहा- “ये मनसा देवी का मंदिर है। मनसा, नागों की माता है। इसकी पूजा, बंगाल, त्रिपुरा और नागालैंड के आदिवासी करते हैं। मुझे पता नहीं था कि छोटानागपुर पठार के इस सुदूर गाँव में भी इनकी पूजा होती होगी।”

जब दोनों गाँव के अन्दर पहुँचे तो कई लोग उन्हें देखने के लिए एकत्र हो गए। इसी बीच एक लड़का दौड़ कर गाँव के मुखिया को बुला लाया।

सशंकित मुखिया ने उनसे आने का प्रयोजन पूछा, फिर, संतुष्ट होकर उन्हें गाँव के चौपाल पर ले गया।

ब्यूटी ने जब उससे पहाड़ी पर बने साँपों के प्राचीन चित्रों के बारे में पूछा तो वह पहले तो कुछ भी बताने से ना-नुकुर करता रहा। किन्तु, उनके बार-बार अनुरोध करने पर वह उन्हें कुछ बताने के लिए राजी गया।

इसके बाद वह उन दोनों को साँपों के चित्रों वाली पहाड़ी के पास के एक तालाब के किनारे ले गया। फिर, उसने जो कहानी सुनाई वह अद्भुत थी:

“हम मुंडाओं के पहले राजा फनी मुकुट राय का जन्म इसी तालाब के किनारे हुआ था। उन्हें पुंडरिक नाग का पुत्र माना जाता है।”

“यह पुंडरिक नाग कौन है?” ब्यूटी ने सवाल किया।

मुखिया बोला- “हमारे समाज की मान्यताओं के अनुसार पुण्डरीक नाग तक्षक नाग का पुत्र था। यह तक्षक नाग वही है, जिसका जिक्र महाभारत में हुआ है। पुण्डरीक नाग एक महान शिव भक्त था। कालांतर में वह शिव की नगरी काशी में बस गया। वहाँ उसने एक ब्राह्मण कन्या से विवाह किया। कहते हैं, एक बार वह अपनी पत्नी के साथ इसी तालाब में रमण कर रहा था, तभी उसकी नागवंशी पहचान उसकी पत्नी के सामने जाहिर हो गई। इसके साथ ही वह निकट के जलाशय में प्रवेश कर गया। किन्तु उसकी पत्नी भी पुण्डरीक नाग का वियोग सहन नहीं कर सकी। और, उसने भी जल समाधि लेने का प्रण किया। किन्तु जल समाधि लेने से पहले उसने इसी जलाशय के किनारे एक बच्चे को जन्म दिया।

जलाशय के किनारे पड़े उस नवजात शिशु पर एक मुंडा सामंत मदरा मुंडा की नजर पड़ी। उसने देखा कि एक विशालकाय नाग कुंडली मारकर शिशु के सिरहाने बैठा उसकी रखवाली कर रहा है। मदरा मुंडा ने ही उस बालक को पाला-पोसा। इसी बालक ने बड़े होकर नागवंशी मुंडा राजवंश की

स्थापना कर डाली। यही शिशु, पठार के इतिहास में फनी मुकुट राय के नाम से प्रसिद्ध हुआ।”, इतना कह कर मुखिया खामोश हो गया।

“इसका मतलब यह हुआ कि हम इस वन-पठार भूमि को शेष भारत से जितना अलग-थलग समझते हैं, उतना यह है नहीं! यह क्षेत्र दुर्गम जरूर था लेकिन देश की मुख्य सांस्कृतिक धारा से बिलकुल अलग-थलग नहीं था।”, ब्यूटी ने निशांत की तरफ देखते हुए कहा।

“बिलकुल, जैनों के 23 वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म आज से लगभग 2 हजार 9 सौ वर्ष पूर्व वाराणसी में हुआ था। जन्म के बाद वे इस पठार के श्री सम्मेद शिखरजी पर चले आये। जन्म के समय से ही इनके शरीर पर सर्पचिह्न था। इसीलिए, इनका नाम ‘पार्श्व’ रखा गया। इनका धर्म चिन्ह भी सर्प ही था। इनकी सभी मूर्तियों में इनके सर पर फन वाले सर्प का चिन्ह विराजमान है”, निशांत ने उसकी बात का समर्थन किया।

निशांत आगे बोला- “इस इलाके में नागों का बहुत महत्व है। ये नाग ही छोटानागपुर पठार की प्राचीन जनजातीय संस्कृति को शेष भारत की सनातन संस्कृति से जोड़ते हैं।”

निशांत की बात सुनकर, ब्यूटी को राय की बातें याद आ गयीं। वह बोली- “राय ने बताया था कि नागों की माता कद्रू, ऋषि कश्यप की पत्नी थी। ऋषि कश्यप की अन्य दो पत्नियों से ‘देवता’ और ‘असुर’ जन्में थे। मतलब यह कि देवता, असुर और नाग ये सभी सनातन धर्म परम्परा के मूल हिस्से हैं।”

“ईसा के जन्म से 700 साल पहले इस प्रदेश के सम्मेद शिखर पर काशी का एक राजपुरुष अपना देह त्याग करता है और, कुछ विद्वानों को लगता है कि यह पठार सांस्कृतिक रूप से शेष भारत से अलग है, इसका शेष भारत की सनातन परम्परा से कोई सम्बन्ध ही नहीं, तथा यहाँ की जनजातियाँ अन्य भारतवंशियों से अलग हैं।”

ब्यूटी बोली- “हाल में ही किसी विदेशी ने रिसर्च करके बताया है कि मुंडा जनजाति के लोग भी विदेशी हैं, क्योंकि वो प्रोटो ऑस्ट्रेलियड परिवार की भाषा बोलते हैं। उसके अनुसार, वे ईसा के जन्म से 600 साल पहले आस्ट्रेलिया से यहाँ आये थे।

मुंडा मुखिया उनकी बात-चीत को बहुत ध्यान से सुन रहा था। मुंडाओं के विदेशी होने की बात पर भड़कते हुए बोला- “ये झूठ है, हम विदेशी नहीं हैं। हमारे पूर्वज हजारों सालों से विन्ध्यपर्वत पर निवास करते थे। वे देवी विन्ध्यवासिनी के प्रधान सेवक थे।”

मुंडा मुखिया की बातों ने ब्यूटी और निशांत की दिलचस्पी बढ़ा दी। वे एकाग्र होकर उसकी बातें सुनने लगे। मुंडा मुखिया की नजरों में जो इतिहास था वही दुनिया की नजरों में कहानी थी-सिर्फ कहानी!

“मेरे दादा अक्सर हमारे पराक्रमी पूर्वजों के बारे में कहनियाँ सुनाया करते थे। हमारे लोक-गीतों में भी वर्णित है कि हजारों साल पहले मगध में कोई नास्तिक राजा राज करता था। एक बार इस राजा के आदेश से उसके सैनिक विन्ध्य पर्वत के पूर्वी छोर पर अवस्थित देवी के मंदिरों को नष्ट-भ्रष्ट रहे थे। तब, देवी विन्ध्यवासिनी के मुंडा सेवकों ने विन्ध्य पर्वत के पूर्वी छोर पर स्थित देवी के सबसे प्राचीन मंदिर की रक्षा का बीड़ा उठाया।

क्रोध से काँपते हुए मुंडा-वीर टिड्डियों के दल की तरह पूरब की तरफ बढ़े। वे लगातार दस दिनों तक चलते रहे। ग्यारहवें दिन जब वे मंदिर की पहाड़ी के नजदीक पहुँचे तो पाया कि हजारों की संख्या में घुटे सिर वाले विधर्मी मंदिर की दीवारों और मूर्तियों को तोड़ रहे हैं। मुंडाओं ने अपने तीरों पर नागों को सवार कर उनपर हमला कर दिया। इस लड़ाई में हजारों विधर्मी मार डाले गए और सैकड़ों को बंदी बना लिया गया।

युद्ध जीत कर मुंडा वीर जब मंदिर के प्रांगण में पहुँचे तो पाया कि विधर्मियों ने मंदिर के बाहर स्थापित देवी-देवताओं की सैकड़ों मूर्तियों को क्षतिग्रस्त कर दिया है। उन्होंने मन्दिर का एक हिस्सा भी क्षतिग्रस्त कर दिया था।

किन्तु, सौभाग्य से देवी की मुख्य प्रतिमा सुरक्षित रह गयी थी। लेकिन, देवी की मूर्ति घेरे सात असुर पुजारियों के रक्तरंजित शवों को देख मुंडा सरदार की आँखों से अंगारे बरसने लगे। गुस्से से उफनते मुंडाओं के उस सेनापति ने देवी की पूजा शुरू की।

उसने साथी एक घुटे सर वाले विधर्मी को पकड़ कर लाये। मुंडाओं के मुखिया ने उसका सर बलिवेदी पर रख कर, उसकी बलि देने के लिए जैसे ही अपना फरसा उठाया, वह विधर्मी भय से अचेत हो गया। फिर दूसरे, तीसरे, चौथे, हर बलि के साथ यही चमत्कार होने लगा।

चकित मुंडा सेनापति ने मेमने की बलि देने की कोशिश की। लेकिन, वह भी बलिवेदी पर पहुँच कर अचेत हो गया।

इसके बाद मुंडा सेनापति के आदेश से उस मंदिर में रक्तबलि प्रथा पर रोक लग गई। कहते हैं, उस बलिबेदी पर किसी मेमने को रख भर देने से बलि की रस्म पूरी हो जाती है।

जिस प्रकार देवी के इस मंदिर की रक्षा मुंडाओं ने की थी उनके नाम पर मंदिर का नाम मुंडेश्वरी मंदिर के रूप में प्रसिद्ध हो गया। मेरे दादा कहते थे कि यह मंदिर हजारों सालों से कैमूर की पहाड़ियों के बीच आज भी पूर्व की भांति उसी तरह खड़ा है। मूर्तियाँ आज भी वैसी ही टूटी हुई अवस्था में मौजूद हैं। अपने तीर पर नाग को बैठाये, मुंडा सेनापति की एक मूर्ति आज भी उस मंदिर में स्थापित है।

मूर्ति की बात सुनकर, ब्यूटी ने अचरज से निशांत की तरफ देखा। उन्हें मुंडेश्वरी मंदिर के प्रांगन में स्थापित उस श्याम-वर्ण धनुर्धर की प्रस्तर मूर्ति की याद आ गई, जिसके तीर पर एक नाग फण काढ़े बैठा था।

इधर, मुखिया ने अपनी कहानी जारी रखी - "मंदिर की रक्षा के उपरांत मुंडा योद्धा पठार के वन प्रदेश में दक्षिण की ओर बढ़ते चले गए। वनों और पहाड़ों से सुसज्जित छोटानागपुर का यह पठारी प्रदेश उन्हें अपने विन्ध्य

प्रदेश जैसा ही लगा। रास्ते में उन्हें कई जनजातियाँ मिली जो उनके जैसी ही थी। लेकिन, वे रुके नहीं। किसी निर्जन जगह की तलाश वे आगे बढ़ते रहे, बढ़ते रहे। अंततः, सुदूर दक्षिण के पठारों में उन्हें हाथियों, और जंगली जानवरों से भरे साल के घने निर्जन वन मिले। उन्होंने इसी जगह को अपना ठिकाना बनाया।

एक दिन उनके नायक मदरा मुंडा को देवी के आशीर्वाद से उनका पहला राजा मिला- फनी मुकुट राय! नाग का अंश होने के कारण उसकी आँखें हरी थी। मुंडाओं में यह मान्यता है कि जिनपर नागों की विशेष कृपा होती है, उनकी आँखों का रंग हरा होता है। उनकी रक्षा स्वयं नाग देवता करते हैं, तथा उनपर नागों के जहर का असर नहीं होता। किन्तु, यह चमत्कार सदियों में एक दो बार ही होता है। फनी मुकुट राय की दो पत्नियाँ थी। एक पत्नी मुंडाओं से सम्बंधित थी और दूसरी असुरों से।”

ब्यूटी को बिमल लोहार की पत्नी पार्वती की हरी आँखें याद आ गईं।

*

मुंडा मुखिया से विदा लेकर शाम के धुंधलके में जब दोनों वापस कोल्हानम लौटे तो उनके पास एक और कहानी थी। वो कहानी जो पिछले दो हजार सालों से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक निरन्तर दोहरायी तो जाती थी, फिर भी इतिहास का हिस्सा नहीं थी।

9

20 अक्टूबर को पार्वती से मिलने के लिए खूंटी के सरिदकेल जाने का प्रोग्राम तय था। सुबह लगभग आठ बजे दोनों कोल्हानम से खूंटी के लिए निकल पड़े।

उन्हें बिमल असुर के घर पहुँचने में लगभग तीन घंटे लग गए। लेकिन, जब वे बिमल के घर पहुँचे तो वहाँ एक नया तमाशा उनका इन्तजार कर रहा था।

बिमल लोहार का दुआर ग्रामीणों से खचाखच भरा हुआ था। वे दोनों भी उसी भीड़ में शामिल हो गए।

भीड़ को चीरती हुई ब्यूटी आगे बढ़ी। सबसे आगे वाली लाइन में पहुँच कर उसने सामने जो नजारा देखा तो उसके रोंगटे खड़े हो गए। दुआर के बीचों-बीच पार्वती अपने बालों को बिखराए पागलों की तरह झूम रही थी। उसके आस-पास की औरतें उसके सर पर पानी, सरसों तेल, सिंदूर और पता नहीं क्या-क्या डाल रही थीं। वे सभी लगातार अपनी भाषा में नारे लगाते हुए चीख रहीं थीं।

फिर, अचानक ही कहीं से एक सँपेरा प्रगट हो गया। उसने अपने पिटारे में से एक छः फीट लम्बा नाग साँप निकाला और पार्वती की तरफ उछाल दिया। बिजली की फुर्ती से पार्वती ने उस साँप को लपक लिया। गुस्से से भरा साँप उसकी तरफ देखते हुए फुफकारने लगा। फिर, अचानक पार्वती ने अपनी जीभ को बाहर निकाला और साँप के फन पर रख दिया। उसकी इस हरकत को देखकर वहाँ मौजूद भीड़ पागल हो गई और जोर-जोर से चीखने लगी।

ब्यूटी बोली- “ये क्या पागलपन है? ये तो मर जाएगी।” उसके ठीक पीछे खड़े निशांत ने धीरे से उत्तर दिया - “इसे कुछ नहीं होगा। नागपूजक इसकी प्रैक्टिस बचपन से ही करते हैं।”

निशांत की बात सही निकली। धीरे-धीरे सबकुछ सामान्य होने लगा। भीड़ का चीखना, वाद्ययंत्र की आवाजें आदि धीरे-धीरे कम होने लगीं।

अचानक, वहाँ बिमल प्रगट हुआ। उसने बाल्टी भर पानी पार्वती के शरीर पर उड़ेल दिया। शरीर पर ठंडा पानी पड़ते ही अप्रत्याशित रूप से पार्वती

का झूमना कम हो गया, और उसकी चेतना वापस लौटने लगी। कुछ ही पलों बाद वह अपने वस्त्र समेटते हुए उठी, और घर के अन्दर चली गई।

ब्यूटी और निशांत भीड़ को चीरते हुए बाहर निकले और एक पलास के पेड़ के नीचे खड़े हो गए। तभी एक बच्चा दौड़ता हुआ उनके पास आया और बोला- “माँ, आपको घर के अंदर बुला रही है।”

ब्यूटी उसके साथ जाने को तत्पर हुई तो निशांत आशंकित स्वर में बोला- “आज वापस चलते हैं। कल फिर वापस आकर उससे मिल लेंगे।”

ब्यूटी उसकी सलाह को अनसुनी करते हुए किसी मूर्ति की तरह बच्चे के पीछे-पीछे चल पड़ी।

ब्यूटी जब पार्वती के कमरे में घुसी तो उसका कलेजा बुरी तरह धड़क रहा था। उसे लगा मानों बाहर वाला काला नाग इसी कमरे में छुप कर बैठा उसी का इन्तजार कर रहा हो।

वह सहमते हुए आगे बढ़ी। पार्वती ने उसे अपने पास बैठने का इशारा किया। ब्यूटी डरते-डरते उसके पास बैठ गयी। उसे महसूस हो रहा था मानो वह किसी विषकन्या के बगल में बैठी हो।

पता नहीं क्यों ब्यूटी को लग रहा था कि पार्वती अचानक ही उसपर झपट पड़ेगी और अपने विषैले दांत उसकी गर्दन में गड़ा देगी। पसीने से तर-बतर ब्यूटी ने निशांत का हाथ जोर से पकड़ लिया।

पार्वती ने कुछ कहने के लिए अपना मुँह खोला लेकिन, फिर चुप हो गई। इसके बाद उसने पास पड़े कागज के एक टुकड़े को फाड़ा और उसपर सामने रखी पेन्सिल से कुछ लिखकर ब्यूटी को थमा दिया।

न जाने क्या सोचकर ब्यूटी ने वह कागज बगैर पढ़े, अपने बैग में रख लिया और पार्वती की तरफ देखा। उसे लगा जैसे पार्वती आँखों ही आँखों में उसे जाने के लिए कह रही हो।

तभी अचानक कमरे में बिमल लोहार दाखिल हुआ। उसे देखते ही ब्यूटी तेजी से उठी और कमरे से बाहर निकलने के लिए तत्पर हुई। उसके पीछे-पीछे निशांत भी उठ खड़ा हुआ। लेकिन, तभी ब्यूटी को लगा मानो भींगी रस्सी जैसी कोई चीज उसकी कंधे पर गिरी हो। उसने जोर से चीखते हुए अपने कंधे पर गिरी उस चीज को अपने हाथ के झटके से हटाया। फिर, उसने घबरा कर नीचे फर्श की तरफ देखा। एक छोटा नाग धीरे-धीरे पलंग के नीचे सरक रहा था। ब्यूटी को लगा, जैसे उसपर हल्का नशा चढ़ रहा हो।

इस आकस्मिक घटना को देख पार्वती ने चीख कर बिमल से कुछ कहा। उसकी चीख सुनकर बिमल चुप-चाप कमरे से बाहर चला गया।

निशांत ने जल्दी से ब्यूटी का हाथ पकड़ा और उसे लगभग घसीटते हुए वहाँ से बाहर भागा। हतप्रभ ब्यूटी भी उसके साथ बाहर भागी।

तुम ठीक तो हो? उस आदमी ने तुम पर नाग शिशु फेंका था। शुक्र है, उसने काटा नहीं।”, निशांत के मुँह से शब्द फूटे।

“लेकिन, पार्वती चीख कर बिमल असुर से क्या कह रही थी?” ब्यूटी अपने गर्दन पर उभर आयीं फुंसियों को सहलाते हुए पूछा।

निशांत बोला, “वह बिमल से पूछ रही थी कि आखिर कितनी बार?

“क्या कितनी बार?” ब्यूटी ने उलझन भरे स्वर में सवाल किया। जवाब में निशांत ने अपना कंधा उचकाकर अपनी अनभिज्ञता जाहिर की।

*

जब दोनों वापस कोल्हानम लौटे तो रात हो चुकी थी। होस्टल आकर ब्यूटी जैसे ही वह अपने कमरे के दरवाजे पर लगे ताले को खोलने के लिए झुकी तो चौक गई। ताला पहले से ही खुला हुआ था।

उसे खुद पर गुस्सा आया। वह जल्दबाजी में दरवाजा खुला छोड़ कर चली गई थी। लेकिन, जब वह कमरे के अन्दर घुसी तो सन्न रह गई। उसका सारा सामान बिखरा पड़ा था। लग रहा था मानो किसी ने उसके कमरे की तलाशी ली हो।

वह दौड़ कर आलमारी की तरफ बढ़ी। उसकी नजर राय द्वारा दिए गए स्टील के डब्बे की तरफ गई। उसने डब्बा खोल कर देखा। नागों की मूर्तियाँ सुरक्षित थीं। अचानक, उसे बाथरूम में किसी के कराहने की आवाज सुनाई पड़ी। वह दौड़कर बाथरूम में गई। वहां का नजारा देखकर उसकी चीख निकल गई। अविनाश बाथरूम के फर्श पर गिरा हुआ था और उसके मुँह से फेन निकल रहा था। उसके होंठ भी काले पड़ गए थे। वह दौड़ कर नीचे भागी।

10

अधे घंटे में लोगों के सहयोग से अविनाश को अस्पताल पहुँचाया गया। डॉक्टर के अनुसार अविनाश पर किसी तेज जहर का असर हुआ था। ब्यूटी के लिए ये सबकुछ किसी अचम्भे से कम नहीं था। उसके कमरे में अविनाश के मिलने की खबर से पूरे कोल्हानम में तरह-तरह की चर्चायें गर्म हो रही थीं। लोग तरह-तरह की बातें कर रहे थे। ब्यूटी को इन बातों की परवाह नहीं थी। किन्तु, वह इस बात के लिए परेशान जरूर थी कि आखिर अविनाश उसके कमरे में क्या करने आया था।

शाम को जब निशांत मिला तो उसने उसे सारी बातें बतायी।

“मुझे तो यह तुम्हारे रिसर्च से जुड़ा मामला लगता है। हो सकता है, कोई तुम्हे रोकने की कोशिश कर रहा हो।”, निशांत ने संदेह जताया।

“कौन होगा वह?” ब्यूटी ने सवाल किया।

“यह तो अविनाश ही बताएगा।”, निशांत ने उत्तर दिया।

*

अगले दिन जब अविनाश को होश आया तो ब्यूटी उसके बेड के सामने ही खड़ी थी। होश में आने के बाद अविनाश अजीब नजरों से इधर-उधर देख रहा था। उसके बेड के आस-पास कई लोग खड़े थे, लेकिन उसके चेहरे से लग रहा था मानो वह किसी को भी पहचान नहीं पा रहा हो।

अविनाश! ब्यूटी ने धीरे से उसका नाम पुकारा। लेकिन अविनाश की तरफ से कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई।

मैत्रेयी ने पास खड़े डॉक्टर की तरफ प्रश्नवाचक नजरों से देखा। डॉक्टर धीरे से बोला-“लगता है इसके दिमाग पर जहर ने गहरा असर डाला है। नार्मल होने में अभी थोड़ा वक्त लगेगा।”

“कितना समय लगेगा?” निशांत ने सवाल किया। “कम से कम बीस दिन।”, डॉक्टर ने उत्तर दिया।

थोड़ी देर बाद जब सभी वहाँ से चले गए और सिर्फ ब्यूटी और निशांत बचे रह गए तब ब्यूटी ने निशांत से कहा- “चलो, डॉक्टर से बात करते हैं।”

डॉक्टर अपने कमरे में अकेला बैठा था। वे दोनों उसके सामने वाली कुर्सी पर बैठ गए। डॉक्टर ने सवालिया नजरों से उनकी तरफ देखा।

“सर, अविनाश के शरीर में किस तरह का जहर था?” ब्यूटी ने बातचीत की शुरुआत की।

“इस क्षेत्र के जंगलों में मिलने वाले नाग शिशु का बेहद गाढ़ा जहर रहा होगा। अविनाश भाग्यशाली था, इसलिए बच गया।”, डॉक्टर ने उत्तर दिया।

चिंता में डूबी ब्यूटी ने गंभीरता से अपना सिर हिलाया

निशांत धीरे से बोला- “हे देवी! तुम्हारी सुरक्षा हेतु नाग देवता तुम्हारे कमरे में निवास कर कर रहे हैं।”

ब्यूटी ने उसे घूर कर देखा।

थोड़ी देर बाद जब वे वापस कोल्हानम् पहुँचे तो उनका सबसे पहला काम ब्यूटी के कमरे में नाग की तलाश करना था। निशांत कहीं से एक साँप पकड़ने वाले को लेकर आया। उसने घन्टे भर तक ब्यूटी के कमरे और बाथरूम का चप्पा-चप्पा छान मारा, लेकिन, नाग का नामोनिशान तक नहीं मिला।

साँप पकड़ने वाले को विदा करने के बाद, निशांत गहरी साँस लेते हुए बोला- “मतलब, अविनाश का मामला तबतक रहस्य बना रहेगा, जबतक कि वह होश में न आ जाय।”

ब्यूटी ने सर हिला कर उसकी बात का समर्थन किया।

दो दिनों बाद जब वे अविनाश का हाल-चाल जानने के लिए अस्पताल पहुँचे तो पाया कि मैत्रेयी वहाँ पहले से मौजूद थी। उसने बताया कि अविनाश को हॉस्पिटल से डिस्चार्ज कर दिया गया है और डॉक्टर द्वारा उसे घर पर ही रह कर आराम करने की सलाह दी गई है। लेकिन, चूंकि उसका मेडिकल बिल बकाया है, इसलिए उसे रोक कर रखा गया है।

“कितने का बिल है?” निशांत ने पूछा।

“पच्चीस हजार रुपये का!” मैत्रेयी ने उत्तर दिया।

“कोई बात नहीं! हम तीनों मिल कर जमा देते हैं।”, ब्यूटी ने हल निकला।

निशांत और मैत्रेयी ने सहमति की मुद्रा में सर हिला दिया।

अस्पताल का बकाया बिल चुका दिए जाने के बाद मैत्रेयी बोली- “पापा ने कहा है कि अविनाश को अभी देखभाल की जरूरत है। नरोत्तम मिश्रा के

परिवार पर भरोसा नहीं किया जा सकता, इसलिए जबतक यह पूरी तरह ठीक न हो जाय इसे हमारे घर के आउटहाउस में ही रखना ठीक होगा।”

“बात तो ठीक है”, निशांत ने मैत्रेयी की बात का समर्थन किया।

अविनाश को लेकर मैत्रेयी जब अपने घर चली गई, तो निशांत धीरे से बोला- “बहुत ख्याल रखा जा रहा है, मरीज का! देखो, सिर्फ मैत्रेयी को भलीभांति पता था कि तुम कोल्हानम में नहीं हो। वह अविनाश को लेकर तुम्हारे कमरे में गई होगी। ये तो इश्क का मामला लगता है।

“लेकिन अविनाश को साँप ने कैसे काट लिया? और फिर, मैत्रेयी ने उसे बचाने की कोशिश क्यों नहीं की?” देखो, ये इश्क का मामला नहीं, बल्कि कुछ और ही मामला है।” ब्यूटी सोचते हुए बोली। उसकी दलील सुनकर निशांत भी सोच में पड़ गया।

*

होस्टल वापस पहुँचने के बाद, ब्यूटी थकान से निढ़ाल होकर बिस्तर पर गिर गई। शाम को पांच बजे नींद खुली तो उसे अचानक पार्वती द्वारा दी गई पर्ची की याद आई। उसने अपने बैग में हाथ डाल कर वह पर्ची निकाला तो चौक पड़ी पर्ची बिलकुल खाली थी। उसपर कुछ भी नहीं लिखा गया था।

‘लेकिन उस दिन पार्वती ने पेन्सिल से पर्ची पर कुछ लिखा जरूर था। शायद, पेन्सिल की नोंक टूटी हुई हो।’, उसने सोचा।

वह लपक कर किचन में गई, वहाँ से माचिस ला कर आठ दस तीलियों को एकसाथ जलाया और जली तीलियों की लकड़ियों से बने काले पाउडर को सावधानी के साथ पर्ची पर बिखेर दिया। उसके बाद उसने फूंक मार कर

जैसे ही पर्ची के ऊपर से काले पाउडर को उड़ाया, पर्ची पर अंग्रेजी में लिखे शब्द और चिन्ह स्पष्ट हो गए-

“बीअवेयर ऑफ़ तिस्स”

उसने तत्काल इस चिन्ह को निशांत को व्हाट्सआप किया- “ये तो स्वस्तिक का चिन्ह है न? लेकिन यह उल्टा क्यों है?”

उधर से निशांत ने उत्तर दिया- “मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा।”

ब्यूटी के लिए अब हरी आँखों वाली पार्वती एक पहेली बनती जा रही थी। वह सायकिल चलाती है, लोहे के गहने गढ़ती है, नाग के फन को चूमती है। और तो और, उसे खतरे से आगाह करने के लिए अंग्रेजी में सन्देश भी लिखती है।

फिर अचानक कमरे की खिड़की के बाहर नजर पड़ते ही उसका ध्यान भटक गया। नवम्बर का महीना चल रहा था। कोल्हानम के प्रांगण में डहेलिया, पिन्नता, पैसी, वर्बेना, मैरीगोल्ड, लार्कसपुर, एस्टर, फ्लॉस, पेपर फ्लावर, पोपी और सैटिन फ्लावर, एटलस फूल जैसे विदेशी फूल खिलने लगे थे। उसने सोचा- ‘लेकिन, इस पठार में तो असली बहार फरवरी- मार्च के महीने में आती है, जब सारा जंगल पलास के फूलों से भर जाता है।’

उसे पलास पर लिखी किसी कविता के भाव याद आ गए -

“जंगल में पलास के पेड़ पर,

फूल लग गए हैं,

यह किसी को बताना नहीं पड़ता।

क्योकि पलास के फूल जब खिलते हैं,
तो दिलोजान से सिर्फ
फूल ही फूल दीखते हैं
पत्ता नहीं दिखता।”

किन्तु, कोल्हानम में तो ‘सच’, पत्तों के बीच छुपा बैठा था।

*

ब्यूटी को कोल्हानम में आये चार महीने बीत गए थे। इस दौरान वह रिसर्च और रहस्य की एक ऐसी अनजानी दुनिया में भटकती रही थी, जहाँ धर्म, आस्था, परम्परा, संस्कृति, विश्वास और विज्ञान सब आपस में गड़मगड़ हो गए थे।

खुद में उलझती-सुलझती ब्यूटी जब लाइब्रेरी पहुँची तो देखा प्रो० विभीषण एक कोने में अकेले बैठे किसी पुस्तक के पन्ने पलट रहे थे। ब्यूटी ने उनके बेहद करीब जाकर उनका अभिवादन किया।

प्रो० विभीषण ने जैसे ही ब्यूटी को अपने सामने देखा, अजीबोगरीब तरीके से चौकते हुए उठ खड़े हुए। इसके बाद, अपने हाथ में ली हुई लाला-जिल्द वाली पुस्तक को एक तरफ रखते हुए बोले- “तुम्हारा रिसर्च प्रपोजल तैयार हो गया है। दिसंबर के प्रथम सप्ताह में रिसर्च कौंसिल की मीटिंग बुलाकर इसे पास करवा दूँगा।”

“सो काइंड ऑफ यू!, क्या मैं अपना रिसर्च प्रपोजल देख सकती हूँ?”, ब्यूटी ने बनावटी उत्साह दिखाते हुए पूछा।

उत्तर में प्रो० विभीषण खिसियाते हुए बोले- “तुम उसे देख कर क्या करोगी?”, फिर आवाज में थोड़ी नरमी लाते हुए बोले- “देखो, पीएचडी

थीसिस एक ऐसी गिफ्ट होती है, जो पीएचडी रिसर्च गाइड अपने शिष्य को देता है।

“मतलब, आप मेरी पीएचडी की पूरी थीसिस लिख देंगे?” ब्यूटी ने बनावटी प्रसन्नता दिखाते हुए सवाल किया।

“सिर्फ लिखूँगा ही नहीं, बल्कि किसी अन्तराष्ट्रीय जर्नल में तुम्हारे दो रिसर्च आलेख भी छपवा दूँगा।” प्रो० विभीषण ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया।

“लेकिन, मैं आपके इस एहसान का बदला कैसे चुका पाऊँगी? ब्यूटी ने सवाल किया।

प्रो० विभीषण अपनी आवाज में दुर्लभ किस्म की आत्मीयता लाते हुए बोले- “जनवरी माह में बीजिंग में एक इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस है। मैं इसमें अपना एक पेपर प्रेजेंट करूँगा। तुम्हें भी मेरे साथ चलाना होगा।”

“लेकिन सर, मैं वहाँ जाकर करूँगी क्या? मैंने तो अबतक कोई रिसर्च पेपर लिखा ही नहीं है।”, ब्यूटी ने घबराने का अभिनय किया।

“मैंने लिखा है। तुम्हें तो उसे सिर्फ अपने नाम से वहाँ प्रेजेंट भर कर देना है!” प्रो० विभीषण उसे प्लान समझाया।

उसकी बातें सुनकर ब्यूटी ने किसी आज्ञाकारी बच्चे की तरह अपना सर हिलाया।

*

अगले दिन जब ब्यूटी ने सारा वाकया निशांत को सुनाया तो वह चिंतित स्वर में बोला- “प्रो० विभीषण तुम पर कोई एहसान नहीं कर रहे बल्कि, वह तुम्हें अपने ऊपर डिपेंडेंट बना रहे हैं। भविष्य में वह किसी न किसी तरीके से तुम्हारा इस्तेमाल जरूर करेंगे। तुम्हें संभलकर रहना चाहिये।”

“वह मेरा कैसा इस्तेमाल करेंगे? “ब्यूटी ने चौकते हुए पूछा।

“मुझे तो लगता है वे अपने किसी फेक रिसर्च को तुम्हारे पीएचडी रिसर्च वर्क के नाम से दुनिया के सामने रखना चाहते हैं।”, निशांत ने आशंका जतायी।

“क्या मतलब?” ब्यूटी चौक पड़ी।

“मतलब यह कि वह अपने झूठ को तुम्हारे पीएचडी वर्क के रूप में इंटरनेशनल मंच पर प्रस्तुत करके उसे ‘सच का सर्टिफिकेट’ दिलाना चाहते हैं।”, निशांत ने अपनी आशंका को स्पष्ट किया।

उसकी बातें सुनकर ब्यूटी के माथे पर चिन्ता की लकीरें साफ-साफ झलकने लगीं।

*

अगले दिन सुबह-सुबह मैत्रेयी उसे खोजती हुई कैटीन में आ गई और उसे देखते ही बोली बोली- “पापा तुम्हारी रिसर्च प्रोजेक्ट को फाइनल कर रहे हैं। उनसे लाइब्रेरी में जाकर मिल लो।”

अनमनी सी ब्यूटी ने ‘हाँ’ की मुद्रा में सर हिलाया और उठ खड़ी हुई।

थोड़ी देर बाद जब वह लाइब्रेरी पहुँची तो देखा प्रो० विभीषण एक कुर्सी पर बैठे शायद उसका ही इन्तजार कर रहे थे। उसे देखते ही वे बोले-“रिसर्च प्रोजेक्ट के मुख्य पृष्ठ पर तुम्हारा नाम टाइप करवाना था। नाम क्या लिखना होगा?”

“नगनिकापुत्री ब्यूटी!”, ब्यूटी ने लापरवाही से उत्तर दिया।

“नगनिका ब्यूटी’ या ‘नगनिकापुत्री ब्यूटी’?” प्रो०विभीषण की आवाज में एक अजीब सी उत्तेजना साफ झलक उठी।

“नगनिकापुत्री ब्यूटी!” ब्यूटी ने उत्तर दिया।

“और तुम्हारी माता का क्या नाम है?” स्पष्ट रूप से प्रो० विभीषण सांसें तेज चल रही थीं।

“अवंतीपुत्री नगनिका,” ब्यूटी ने उत्तर दिया।

और तुम्हारी नानी का? प्रो० विभीषण के माथे पर पसीने की बूंदें साफ दिख रही थीं।

“गायत्रीपुत्री अवंती।”, ब्यूटी ने सहजता के साथ उत्तर दिया।

उत्तर सुनकर प्रो० विभीषण, कुछ क्षण तक शब्दहीन से बैठे उसे एकटक देखते रहे।

“क्या हुआ सर? आपकी तबियत तो ठीक है न?”, ब्यूटी ने उसके व्यवहार में आये अचानक बदलाव को महसूस किया।

“कुछ भी तो नहीं! मैं तो बिल्कुल ठीक हूँ!”, कहते हुए फीकी हँसी हँसते, लम्बे-लम्बे कद भरते प्रो० विभीषण लाइब्रेरी से बाहर निकल गए।

*

ब्यूटी जब वापस होस्टल लौटी तो रात के आठ बज रहे थे। गुलाबी ठंड ने उसे आलसी बना दिया था। हाथ-पैर धोकर वह सीधे रजाई में घुस गई। उसके बाद उसने सिरहाने के पास रखे बैग को अपनी गोद में ले लिया और उसके अंदर हाथ डालकर सँपेरे द्वारा दिए गए लोहे के सिक्के को अपने हाथों में लेकर गहराई से मुआयना करना शुरू किया। सिक्के के एक तरफ नागों के सिंहासन पर बैठे बुद्ध ‘ध्यान की मुद्रा’ में थे और दूसरी तरफ ‘धर्म-चक्र’ बना हुआ था।

ब्यूटी ने पिछले चार महीने के घटना-क्रम को याद करना शुरू कर दिया- राय ने कहा था कि ये सिक्का ईसा-पूर्व एक सौ साल पुराना अर्थात् पुष्यमित्र शुंग के काल का है। इसे ढालने वाले असुर थे। फिर, इसपर गौतम बुद्ध की तस्वीर क्यों है? इसपर बौद्ध ‘धर्म-चक्र’ क्यों बना है?

पुष्यमित्र तो गैर-बौद्ध सम्राट था, वह 'गौतम बुद्ध' और 'धर्म-चक्र' वाले सिक्के क्यों ढलवायेगा?

वह उठकर अपने स्टडी टेबल पर गई। फिर, उसने आवश्यक लेंस की मदद से सिक्के के हर हिस्से का बारीकी से मुआयना करना शुरू किया। अचानक, उसके मुँह से सिसकारी निकल गयी। सिक्के के बाहरी किनारों पर वृत्त की शकल में उलटे स्वस्तिक बने हुए थे।

ब्यूटी ने झटपट अपना मोबाइल फोन निकाला और गूगल पर 'उलटे स्वस्तिक' के बारे में जानकारी मांगी।

उसके अचम्भे की कोई सीमा नहीं रही- 'उल्टा स्वस्तिक' एक बुद्धिस्ट चिन्ह था। उसे एक झटके से बिमल असुर की पत्नी की 'तिस्स' वाली चेतावनी याद आ गयी।

'मुझे बौद्ध मत मानने वालों से क्या खतरा हो सकता है? फिर प्रो० विभीषण भी तो बौद्ध है। वह मुझे बीजिंग क्यों ले जाना चाहता है? हे भगवान! ये क्या चल रहा है?', सोचते-सोचते, उसे एक बार फिर से अपने सिर के अंदर बम के धमाके सुनाई पड़ने लगे।

उसके मन में एक विचार कौंधा- "उसे एक बार फिर से पार्वती से मिलना चाहिए।"

11

अगले दिन दोपहर के वक्त जब वह पार्वती के घर पहुँची तो देखा पार्वती बरामदे में बैठी अपने बच्चे को भोजन करा रही थी। ब्यूटी को देखते ही उसकी बाँछें खिल गई। वह दौड़ती हुई बाहर आई और उससे लिपट गई और उसका हाथ पकड़कर बरामदे के अंदर ले गई। उसकी आत्मीयता की गहराई को महसूस कर ब्यूटी चकित रह गई।

पार्वती उसे बैठने को कह कर दौड़ कर घर के अन्दर गयी और एक गिलास में पानी के अलावा घर की बनी कोई मीठी पकवान ले आई। ब्यूटी ने नोटिस किया कि आज वह पिछली बार की तरह मिटटी के कुल्हड़ में कोई अजीब सा पेय लेकर नहीं आई थी।

ब्यूटी ने विश्वास के साथ पकवान का एक टुकड़ा अपने मुँह के अन्दर डाला और ग्लास का सारा पानी एक साँस में गटक गई। इसके बाद ब्यूटी ने अपने हाथों से पार्वती के हाथों को दबाते हुए बहुत आत्मीयता से पूछा- “ये सब क्या है पार्वती? मुझे किससे खतरा है?”

उत्तर में पार्वती उसका हाथ पकड़ कर बोली- “आओ, मैं तुम्हें कुछ दिखाती हूँ।”

दोनों पैदल चलती हुई ताजना नदी के किनारे पहुँचीं। बरसात का मौसम बीत चुका था। नदी में पानी काफी कम था। पार्वती उसे लेकर ताजना नदी के दूसरे किनारे पर पहुँची। ब्यूटी के सामने लाल मिटटी से बना एक विशाल मैदान था। जहाँ सैकड़ों बड़े-बड़े पत्थर बिखरे पड़े थे।

ब्यूटी ने प्रश्नवाचक नजरों से पार्वती की तरफ देखा।

“इस मैदान में आज से दो हजार साल पहले एक भीषण नरसंहार हुआ था। जिसमें मगध के राजा बृहद्रथ के भगोड़े बौद्ध सैनिकों ने सैकड़ों निर्दोष असुरों की हत्या कर दी थी।”, पार्वती ने बिना साँस लिए उत्तर दिया।

“लेकिन उन्होंने ऐसा क्यों किया था? असुरों ने उनका क्या बिगाड़ा था?”, ब्यूटी ने सवाल किया।

“क्योंकि उन्हें शक था कि अंतिम मौर्य शासक बृहद्रथ के खिलाफ असुरों ने पुष्यमित्र शुंग की मदद की थी। किन्तु, यह सच नहीं था- असुरों ने बृहद्रथ नहीं बल्कि विदेशी यवनों के खिलाफ पुष्यमित्र शुंग की मदद की थी।”, पार्वती उदास स्वर में बोली।

“ये मदद किस प्रकार की थी?” ब्यूटी ने सवाल किया ।

“असुरों ने लोहे के आयुध, और तमाम तरह के साजो-सामान पुष्यमित्र शृंग की सेना को उपलब्ध कराये थे । इस लड़ाई में बृहद्रथ के भगोड़े बौद्ध सैनिक, आक्रमणकारी यवनों की मदद कर रहे थे ।” पार्वती ने उत्तर दिया ।

“लेकिन यवनों के खिलाफ युद्ध में ये बौद्ध धर्मावलम्बी इन आक्रमणकारी यवनों की मदद क्यों कर रहे थे?” ब्यूटी ने आश्चर्य से पूछा ।

“बौद्ध धर्मावलम्बी नहीं, बल्कि बौद्ध धर्म से बहिष्कृत कुछ बौद्ध मठों के मठाधीश इन सैनिकों के पीछे थे । मौर्य वंश का शासन खत्म होते ही वे देशद्रोही बन गए थे ।” पार्वती ने उत्तर दिया ।

ब्यूटी बोली- “हाँ, ये कहानी मैंने सुनी है । किन्तु, मुझे पता नहीं था कि उन्होंने इस इलाके में इतना बड़ा नरसंहार कराया था । ये बातें तो इतिहास के पन्नों से भी गायब हैं । इसका तो किसी ने जिक्र ही नहीं किया ।”

कौन करता? बौद्ध इतिहासकार तारानाथ करता या बौद्ध ग्रन्थ दिव्यावदान में होता?”, पार्वती रुआंसी होकर बोली ।

“हाँ ये तो ठीक है, कोई बौद्ध इतिहासकार इसकी चर्चा क्यों करता ।”, ब्यूटी ने सिर हिलाया ।

“देखो, आज भी बौद्ध धर्म से बहिष्कृत हत्यारों का एक संगठन तिस्स जिन्दा है, जो पुष्यमित्र शृंग और असुरों को भारत में बौद्ध धर्म के खात्मे की वजह मानता है । और, उनसे बदला लेने के लिए ये संगठन पिछले दो हजार सालों से बेहद गुप्त रूप से पुष्यमित्र शृंग के वंशजों की हत्याएँ करवा रहा है, तथा असुरों के इतिहास की हर निशानी को मिटा रहा है । लेकिन, वे अभी तक, अपने मकसद में पूरी तरह सफल नहीं हो पाये हैं ।”, पार्वती बोली ।

“लेकिन तुम कौन हो पार्वती?” ब्यूटी ने उससे बेहद आत्मीयता से पूछा ।

“हम अपने असुर पूर्वजों के कब्रों के रक्षक है। मेरे जैसे और भी हैं। जब कुछ वर्षों बाद यहाँ आओगी तो तुम्हे इस घर में कोई और पार्वती और बिमल मिलेंगे। उनके चेहरे बदल जायेंगे, लेकिन, उनका नाम और मकसद नहीं बदलेगा। यह पूरा गाँव कब्र के रक्षकों का है।” पार्वती ने गर्व के साथ उत्तर दिया।

“देखो, यह तिस्स संगठन पिछले दो हजार सालों से असुरों की कब्रों को नेस्तनाबूद कर उनके हर चिन्ह को यहाँ से हमेशा के लिए मिटा देना चाहता है। और हम, अपने पुरखों की इस निशानी को आत्म-बलिदान देकर भी आज तक बचाये हुए हैं।”, वह आगे बोली।

“लेकिन तुम तो काफी पढ़ी-लिखी लगती हो।”, ब्यूटी स्नेहपूर्वक उसका चेहरा अपने हाथों से स्पर्श करती हुई बोली।

“मैं ‘फ्रेंच’ और ‘जर्मन’ भी बोलती हूँ।”, पार्वती हँसी। ब्यूटी को लगा जैसे वह आकाश में उड़ रही हो।

“लेकिन, इनलोगों से मुझे क्यों खतरा है। मैं तो असुर जनजाति से नहीं हूँ?” ब्यूटी ने सवाल किया।

“वक्त आने पर तुम्हे सब पता चल जायेगा।”, पार्वती बेहद आत्मीयता से उसका हाथ दबाते हुए बोली, और फिर उसका हाथ थाम कर वापस गाँव की तरफ लौट पड़ी।

*

जब वे वापस गाँव पहुँचीं तो ब्यूटी को सिक्के की याद आ गई। उसने उलटे स्वस्तिक चिन्ह वाला लोहे का सिक्का निकाल कर पार्वती के सामने रख दिया।

पार्वती ने एक नजर सिक्के पर डाली। अनायास उसकी आंखें क्रोध से लाल हो गयीं। वह जलते स्वर में बोली- “ये सिक्के, तिस्स के उन नराधम

आततायियों के अत्याचार के 'सबूत' और 'असुरों की गुलामी' की निशानी हैं। उन्होंने तलवार की नोक पर निरीह और निर्दोष असुरों को गुलाम बना कर उनसे सालों तक ये सिक्के ढलवाये और इस इलाके में अपनी हुकूमत चलाते रहे।”

फिर, वह कुपित स्वर में बोली- “इस पठार का आत्मसम्मान, और वनवासियों का प्रतिरोध कभी कमजोर नहीं पड़ता। विन्ध्य के पहाड़ों से उतरकर टिड्डियों के दलों की तरह मुंडा इस इलाके में आये। वे हजारों सालों से देवी विन्ध्यवासिनी की सेवा कर रहे थे। वे देवी के आदेश से छोटानागपुर के पठारों की ओर बढ़े। फिर, उनका सीधा सामना इन आततायियों से हुआ। उन्होंने महज पंद्रह दिनों की लड़ाई में इन पथभ्रष्ट बौद्ध हत्यारों को नागों के जहर से बुझे विषैले तीरों से धराशायी कर दिया। इसके बाद, नाग के जहर से मरे बौद्ध आततायियों की लाशों को इसी युद्धभूमि में करंज और महुआ की सूखी लकड़ियों से राख कर करकरी और ताजना नदियों के जल में प्रवाहित कर दिया।

लेकिन, दुर्भाग्य से मुंडा योद्धा उन बौद्ध आततायियों के नेता को नहीं पकड़ पाए। वह अपने कुछ साथियों के साथ बच निकला और भाग कर बोधगया पहुँचा और सारी कहानी प्रमुख बौद्ध भिक्षु को सुना कर उनकी मदद मांगी।

लेकिन, मठ प्रमुख का गुस्सा उल्टे उसपर ही फूट पड़ा। उसपर बौद्ध धर्म के 'दया' और 'करुणा' के मौलिक नियमों के उल्लंघन का आरोप लगा कर उसे हमेशा के लिए बौद्ध धर्म से बहिष्कृत कर दिया गया।

क्रोध और अपमान की आग में जलता धर्म-बहिष्कृत वह मागध पाटलिपुत्र से वापस दक्षिण के पठार की ओर लौटा और दुनिया की नजरों से दूर हजारीबाग के पास सीताकुंड की निर्जन पहाड़ियों में अपना मठ बनाया। उसने अपने संगठन को 'उलटे स्वस्तिक' चिन्ह से निरूपित किया और नाम दिया 'तिस्स'। उल्टा स्वस्तिक सनातनियों के प्रति उसकी नफरत का प्रतीक था। तिस्स नामक इस संगठन का एकमात्र नारा था- 'बुद्ध या युद्ध!'

“लेकिन, उन पथभ्रष्ट बौद्ध आतताइयों खात्मे के बाद भी इस इलाके से असुर कैसे विलुप्त हो गए?” ब्यूटी ने पूछा।

पार्वती ने सिर हिलाते हुए बताया- “इस भीषण युद्ध के बाद बचे हुए असुरों ने अपने राजा महिषासुर की तपस्थली गुमला की पहाड़ियों में वापस लौटने का निर्णय किया। वे वापस जाकर गुमला की पहाड़ियों में गुम हो गए। लेकिन, कुछ असुर परिवार अपने पूर्वजों के कब्रों की रक्षा करने के लिए करकरी और तसना नदियों के किनारे रुके रह गए। उन्होंने पहचान के लिए अपने पूर्वजों के कब्रों पर बड़े-बड़े पत्थर गाड़ दिए। बाद में ये विशाल पत्थर इस इलाके के इतिहास और परम्परा का हिस्सा बन गए। आज भी इस इलाके में निवास करने वाले मुंडा और असुर जनजाति के लोग अपने जीवन के हर बड़े अवसर को ऐतिहासिक पहचान देने के लिए बड़े-बड़े पत्थर गाड़ते हैं।”

इतना सब बताने के बाद पार्वती मौन हो गयी। लेकिन, पार्वती की बातें सुनने के बाद ‘सच’ और ‘मिथक’ की अजीबोगरीब तूफानी हवायें अलग-अलग दिशाओं से आ आकर ब्यूटी के दिमाग को झकझोर रही थीं।

“तिस्र से उसे क्यों खतरा है?”, यह वह सवाल था जो अब भी उसके दिमाग को मथ रहा था। लेकिन, इससे पहले कि वह पार्वती से कुछ पूछ पाती, बिमल लोहार ने बरामदे में कदम रखा। उसने एक नजर ब्यूटी की तरफ डाली। फिर, न जाने पति-पत्नी के बीच इशारों-इशारों में क्या बात हुई, वह चुपचाप घर के अन्दर चला गया।

पार्वती ने ब्यूटी की तरफ नजर फेरा, और गुस्से से बिफरती हुई बोली- “पुरुषों के खून में ‘अनिश्चय’ और ‘अविश्वास’ भरा होता है। और, अगर मामला किसी स्त्री से जुड़ा हो तो ये लोग नृशंस हो जाते हैं।”

ब्यूटी को पार्वती की बातों का सन्दर्भ और निहितार्थ समझ में नहीं आया। किन्तु, ब्यूटी को पता नहीं था कि बिमल के दिमाग में क्या चल रहा है, तथा वह अचानक बाहर आकर क्या गुल खिलायेगा। इसलिए, ब्यूटी ने

कोई खतरा उठाये बिना जल्दी से जल्दी वहाँ से निकलने में ही अपनी भलाई समझी।

पार्वती ने भी उसे रोकने की कोशिश नहीं की।

12

जब पार्वती से मिलकर ब्यूटी वापस कोल्हानम् लौटी तो देखा, होस्टल के गेट के बाहर खड़ा निशांत उसका ही इन्तजार कर रहा था। वह, उसे देखते ही बोला- “जेपीएससी से बुलावा आ गया है। आज ही राँची जा रहा हूँ। पंद्रह दिनों बाद वापस लौटूँगा। लेकिन, तुम अपना ध्यान रखना, मैं तुम्हारे आस-पास किसी गहरे षडयंत्र को महसूस कर रहा हूँ।” उसकी बात सुनकर ब्यूटी ने सहमति की मुद्रा में धीरे से अपना सर हिलाया और होस्टल के गेट से अंदर चली गई।

*

थोड़ी देर बाद जब ब्यूटी होस्टल से फ्रेश होकर लाइब्रेरी पहुँची तो देखा, पिछली बार की भाँति ही प्रो० विभीषण शाक्य लाइब्रेरी के सबसे किनारे वाली मेज पर झुके किसी पुस्तक का अध्ययन कर रहे थे। ब्यूटी लपकते हुए उनके पास पहुँची और पीछे से आवाज लगाई- ‘गुड आफ्टरनून सर!’

उसकी आवाज से चौक प्रो० विभीषण एक झटके से उसकी तरफ मुड़े। अचानक टन्न की आवाज हुई। पुस्तक से टकराकर लोहे की कोई चीज मेज से नीचे गिरी। ब्यूटी झटके से नीचे झुकी, लोहे की उस वस्तु को उठाते हुए पल भर के लिए चौकी, लेकिन स्वयं को नियंत्रित करते हुए उस वस्तु को उठाकर प्रो० विभीषण के हाथ में थमा दिया।

किन्तु, जैसे ही वह वस्तु प्रो० विभीषण के हाथ से टकराई, उनके चेहरे का रंग उड़ गया। वे उस वस्तु को जेब में रखकर, अपने बायें हाथ की कलाई को दायें हाथ के पंजे से दबाये बाहर की तरफ भागे।

ब्यूटी हतप्रभ होकर उन्हें बाहर भागते देखती रह गई। अचानक उसकी नजर मेज पर पड़ी लाला-जिल्द वाली एक बेहद पुरानी पुस्तक पर पड़ी। उसने पुस्तक को अपने हाथों में लिया और उसके पन्ने पलट कर देखने लगी।

इस पुस्तक में शुंग, कण्व और सातवाहन वंश के राजाओं की दो हजार सालों की वंशावली दर्ज थी। एक बार फिर से उसके सिर के अन्दर बम फटने लगे।

आरम्भ में ये तीन वंश अलग-अलग थे लेकिन, बाद में सिर्फ एक ही वंशावली आगे बढ़ती दिख रही थी। ऐसा लग रहा था, जैसे बाद के वर्षों में तीनों वंश आपस में मिल कर एकाकार हो गए हों।

दिलचस्प बात यह थी कि इस वंशावली को लगातार अपडेट किया जा रहा था। वंशावली के शुरुआती नामों को लाल रंग की स्याही से घेर कर काटा गया था। शुरु के कटे नामों में दो नाम 'सुशर्मा' और 'देवभूति' थे। लेकिन, इनके बाद भी सैकड़ों नाम काटे गए थे।

उसे पार्वती की बात याद आ गयी। जिसने बताया था कि शुंग, कण्व, और सातवाहन राजवंश के वंशजों की दो हजार सालों से खोज- खोज कर लगातार हत्यायें की जा रही हैं। उसने इस वंशावली के सबसे नए सदस्यों का नाम देखने के लिए जैसे ही पुस्तक के पन्ने पलटने शुरू किये कि अचानक उसे महसूस हुआ कि कुछ ही पलों में प्रो० विभीषण वहाँ वापस लौटने वाले हैं। उसने जल्दी-जल्दी अपने मोबाईल फोन के कैमरे से उस पुस्तक के कुछ पन्नों की तस्वीरें ली और पुस्तक को वहीं टेबल पर छोड़ दूसरी जगह आ कर बैठ गयी।

उसके अनुमान सही था। कुछ ही पल बाद प्रो० विभीषण बदहवास से लाइब्रेरी में घुसे और बिजली की तेजी से उस पुस्तक को अपने बैग में डाल लड़खड़ाते कदमों से बाहर की तरफ भागे।

ब्यूटी ने उन्हें टोकने की कोशिश नहीं की।

थोड़ी देर बाद ब्यूटी लाइब्रेरी से वापस होस्टल लौटी और बिस्तर पर लेटकर अपनी मोबाइल फोन से ली गई पुस्तक के पन्नों की तस्वीरों का अवलोकन करने लगी।

“पुष्यमित्र शुंग के वंश में कुल दस शासक हुए थे। शुंग वंश के अंतिम शासक देवभूति की हत्या उसके सचिव वासुदेव ने 75 ईसवी पूर्व में कर दी और कण्व वंश की स्थापना की। कण्व वंश में चार शासक हुए।

अंतिम कण्व शासक सुशर्मा की हत्या 30 ईसवी पूर्व सिमुक ने कर दी और एक नए राजवंश आंध्र सातवाहन वंश की नींव रखी।

‘शुंग, कण्व और आंध्र सातवाहन इन तीनों राजवंशों में एक बात समान थी कि इनके शासनकाल में वैदिक धर्म का तेजी से विस्तार हो रहा था। लेकिन, आगे इस पुस्तक में मोटे मोटे अक्षरों में एक सन्देश लिखा था जो बेहद चौका देने वाला था-“शुंग, कण्व और आंध्र वंश के सभी शासक बौद्ध धर्म विरोधी थे। इन्होंने हजारों बौद्ध विहारों को नष्ट कर, लाखों बौद्ध भीखुओं की हत्या करवाई है। अतः भारत में बौद्ध धर्म के पुनर्जीवन के लिए इनके वंश का समूल नाश कर देना तिस्स संगठन के प्रत्येक सदस्य का एकमात्र लक्ष्य है।”

ब्यूटी ने अनुमान लगाया कि तत्कालीन प्राचीन भारत में धर्मान्ध बौद्ध मतावलंबियों की ‘तिस्स’ नाम की एक ऐसी संस्था थी, जो लगातार वैदिक धर्म को संरक्षण देने वाले राजाओं की हत्याओं के षड्यंत्र में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से शामिल थी। ये वह संस्था थी जो बुद्ध के ‘अहिंसा’ और ‘करुणा’ के मार्ग को छोड़ कर रक्तपात के माध्यम से बौद्ध धर्म को भारत में फैलाना चाहती थी।

उसे विभीषण शाक्य का चेहरा याद आ गया। उसे राय और पार्वती की बातें याद आ गईं। निसंदेह, कातिलों की यह तिस्स संस्था अब भी सक्रिय है, और लगातार अपने काम को अंजाम दे रही है।

अचानक उसे लोहे की उस वस्तु भी याद आ गई, जिसके स्पर्श के बाद प्रो० विभीषण काँपते हुए लाइब्रेरी से बाहर भागे थे। दरअसल वह वस्तु राय द्वारा उसे दिए गए नागों की मूर्तियों में से एक मूर्ति थी। उसे अचानक लगा जैसे कुछ कड़ियाँ जुड़ने लगी हैं। वह उठकर आलमारी की तरफ गई। राय द्वारा दिए गए स्टील के डब्बे को आलमारी से निकाल कर खोला। फिर, नाग की एक मूर्ति को निकाल कर बारीकी से मुआयना करने लगी। मूर्ति हलकी चिपचिपी थी। “किन्तु, ये चिपचिपाहट किस चीज की है?”, उसने खुद से सवाल किया।

अचानक उसे लगा मानों फिर से उसके दिमाग में धमाके हो रहे हों- ‘हे भगवान! ये चिपचिपाहट कुछ और नहीं बल्कि किसी नाग का गाढ़ा जहर है। ‘तो क्या उस दिन राय के कमरे में उसे किसी नागशिशु ने काटा था जो इस डब्बे में बंद था और प्रतिदिन इन मूर्तियों पर थोड़ा-थोड़ा जहर उड़ेल रहा था? क्या, इसीलिए राय ने उसे आगाह किया था कि अपने अलावा किसी अन्य को इन मूर्तियों को स्पर्श करने नहीं देना है? अविनाश ने जरूर विष से डूबी इन्ही मूर्तियों को चुराने की कोशिश की होगी। फिर, कल प्रोफेसर विभीषण शाक्य की भी बुरी हालत इन्ही मूर्तियों में से एक को स्पर्श कर लेने से हुई होगी।’

ब्यूटी के मस्तिष्क में लगातार धमाके हो रहे थे। ‘लेकिन विभीषण के पास ये मूर्ति कैसे पहुँची?’, उसके मन में सवाल उठा।

‘जरूर, अविनाश ने उसके कमरे से एक मूर्ति चुराकर अपने पास रख ली होगी। प्रो० विभीषण को यह बात पता थी। इसीलिए, उसने मैत्रेयी से कहा होगा कि वह अविनाश को अस्पताल से सीधे अपने घर लेती आये।’, ब्यूटी ने अंदाज लगाया।

अचानक, उसके दिमाग में एक बड़ा सवाल बम की तरह फटा- 'ये जहर उसपर क्यों असर नहीं कर रहा है?' क्या उसे भी बचपन से नागों का जहर देकर नाग के जहर के प्रति उसकी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाई गई है। क्या ये काम मम्मी ने किया होगा? उसकी मम्मी अर्थात- 'नगनिका'। लेकिन मम्मी के नाम के पीछे क्या रहस्य है? आखिर प्रोफेसर विभीषण इस नाम के पीछे क्यों पड़ा हुआ है?"

उसने मोबाईल फोन निकला और सर्चइंजन में 'नगनिका' शब्द टाइप किया।

इन्टरनेट पर नगनिका के बारे में जो सूचनायें थीं, वे उसे आंदोलित करने वाली थीं- महान सातवाहन नरेश गौतमी पुत्र शत्कारणी की पत्नी थी नागवंशी 'नगनिका'। भारत का पहला ऐसा सिक्का जिसपर किसी नारी की तस्वीर हो, वह नगनिका की ही थी। सम्राज्ञी नगनिका को 'स्त्री-शक्ति' का पर्याय माना जाता है। उसके उपलब्धियों का वर्णन, नासिक के निकट नानाघाट अभिलेख में आज भी उपलब्ध है। लेकिन असली जानकारी जो उसे आपादमस्तक झकझोरने वाली थी, वह थी-सातवाहनों में अपने नाम के आगे माता का नाम लगाने की परम्परा। कहीं इसका मतलब यह तो नहीं कि उसके नाम के आगे उसकी मम्मी नागनिक का नाम देखकर प्रो० विभीषण उसे सातवाहन -शुंग वंश से जुड़ा समझ रहे हो? इस विचार ने उसे एक अजीब से कौतुहल मिश्रित उत्तेजना से भर दिया।

अचानक उसे अपने कमरे के नीचे कुछ कोलाहल सा सुनाई पड़ा। कारण जानने के लिए उसने खिड़की से नीचे झांक कर देखा। नीचे होस्टल के गेट के सामने भीड़ लगी हुई थी। वह सीढ़ियों से उतर कर नीचे भागी। भीड़ को चीरते हुए भीतर झाँका तो सन्न रह गई। धरती पर प्रो० विभीषण शाक्य निर्जीव पड़े हुए थे। उनके होंठ काले पड़ गए थे।

ब्यूटी तेजी से नीचे झुकी। उसने प्रो० विभीषण की छाती को पंप करना शुरू किया। कोई हरकत नहीं हुई। इसके बाद वह उनके शरीर के हर हिस्से को

रगड़ने लगी। उसके काफी रगड़ने के बाद भी प्रोफेसर में शरीर में कोई हरकत नहीं हुई। उसने उनका नब्ज टटोला। नब्ज स्वामोश थी।

“सर अब नहीं रहे!” उसने अफसोस भरे स्वर में मौजूद लोगों को सूचना दी।

इसके बाद वह जल्दी से उठी और वापस अपने कमरे की तरफ भागी। आलमारी खोल कर जल्दी से स्टील का डब्बा निकला और अपनी मुठ्ठी में कैद नाग की मूर्ति को वापस डब्बे के अन्दर रख, डब्बे को अपने बैग में डालकर वह तेजी से कमरे से बाहर निकल गई।

वह कोल्हानम के गेट पर पहुँची। इधर-उधर देखा। सामने सड़क खाली थी। वह सड़क को पार करते हुए, तेज कदमों से सामने के घने जंगल की तरफ बढ़ती चली गई।

लगभग तीस मिनट तक लगातार चलने के बाद उसने अपने बैग से छोटा सा चाकू निकाला और एक खाली जगह देखकर छोटा सा गड्ढा खोदना शुरू कर दिया। उसने लगभग बीस सेंटीमीटर गहरा गड्ढा खोदने बाद मूर्तियों से भरे उस डब्बे को उसमें डालकर, गड्ढे को मिटटी से भर दिया। उसके बाद उसने सामने पड़े एक बड़े पत्थर को लुढ़काते हुए गड्ढे के ऊपर रखा और तेज कदमों से चलती हुई वापस कोल्हानम लौट आई। नाग की एक मूर्ति अब भी उसकी मुठ्ठी में थी।

कोल्हानम के गेट से थोड़ी ही दूरी पर एक कार की पिछली सीट पर बैठे राय ने उसे जंगल से वापस आते देख, इत्मीनान की सांस ली। इसके बाद, ब्यूटी के कोल्हानम के गेट के अन्दर जाने के थोड़ी देर बाद वह कार से उतरा और ब्यूटी के कदमों के निशान का पीछा करता हुआ घने जंगल में गुम गया।

*

ब्यूटी जब वापस होस्टल के गेट पर पहुँची तो पाया कि प्रो० विभीषण की डेड-बॉडी को उठाया जा चुका था। किन्तु, प्रो० नरोत्तम मिश्र और कई अन्य प्रोफेसर घटनास्थल पर झुण्ड लगा कर अभी भी इसी विषय पर चर्चा कर रहे थे। वह भी चुपचाप जाकर उनके पीछे खड़ी हो गई। वे सभी इस बात पर आश्चर्य कर रहे थे कि आखिर विभीषण अपनी कमर में लोडेड पिस्टल खोंस कर लड़कियों के होस्टल के गेट के ठीक बाहर क्या कर रहा था। और, दूसरी बात जिसपर चर्चा गर्म थी वह यह थी कि आखिर इस होस्टल के आसपास किस प्रजाति साँप है, जो काट कर पल भर में अदृश्य हो जाता है।

उनकी बातें सुनकर ब्यूटी ने अपनी बायीं हाथ में मौजूद नाग की मूर्ति को धीरे से दबाया। फिर, उसके चेहरे पर एक हलकी सी मुस्कान कौंध कर लुप्त हो गयी।

विष-लेपित लोहे की यह निर्जीव नाग की मूर्ति यकीनन उसका सुरक्षा कवच थी। उसने मन ही मन राय को धन्यवाद दिया।

*

अगले दिन सुबह-सुबह दरवाजा पीटने की आवाज के साथ ब्यूटी की नींद खुली। उसने हड़बड़ाते हुए दरवाजा खोल दिया। उसके बायें हाथ की मुठ्ठी में नाग की एक मूर्ति अब भी कैद थी। बाहर कुछ अजनबी खड़े थे। ब्यूटी ने सवालिया नजरों से उनकी तरफ देखा।

“मैडम, पता नहीं वह विषधर साँप किस कमरे में छिपा बैठा है? इसीलिए, हम इस होस्टल के हर कमरे की तलाशी ले रहे हैं।”, उनमें से एक ने उत्तर दिया।

उसकी बात सुनकर ब्यूटी दरवाजे के एक तरफ हो गई। कमरे में घुसकर उन्होंने उसके कमरे का चप्पा-चप्पा छान मारा, लेकिन, उन्हें साँप का नामोनिशान तक नहीं मिला। वे निराश होकर, कमरे बाहर निकल गए।

उनके जाने के बाद ब्यूटी ने अपने कमरे की खिड़की से नीचे सड़क की तरफ देखा तो चौक पड़ी। मैत्रेयी, किसी पत्थर की मूर्ति की भांति होस्टल के गेट पर खड़ी थी। अचानक, उसने सिर उठा कर कातर नजरों से ब्यूटी की खिड़की की तरफ देखा- दोनों की आँखें टकराईं। ब्यूटी ने बेहद सहजता के साथ खिड़की का पर्दा गिरा दिया और तेजी से अपने कमरे से निकल कर होस्टल के गेट के बाहर आ गयी।

मैत्रेयी अब भी गेट के पास ही खड़ी थी। ब्यूटी उसके पास पहुँची और उसके बायें हाथ को अपने दाहिने हाथ में लेकर गमगीन स्वर में बोली- ‘मुझे सर की मौत का बेहद अफसोस है!’। मैत्रेयी ने धीरे से सिर हिलाते हुए अपनी आँखें बंद कर ली। उसकी बंद आँखों से मोटे-मोटे आंसू टपकने लगे। ब्यूटी उसे अपने दायें हाथ से सहारा देती हुई, धीमे-धीमे उसके घर की तरफ बढ़ने लगी।

मैत्रेयी के घर के गेट पर अविनाश खड़ा था। ब्यूटी को देख अविनाश न जाने क्यों सहम सा गया और वापस घर के अन्दर जाने के लिए मुड़ा। तभी, ब्यूटी ने उसे आवाज देकर अपने पास बुलाया और भारी लहजे में बोली- “इसे संभालकर अंदर ले जाओ, और इसे बिस्तर पर लिटा कर जल्दी से वापस आओ- मुझे तुमसे कुछ बात करनी है!”

अविनाश ने पहली बार उसकी आवाज में इतना दबदबा महसूस किया।

मैत्रेयी को कमरे में पहुँचाकर अविनाश जैसे ही बाहर आया, ब्यूटी ने अचानक ही अपने दायें हाथ से अविनाश के बायें हाथ की कलाई को पूरी ताकत से पकड़ा और उसे खिंचते हुए एक किनारे ले गई और बिना किसी भूमिका के कठोर स्वर में उससे पूछा- “मेरे कमरे से मूर्ति चुराने के लिए तुमसे किसने कहा था?”

“किसी ने भी तो नहीं।”, वह घबराए हुए स्वर में बोला।

“देख अविनाश, झूठ मत बोल। मुझे सब पता है।”, उसकी कलाई पर अपनी पकड़ और ज्यादा मजबूत करती हुई ब्यूटी बोली।

अविनाश ने जोर लगाकर उसकी पकड़ से अपनी कलाई छुड़ाने की कोशिश की। लेकिन, ब्यूटी की पकड़ फौलादी थी।

“वैसे तुम्हारी यादाश्त कब लौटी?” उसने अविनाश को घूरते हुए पूछा।

यादाश्त की बात पर अविनाश ने फिर घबराई हुई नजरों से ब्यूटी तरफ देखा, फिर धीरे से बोला-“कल”

“मूर्ति में जहर वाली बात क्या मैत्रेयी को मालूम है”?, ब्यूटी ने पूछा।

“नहीं!” उसने धीरे से सिर हिलाया।

“तुमने विभीषण सर को क्यों मारा?” अविनाश ने पहली बार ब्यूटी पर हावी होने की कोशिश की।

जवाब में ब्यूटी गुस्से से फुफकारती हुई बोली- तुने जहर में डूबी नाग की मूर्ति मेरे कमरे से चुरा कर विभीषण सर को दी..... और मुझसे पूछता है कि मैंने उन्हें क्यों मारा!”

अविनाश ने भयभीत नजरों से ब्यूटी की तरफ देखा। गुस्से की वजह से जिसकी आँखें बिलकुल हरी हो गई थीं।

अचानक ब्यूटी ने दायें हाथ को हटा, बायें हाथ से उसकी कलाई को जोर से पकड़ा, और उसे धकियाती हुई बोली-“तुम निकलो यहाँ से, अभी के अभी! और, भूल कर भी कभी कोल्हानम की तरफ पलट कर मत देखना!”

अविनाश के भयभीत होकर एक झटके से उसके बायें हाथ से अपनी कलाई छुड़ायी और डर से काँपता हुआ कोल्हानम के गेट की तरफ सरपट भागा, और बगैर कुछ सोचे-समझे कोल्हानम के गेट के ठीक सामने खड़ी एक वेन का पिछला दरवाजा खोल कर उसमें समा गया।

उसके बैठते ही वह वेन अपने गंतव्य की तरफ कुछ इस प्रकार निकल पड़ी मानो उसके ड्राईवर को पहले से पता हो कि इस सवारी की मंजिल कहाँ है।

ब्यूटी ने पलट कर पश्चिम की तरफ देखा। लाल होता सूरज कोल्हान की पहाड़ियों के पीछे डूब रहा था।

यह तो तय था कि उसके कमरे में चोरी करवाने वाला विभीषण शाक्य ही था, और वह स्वयं मूर्ति पर लगे जहर से मारा गया था। लेकिन, एक बात ब्यूटी को परेशान कर रही थी कि अगर प्रो० विभीषण को मालूम था कि उसपर नाग का जहर चढ़ रहा है, फिर भी उसने अस्पताल की जगह, उसके होस्टल में आने की क्यों सोची? फिर उसकी कमर में दो-दो पिस्टल क्या कर रहे थे? क्या वह उसे मारना चाहता था? अगर ऐसा था तो वह उसे मारने के लिए इतना व्यग्र क्यों था कि उसने अपनी जान तक की परवाह नहीं की?

13

लेकिन, इधर कोल्हानम् के इतिहास विभाग में कुछ और ही तमाशा चल रहा था। ब्यूटी के अलावा सभी नए शोधार्थियों के रिसर्च-प्रस्ताव पास कर दिए गए थे। ब्यूटी से खिन्न, प्रो० मित्रा ने रिसर्च प्रस्तावना जमा करने की अंतिम तारीख घोषित कर दी।

प्रो० विभीषण शाक्य के असामयिक निधन के बाद उसकी जगह पर प्रो० भाजोहरी पांडा इतिहास विभाग में नए डीन बनकर आये। प्रो० मित्रा अब भी डिपार्टमेंट के हेड बने हुए थे। लेकिन, हिस्ट्री डिपार्टमेंट में अब भी प्रो० मित्रा की ही तूती बोलती थी, क्योंकि पीएचडी रिसर्च बोर्ड के सारे सदस्य अभी भी प्रो० मित्रा के गुट के ही लोग थे।

जब रिसर्च प्रस्ताव जमा करने की अंतिम तिथि विभागीय रूप से घोषित हो गई तो ब्यूटी के सामने रिसर्च प्रस्ताव जमा करने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं बचा। मजबूरन, दो दिनों में किसी तरह अपना रिसर्च प्रस्ताव तैयार कर वह रिसर्च बोर्ड के सामने प्रस्तुत हो गई।

कॉन्फ्रेंस हाल में उसके अलावा कुल मिला कर आठ लोग थे। हेड, डीन और पांच मेम्बर, जो यकीनन प्रो० मित्रा के करीबी थे। आठवें व्यक्ति ब्यूटी के रिसर्च गाइड प्रो० यादव थे।

साक्षात्कार आरम्भ होते ही प्रो० मित्रा ने उससे पहला सवाल किया- “मैंने तुम्हे जो सजेस्ट किया था, वही टॉपिक हैं न?”

ब्यूटी ने धीरे से कहा- “नहीं सर, कुछ और है।”

उसका उत्तर सुनते ही पहले से ही उससे नाराज चल रहे प्रो० मित्रा आग-बबूला हो गए- “मैंने तुम्हे मना किया था। उस टॉपिक पर रिसर्च नहीं होगा।”

फिर, वह एक-एक शब्द चबाते हुए बोले- “मैंने जो टॉपिक तुमको सजेस्ट किया था, उसी पर रिसर्च होगा।”

ब्यूटी सिर झुकाए, स्वामोशी के साथ उनकी बातें सुन रही थी।

उसकी चुप्पी से प्रो० मित्रा की हिम्मत और बढ़ गई। वह उसे धमकाते हुए बोले- “आज लास्ट डेट है। अगर आज तुम्हारा सिनोप्सिस स्वीकृत नहीं हुआ तो तुम्हारा पीएचडी के रजिस्ट्रेशन का मामला खत्म!”

ब्यूटी ने सिर उठा कर रिसर्च बोर्ड में शामिल अन्य विशेषज्ञों की तरफ देखा। सभी सदस्य अपनी-अपनी नास्ते की प्लेटों पर झुके, ड्राई फ्रूट्स का मजा ले रहे थे।

इसी बीच एक सदस्य ने सिर उठाया और ब्यूटी को संबोधित करते हुए बोला- ‘गुरुजी जो सलाह दे रहे हैं उसे मान लो। बहुत अनुभवी व्यक्ति हैं।’

मैने भी इनके ही अंडर में पीएचडी किया है। तुमको कोई प्रॉब्लम नहीं होगी।”

उसकी बात सुनकर प्रो० मित्रा ने गर्व भरी नजरों से ब्यूटी की तरफ देखा। ब्यूटी ने असहाय भाव से अपने रिसर्च गाइड की तरफ देखा- प्रो० यादव इन सब बातों से अनजान नास्ते करने में मशगुल थे।

थोड़ी देर में जब नास्ते की प्लेटें खाली हो गईं, और बोर्ड के मेम्बरान ने सॉफ्ट ड्रिंक से अपने-अपने हलक में फंसे काजू के टुकड़ों को पेट के अन्दर ठेल लिया, तब ब्यूटी प्रो० मित्रा को संबोधित करते निर्णायक स्वर में हुए बोली- “सर, मैं अपने पसंद के टॉपिक पर ही पीएचडी करूंगी या फिर नहीं करूंगी!”

“तो फिर मत करो न!” इतना कहकर प्रो० मित्रा अपनी कुर्सी से उठे और बाहर जाने के लिए तत्पर हुए।

प्रो० मित्रा को ऐसा करते देख डॉ० राम लखन यादव, जो अबतक खामोशी के साथ नास्ता करने में व्यस्त थे, अनपेक्षित रूप से कुर्सी से उठ खड़े हुए और गुस्से से भड़क कर प्रो० मित्रा को गाली देते हुए चिल्लाये- “भो” के मित्रा! साला! कितना मुश्किल से एक ठो पीएचडी स्टूडेंट मिला है और तुम उसको भी भगा रहा है। हेड होने का फायदा उठाता है बे? साला, खुद पांच-पांच ठो पीएचडी एक साथ करवा रहा है, और हमें एक भी करवाने नहीं देता है। तेरी माँ की ३ण् अगर तुम इसका पेपर पर साइन नहीं करेगा तो हम तुझे यहीं पर उठा कर पटक देगा।”

प्रो० यादव के तेवर देख कर प्रो० मित्रा की बोलती बंद हो गयी। वह कॉन्फ्रेंस हाल से भागने के लिए तत्पर हुए।

प्रो० मित्रा के इरादे भांपते ही ब्यूटी चिल्लायी- “देखिये, मित्रा सर बाहर भाग रहे हैं। इतना सुनते ही प्रो० यादव हनुमानजी की तरह कूद कर प्रो० मित्रा के ठीक सामने खड़े हो गए, और प्रो० मित्रा की कलाई जोर से पकड़ते

हुए गुस्से से चिल्लाये- “मितरा, तुम इस बच्ची को बहुते टार्चर कर रहे हो। हम कृष्ण के वंशज हैं, कहीं अन्याय होता है तो महाभारत रच देते हैं। आज कुच्छो हो जाय, तोहरा के बिना साइन करवले जाये त न देब!”

कुछ पल के लिए सारे हाल में सन्नाटा छा गया। प्रो० मित्रा ने नजरें उठा कर बोर्ड के अन्य सदस्यों की तरफ देखा। सभी सदस्य भावहीन मुद्रा में तमाशा देख रहे थे।

अनुभवी प्रो० मित्रा ने स्थिति की गंभीरता को भाँपते हुए, झटपट रंग बदला और ब्यूटी के रिसर्च प्रपोजल के आप्रोवल लेटर पर साइन कर दिया। उसकी देखा-देखी बोर्ड के दूसरे सदस्यों ने भी झटपट साइन कर चैन की साँस ली। फिर, कुछ ही पलों में सारा माहौल ऐसा हो गया मानों यहाँ कुछ हुआ ही न हो।

थोड़ी देर में जब सभी बाहर चले गए और कॉन्फ्रेंस हाल में सिर्फ ब्यूटी, प्रो० मित्रा और प्रो० भाजोहरी पांडा रह गए, प्रो० मित्रा ने ब्यूटी को घूरते हुए कहा- “रिसर्च प्रपोजल तो पास हो गया, लेकिन देखता हूँ, पीएचडी की फाइनल रिपोर्ट पर बोर्ड का साइन कैसे करवाती हो?”

प्रो० मित्रा की धमकी सुनकर ब्यूटी की आँखों में अचानक खून उतर आया। वह धीरे से बुदबुदाई -“सर, आपकी छाती पर चढ़ कर! वैसे ही जैसे रिसर्च प्रपोजल को कराया था!”

उसके बेहद पास खड़े प्रो० पांडा ने चौकते कर ब्यूटी की तरफ देखा। एक क्षण के लिए दोनों की आँखें मिलीं। प्रो० पांडा को लगा जैसे ब्यूटी की आँखों में अचानक बिजली कौंधी हो। उसने घबराकर प्रो० मित्रा की तरफ देखा और धीरे से बोला “मित्रा, आजकल लड़की लोग का माथा पर दुग्गा सवार रहता है। जास्ती जोर जबरदस्ती नहीं करने का!”

प्रतिक्रिया में प्रो० मित्रा ने सहमति की मुद्रा में धीरे से अपना सिर हिलाया।

ब्यूटी ने एक बार फिर घूर कर प्रो० मित्रा को देखा, और बिना कुछ बोले, तेज कदमों से चलती हुई कॉन्फ्रेंस हॉल से बाहर निकल गई।

“मित्रा, ये बहुत डेंजर लड़की है! इससे थोड़ा दूरी बना कर रहो,” प्रो० भाजोहरी पांडा ने ब्यूटी के रिसर्च प्रपोजल की फाइल को धीरे-धीरे को पलटते हुए प्रोफेसर मित्रा को सलाह दी। फिर, वह अचानक चौकते हुए बोले- “अरे मित्रा, ये लड़की तो असुर जनजाति और शृंग, कण्व और सातवाहन डायनेस्टी का रिलेशन का उप्पर रिसर्च कर रहा है।”

प्रो० मित्रा ने चौकते हुए ब्यूटी के रिसर्च प्रपोजल की फाइल प्रो० भाजोहरी पांडा के हाथों से अपने हाथों में ले ली और उसे पढ़ते हुए बोले- “ये वह टॉपिक नहीं है, जिसके बारे में उसने हमको पहले बोला था। ये तो बहुत अलग टॉपिक है। लेकिन, उसने हमें इसके बारे में पहले क्यों नहीं बताया?” मित्रा ने चौकते हुए सवाल किया।

उत्तर में प्रो० पांडा धीरे से बोले- “होगी कोई वजह, वरना इतना हंगामा नहीं कराती!

उसके बाद उसने प्रो० मित्रा के हाथ से ब्यूटी के रिसर्च प्रपोजल की फाइल वापस लेकर लोहे की आलमारी के अन्दर लॉक कर दिया।

*

दो दिनों की छुट्टी के बाद जब प्रो० पांडा वापस डिपार्टमेंट लौटे तो सीधे लोहे की आलमारी के पास गए। जेब से चाबी निकालकर आलमारी का दरवाजा खोल, ब्यूटी का रिसर्च प्रपोजल बाहर निकाला। पहला पन्ना पलटा, उसके बाद दूसरा, तीसरा, चौथा३३ण् सारे के सारे पन्ने खाली थे। उसने गहरी साँस लेते हुए रिसर्च प्रपोजल की फाइल को वापिस आलमारी में बंद कर चाबी वापस अपनी जेब में रखा और चुपचाप कमरे से बाहर निकल गये।

14

महीने भर में ब्यूटी की जिन्दगी पूरी तरह बदल गई थी। जितनी तेजी से अजीबो-गरीब घटनायें घट रही थीं, वे उसे एक बेहद हाहाकारी भविष्य की तरफ इशारा कर रही थीं। कुल मिला कर उसके पास सिर्फ एक आदमी था, जिसपर वह भरोसा कर सकती थी और वह राँची में दारोगा की ट्रेनिंग ले रहा था। अब, सिर्फ दो लोग थे जो उसकी असली पहचान पर से पर्दा हटा सकते थे- 'राय' और 'पार्वती'। उसने तय किया कि राय से मिलने के लिए वह कल सुबह ही राँची के लिए निकल पड़ेगी।

*

अगले दिन सुबह-सुबह चार बजे ही ब्यूटी की नींद खुल गयी। वह जल्दी से फ्रेश होकर सीढ़ियों से नीचे उतरी। तेज कदमों से चलती हुई वह प्रो० विभीषण के घर पहुँची। तीन-चार बार बेल बजाने के बाद मैत्रेयी के कमरे की बत्ती जली। थोड़ी देर बाद उसने गेट खोला।

गेट पर खड़ी ब्यूटी ने बगैर किसी भूमिका के कहा, “ला, कार की चाभी दे, राय से मिलने राँची जा रही हूँ!

उसने गौर से मैत्रेयी के चेहरे का मुआयना किया। राय का नाम सुनकर उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं आया था। ब्यूटी ने इत्मीनान की साँस ली।

मैत्रेयी रोबोट की तरह कार की चाभी लाने के लिए गेट से वापस घर के अन्दर की गई और अन्दर से कार की चाभी लाकर उसे ब्यूटी को सौप, फिर से जम्हाई लेती हुई वापस, घर के अन्दर चली गई।

*

मैत्रेयी की कार ड्राइव करती ब्यूटी ठीक तीन घंटे बाद राँची विश्वविद्यालय पहुँची। सुबह के आठ बज रहे थे। आज पहली बार राय उसे कमरे से बाहर टहलता हुआ दिखा। राय ने जैसे ही उसे आते देखा, उसके चेहरे पर चमक आ गई।

बाहर धूप खिली हुई थी। धूप में ब्यूटी ने पहली बार राय के चेहरे को गौर से देखा- उसके सिर के दाहिने हिस्से पर किसी चोट का बड़ा निशान था। राय के आँखों की पुतलियाँ हलके हरे रंग की थीं।

वह बेहद सम्मान के साथ उसे कमरे के अन्दर लेकर गया और बोला-“बैठो अम्मा!”

इस नए संबोधन से ब्यूटी चौक गयी- “अम्मा? ये क्या है?”

“बताता हूँ, धीरज धरो।”, वह धीमे स्वर में बोला।

“फिर कोई कहानी?” वह हंसी।

राय ने झिझकते हुए सिर हिलाया और एक नयी कहानी शुरू हो गई।

*

“ईसा के जन्म से दो सौ साल पहले पुष्यमित्र शुंग और उसके परवर्ती वैदिक राजाओं के शासनकाल में बौद्ध मठों का वर्चस्व और राजनीतिक शक्ति भले ही कम गई थी, किन्तु, बुद्ध के विचार यहाँ के लोगों की आत्मा में रच बस गए थे। वैदिक धर्म ने बुद्ध के कई विचारों को अपने धर्म-दर्शन का हिस्सा बनाकर, उन्हें विष्णु के दसवें अवतार के रूप में स्वीकार कर लिया था। बुद्ध की ‘ध्यान परम्परा’ जल्दी ही वैदिक दर्शन का एक हिस्सा बन गयी। बौद्ध धर्म के प्रभाव के कारण देश भर में पशु बलि प्रथा काफी कम हो गई थी। बुद्ध के उपदेशों के अनुसार ‘प्रेम’, ‘अहिंसा’, और ‘करुणा’ का सन्देश भारत के जन-जन में रच-बस गए थे।

पुष्यमित्र शुंग ने भी अपनी नीति में बदलाव लाते हुए साँची, भरहुत जैसे पुराने बौद्ध मठों की मरम्मत का काम करवाना शुरू कर दिया था। उसके उत्तराधिकारी कण्व शासकों ने भी बुद्ध के विचारों को अपनी राज्य नीति में शामिल कर लिया था।

उधर, दक्षिण के सातवाहन राजा भी खुले दिल से बौद्ध विहारों को दान दे रहे थे। इस तरह बौद्ध, जैन, आजीवक जैसे सम्प्रदाय सनातन धर्म संस्कृति में एकाकार होने लगे थे।

यह सनातन के उत्कर्ष का महान काल-खंड था। लेकिन, दूसरी तरफ तिस्स संगठन अब भी बदले की आग में जल रहा था। इसकी मंशा वैदिक धर्म को पूरी तरह खत्म कर उसके स्थान पर कट्टर और असहिष्णु बौद्ध धर्म की स्थापना कर उसे भारत की एकमात्र, धार्मिक, सैनिक और राजनैतिक शक्ति बनाना था। लेकिन, तिस्स संगठन की राह के सबसे बड़े रोड़े शुंग, कंव और सातवाहन वंश के शासक और उनके वंशज थे।

अब तिस्स के सदस्य बेहद गुप्त तरीके से शुंग, कंव और सातवाहन वंश के शासकों और उनके वंशजों की तलाश करते और मौका देखकर उनकी हत्या करवा देते।

“हे भगवान! क्या सचमुच ऐसा हुआ था?” ब्यूटी के मुहँ से निकला।

राय सिर हिलाते हुए बोला-“तिस्स का पहला शिकार पुष्यमित्र शुंग का पोता देवभूति था। तिस्स ने देवभूति के मंत्री वासुदेव कण्व को अपने षड्यंत्र में शामिल कर उसकी हत्या करवा दी थी। लेकिन, तिस्स संगठन की आशा के विपरीत देवभूति भी कट्टर वैदिक निकला। कहते हैं, तिस्स संगठन के इरादे की भनक वासुदेव को लग गई थी, अतः वह इन बौद्ध नामधारी षड्यंत्रकारी संगठन के खिलाफ बेहद कड़े कदम उठाने लगा। उसने तिस्स से प्रभावित कई षड्यंत्रकर्ता बौद्ध भिक्षुओं को ‘देश निकाला’ की सजा दे कर अपने इरादे स्पष्ट कर दिए।

इन्ही मे से कई राज्य-निष्कासित बौद्ध भिक्षु मगध से भागकर आंध्रदेश चले गए। वहाँ उन्होंने सातवाहन नरेश सिमुक को मगध के 'कण्व' राजाओं के खिलाफ भड़काया। राजलोभ से अभिभूत सिमुक ने कण्व वंश के अंतिम शासक सुशर्मा की हत्या कर दी।

इसके बाद इन बौद्ध भिक्षुओं के प्रभाव में आकर सिमुक ने दक्षिण भारत के कई हिन्दू मंदिरों को ध्वस्त कर वहाँ बौद्ध मठों का निर्माण करवाया। किन्तु, अपने शासन के अंतिम दिनों में सिमुक, तिस्स के पाखंडी बौद्ध भिक्षुओं के नियंत्रण से मुक्त होने लगा था। जिसके बाद तिस्स ने षड्यंत्र करके सिमुक की भी हत्या करवा दी।”

“अद्भुत कहानी है”, ब्यूटी के मुँह से शब्द फूटे।

राय ने बोलना जारी रखा- “सिमुक ने मगध अभियान के दौरान शुंग वंश की एक राजकुमारी गौतमी बालाश्री से विवाह किया था। जिस समय तिस्स द्वारा सिमुक की हत्या करवाई गई, उस समय उन दोनों का पुत्र शातकर्णी महज पांच साल का था। शातकर्णी की रगों में शुंग और सातवाहनों का साझा खून दौड़ रहा था। रानी गौतमी बालाश्री इस हत्यारे, ‘तिस्स’ के क्रियाकलापों से अवगत थी। इसलिए, उसने अपने अल्पवयस्क पुत्र को अठारह वर्षों के लिए छोटानागपुर के पठारों में भेज दिया।

उसने अपने वंश की रक्षा के लिए इन पठारों में कोल्हानम् नामक एक गुप्त संगठन का निर्माण किया। इस संगठन में सिर्फ छोटानागपुर पठार के असुरों और मुंडाओं को शामिल किया गया था। ये वही सनातनधर्मी वनवासी थे, जिन्होंने यवनों के खिलाफ निर्णायक युद्ध में गौतमी बालाश्री के प्रपितामह सनातन धर्मी पुष्यमित्र शुंग की मदद की थी।

कहा जाता है कि ‘तिस्स’ ने गौतमी पुत्र शातकर्णी की हत्या के बीस प्रयास किये, लेकिन, हर बार ‘कोल्हानम् संगठन’ के असुर और मुंडा जनजाति के सनातन धर्मवीरों ने उनके प्रयास विफल कर दिए।”

कुछ पल खामोश रहने के बाद राय बोला- ‘तिस्स’ और ‘कोल्हानम्’ की ये लड़ाई पिछले दो हजार सालों से चलती आ रही है। सदियाँ बीत गई हैं, लेकिन आज भी उस हत्यारे बौद्ध संगठन, ‘तिस्स’ के सदस्य शृंग, कण्व और सातवाहनों के वंशजों के खून के प्यासे हैं। किन्तु, उनके निशाने पर सनातन-धर्मी असुर और मुंडाओं की संतानें भी हैं।

“तो क्या सचमुच शृंग, और सातवाहनों के वंशज आज भी जीवित हैं?”, ब्यूटी ने आश्चर्य से पूछा।

“हाँ, सिर्फ एक है”, राय ने धीरे से उत्तर दिया।

“कौन है वह?”, ब्यूटी ने व्यग्र होकर पूछा।

राय खामोश रहा।

“ठीक है, मत बताइए! लेकिन, ये तो बताइए कि आप कौन हैं?”, ब्यूटी ने जोर देकर पूछा।

“मै मणिधर राय मुंडा हूँ। हमारे पूर्वज पिछले दो हजार साल से शृंग, कण्व और सातवाहनों के वंशबीज की रक्षा कर रहे हैं।”, राय गर्व भरे स्वर में बोला।

“तब तो आप यकीनन उस प्राचीन संगठन ‘कोल्हानम्’ के सदस्य होंगे?” ब्यूटी ने गंभीरता से सवाल किया।

राय ने सहमति की मुद्रा में सिर हिलाया:

“किन्तु, कोल्हानम् के सदस्य उस तथाकथित वंशबीज की प्राण रक्षा के लिए इतना तत्पर क्यों रहते हैं।”, ब्यूटी ने सवाल किया।

“क्योंकि उनका मानना है कि जब भी भारत पर विधर्मियों का शासन होगा, शृंग, कण्व और सातवाहनों के वंशज धर्म-रक्षक के रूप में उनके विरुद्ध हर प्रतिकार का नेतृत्व करेंगे।”, राय विश्वास ने विश्वास भरे स्वर में उत्तर दिया।

“देश पर इतने विदेशी आक्रमण हुए, हजारों मंदिर टूटे, लाखों हत्यायें हुई। लेकिन, वे धर्म रक्षक पिछले 1000 सालों से कहाँ छुप कर बैठे हैं? ब्यूटी ने व्यंग भरे स्वर में सवाल किया।

राय बोला- “वे छिप कर ही रहते हैं, लेकिन उनके नेतृत्व का पैनापन कभी कम नहीं होता। वे हमेशा सक्रिय रहते हैं और अलग-अलग रूपों में आते हैं। उनके जैसे धर्मयोद्धाओं के रहते सनातन संस्कृति कभी खत्म नहीं होगी।”

“मैं नहीं मानती, ये सब बकवास है!” ब्यूटी बोली।

“विभीषण शाक्य कैसे मरा ब्यूटी? राय ने अचानक सवाल किया।

इससे पहले कि ब्यूटी कुछ जवाब दे वह बोला- “जब वह जहर के प्रभाव से लड़खड़ाते हुए भाग रहा था, तुम उसे बचा सकती थी। क्यों नहीं बचाया उसे? और फिर अविनाश कैसे मरा?”

ब्यूटी को लगा मानो उसके शरीर का सारा रक्त किसी ने एक बार में ही खिंच लिया हो।

वह झिझकते हुए बोली -“पता नहीं क्यों?, मन में विभीषण शाक्य को बचाने की करुणा पैदा नहीं हुई।”

“तुम्हे विभीषण से इतनी नफरत क्यों हो गयी थी?” राय ने पूछा।

“वह जिस प्रकार के रिसर्च करवा रहा था, उससे लगता था कि वह वैदिकों और बौद्ध धर्मावलम्बियों के बीच नफरत पैदा करने वाले किसी बहुत बड़े षड्यंत्र का हिस्सा था। यकीनी तौर पर, उसके रिसर्च के झूठे निष्कर्षों से हमारे सनातन समाज में दरारें बढ़तीं और रक्तपात भरे भीषण जातीय संघर्ष होते, जिसमें लाखों निर्दोष लोगों की जानें जातीं। और हजारों सालों की हमारी सनातन धर्म संस्कृति खत्म हो जाती”, ब्यूटी ने उत्तर दिया।

“तुमने अविनाश को बचाने की कोशिश क्यों नहीं की?” राय ने पूछा।

“अविनाश की गतिविधियों को देख कर तय था कि वह विभीषण शाक्य का ही आदमी था। मैंने जब उसकी कलाई को जोर से पकड़ा, मेरे बायें हाथ में लगा नाग का जहर उसके पसीने में मिश्रित हो गया। जब वह बदहवास सा भाग रहा था, तब मुझे लगा कि ये तो मर जायेगा।

“लगा था या यकीन था?” राय ने पूछा।

“यकीन था!” ब्यूटी ने सिर हिलाते हुए उत्तर दिया।

“जब तुम्हे लगेगा कि कोई सनातन धर्म समाज को तोड़ने की साजिश कर रहा है, तो क्या तुम उसकी जान ले लोगी?” राय ने हँसते हुए पूछा।

“हाँ!” उसकी आवाज में अजीब प्रकार की दृढ़ता थी।

अगर ऐसा है तो तुम्हारी तलाश तिस्स संगठन के 2000 हत्यारे आज भी कर रहे हैं। फिलहाल, तुम उनकी नजरों से ओझल हो, लेकिन वे तुम्हारी तलाश में आयेंगे, बार-बार आयेंगे। वो अनंत काल से ऐसा करते आ रहे हैं। वे आगे भी ऐसा ही करेंगे।”, राय ने चेतावनी दी।

ब्यूटी स्तब्ध हो राय को ताकती रह गयी। राय के चेहरे पर विश्वास की अद्भुत चमक विराजमान थी

“देखो, आज तिस्स संगठन के कार्य करने की शैली बदल चुकी है। अब वे सिर्फ वैदिक शासकों के वंशबीजों की तलाश कर उनकी हत्या ही नहीं करते, बल्कि विभीषण शाक्य जैसे प्रोफेसरों की मदद से पुरातात्विक और ऐतिहासिक साक्ष्यों की गलत व्याख्या कर सनातन धर्म समाज में उन्मादी विभाजन की दरारें पैदा कर सनातन समाज के ही युवाओं को सनातन धर्म संस्कृति के खिलाफ इस्तेमाल कर रहे हैं।”, राय चेतावनी भरे शब्दों में बोला।

“और यह सबकुछ वे भगवान् बुद्ध के नाम पर कर रहे हैं।” ब्यूटी अपना सिर हिलाती हुई चिंतित स्वर में बोली।

राय ने धीरे से सिर हिलाया और मोबाइल फोन को उसकी तरफ बढ़ाते हुए पूछा- “क्या तुम इन्हें पहचानती हो?”

ब्यूटी ने हाथ बढ़ा कर राय की मोबाइल फोन अपने हाथों में लेकर तस्वीर पर नजर डाली। तस्वीर में कोई युवक अपने कंधे पर एक लेडिज बैग लटकाए किसी हिन्दू देवता की प्राचीन मूर्ति के मस्तक पर अपने पैर रखकर प्रसन्न मुद्रा में खड़ा था।

“हे भगवान! यह तो वह अविनाश है। इसके बगल में प्रो० विभीषण शाक्य भी प्रसन्नचित्त खड़ा दिख रहा है”, ब्यूटी आश्चर्य करती हुई बोली।

राय बोला- “यह तस्वीर तीन साल पहले की है। दरअसल, रांची के पास एक जगह है-बुंदू। वहाँ से लगभग 10-15 किलोमीटर की दूरी पर कांची नदी के किनारे आदिवासियों का एक छोटा सा गाँव है। गाँव का नाम है- हाराडीह। कुछ वर्ष पहले इसी गाँव के पास काँची नदी की रेत से हजार साल पुराना आदिशक्ति देवी का एक प्राचीन मंदिर प्रगट हुआ। इसकी खबर मिलते ही विभीषण शाक्य, अविनाश को साथ लेकर इस पुरातात्विक स्थल पर बौद्ध धर्म के अवशेषों की तलाश में गया। किन्तु उन्हें यहाँ घोर निराशा हाथ लगी। क्योंकि उन्हें यहाँ प्राचीन हिन्दू मंदिर के अलावा सिर्फ हिन्दू-देवी देवताओं की मूर्तियाँ ही मिली। इसके बाद निराशा से भरे अविनाश ने एक हिन्दू देवता की टूटी हुई मूर्ति के सिर पर अपना पैर रख कर यह तस्वीर खिचवाई थी।

ब्यूटी बेहद गंभीर स्वर में बोली-“सोचिये, अविनाश के मन में वैदिकों के प्रति कितनी नफरत भरी गई होगी! परन्तु मुझे लगता है कि मैंने इसकी नाहक ही जान ले ली। हम इसके मन से नफरत के जहर को निकाल सकते थे।”

“नहीं! अगर तुम इसे नहीं मारती तो यह तुम्हे मार देता।”, राय ने सपाट लहजे में अपनी राय रखी।

“यह आप कैसे कह सकते हैं?” ब्यूटी ने सवाल किया ।

“क्योंकि मैं अविनाश को तो नहीं जानता, किन्तु, तिस्स के धर्मान्ध और हिंसक अनुयायियों को जानता हूँ?” राय विश्वास भरे स्वर में बोला ।

“लेकिन, ये तस्वीर आपको कहाँ से मिली?” ब्यूटी ने जिज्ञासा दिखाई ।

“अविनाश की जेब में मिले मोबाइल फोन से ।” राय ने सपाट लहजे में उत्तर दिया ।

ब्यूटी ने चौक कर राय की तरफ देखा ।

“मैं समझता हूँ, शाम हो रही है, अब तुम्हें वापस कोल्हानम लौट जाना चाहिए । राय ने विषय बदलते हुए उसे सुझाव दिया ।

15

चार घंटे बाद जब ब्यूटी वापस कोल्हानम पहुँची तो शाम का धुंधलका रात में तब्दील हो चुका था । मैत्रेयी बरामदे में बैठी कोई पुस्तक पढ़ रही थी । कार पार्क करके ब्यूटी उसके बगल में ही एक कुर्सी खींच कर बैठ गयी ।

अचानक, मैत्रेयी टूटे हुए स्वर में बोली- “सिर्फ एक स्त्री ही जानती है कि अकेलापन क्या होता है । मम्मी थी तो लगता था सारी दुनिया मेरे साथ है । आज पापा भी नहीं हैं तो लगता है, जैसे दुनिया में मैं बिलकुल अकेली हूँ ।

ब्यूटी ने सिर हिलाया ।

मैत्रेयी टूटी हुई आवाज में बोली- “पहले जब मन दुखी होता था तो बुद्ध की मूर्ति के पास चली जाती थी। दोनों हाथ जोड़ कर उनका ध्यान करती थी। एक दिन पापा ने कहा- “‘बुद्ध’ भगवान नहीं हैं। दरअसल, ईश्वर होते ही नहीं। उनसे प्रार्थना मत करो।”

मैने पापा से पूछा- “जब मन बचैन हो जाए, तो क्या करूँ?”

पापा ने उत्तर दिया- “मैडिटेशन करो, शांति मिलेगी? ब्यूटी चुपचाप उसकी बातें सुन रही थी।

“मैने बुद्ध का ध्यान करना शुरू किया। मन को शांति मिलनी शुरू हो गई। लेकिन, पापा को जब यह बात पता चली तो पापा ने नाराज होते हुए कहा- ‘बौद्ध धर्मावलम्बी किसी मूर्ति का ध्यान नहीं कर सकते। यह हमारी नहीं, बल्कि सनातनियों की ध्यान पद्धति है। तुम सिर्फ अपनी आती-जाती साँसों पर अपना ध्यान केन्द्रित करो।”

मैत्रेयी थोड़ी देर के लिए साँस लेने के लिए रुकी, फिर बेहद कमजोर आवाज में बोली- “जानती हो ब्यूटी, जब तक बुद्ध को भगवान मानती थी तो लगता था, मानो वे मेरे आसपास खड़े, मेरे सर पर हाथ फेर रहे हों। लेकिन, पापा ने अचानक सबकुछ बदल दिया। डर के अँधेरे में संबल देने के लिए मेरे पास अब कोई ईश्वर नहीं था। मैं डरती, घबराती अब अकेली हो गई..... और मम्मी भी नहीं रही, मेरे पास! क्योंकि पापा कहते थे कि आत्मायें नहीं होती। ये सिर्फ सनातनियों का फैलाया भ्रम है।” इतना कहकर मैत्रेयी फूट-फूट कर रोने लगी।

ब्यूटी ने उसे रोने दिया। थोड़ी देर बाद जब वह चुप होकर बोली- “पापा की माँ से अक्सर भिड़ंत हो जाती थी, वो कहती- ‘बुद्ध के शांति, अहिंसा और करुणा के सार्वभौमिक सन्देश को तुम हम ‘धर्म’ और ‘कर्मकाण्ड’ की परिधि के अन्दर नहीं जकड़ सकते।” लेकिन, पापा उसपर चीखते, “तुम्हें नहीं पता इन वैदिक लोगों ने बुद्ध के साथ क्या किया है।” फिर, मम्मी उन्हें समझाती- “बुद्ध इस देश के राष्ट्रीय ध्वज पर धर्म-चक्र के रूप में ही नहीं,

बल्कि इसकी राष्ट्र-चेतना में 'विवेक', 'करुणा' और 'अहिंसा' के रूप में उपस्थित हैं।" लेकिन, मम्मी की बातें पापा पर कोई असर नहीं करतीं।

“तुम्हारी मम्मी की मौत कब हुई थी?, ब्यूटी ने सवाल किया।

“तीन साल हो गए, मम्मी को गए हुए। हाराडीह दुर्गा मंदिर के पास कांची नदी में पैर फिसल गया था उसका।

हाराडीह मंदिर का नाम सुनते ही ब्यूटी ने चौक कर मैत्रेयी की तरफ देखा। मैत्रेयी का चेहरा पत्थर की तरह भावहीन हो गया था।

“ये बैग तुम्हारी मम्मी का ही है न?” ब्यूटी ने मैत्रेयी की गोद में पड़े एक लेडीज बैग को उठाते हुए सवाल किया।

मैत्रेयी ने धीरे से आँखें खोली और 'सहमति' की मुद्रा में अपना सिर हिलाया।

थोड़ी देर बाद ठंडी साँस भरती हुई ब्यूटी बोली- “दरअसल “तुम्हारे पापा बुद्ध नहीं बल्कि बुद्ध के नाम पर किसी और के विचार को जी रहे थे।”

मैत्रेयी ने फिर से सहमति की मुद्रा में अपना सिर हिलाया, इस दौरान उसके चेहरे पर अजीब तरह के भाव आ-जा रहे थे।

“चाय पिओगी?” कुछ देर चुप रहने के बाद ब्यूटी ने पूछा।

मैत्रेयी ने हामी भरी।

ब्यूटी चाय बनाने के लिए किचन की ओर बढ़ी तो चौक पड़ी- “पूरा का पूरा ड्राइंग-रूम और तमाम कमरे अस्तव्यस्त पड़े हुए थे। सारी चीजें बिखरी पड़ीं थीं।”

ब्यूटी निकलकर बाहर आई और नाराज होती हुई बोली- “सारे घर का ये क्या हाल बना रखा है?”

मैत्रेयी थके स्वर में बोली- “रात में पापा के अजीब से दोस्त आये थे। पता नहीं क्या खोज रहे थे? मैंने उनसे कह दिया- “जो ले जाना है ले जाओ। जब पापा ही नहीं रहे तो उनकी चीजों की मुझे क्या जरूरत!”

“क्या वह चीज उन्हें मिली,” ब्यूटी ने चौकते हुए सवाल किया

“वे पापा की कई चीजें अपने साथ ले गए। लेकिन, शायद वह चीज नहीं मिली, जिसकी उन्हें तलाश थी। क्योंकि जाते-जाते वे पापा को गन्दी-गन्दी गालियाँ दे रहे थे।”, मैत्रेयी सपाट स्वर में बोली।

वे तुम्हारे पिता को गन्दी-गन्दी गालियाँ दे रहे थे, लेकिन तुमने उनका विरोध नहीं किया। ऐसा क्यों मैत्रेयी?

“वे मेरे पिता को कहाँ गालियाँ दे रहे थे? वे तो किसी फादर विभीषण शाक्य को गालियाँ दे रहे थे”, मैत्रेयी ने रुखे स्वर में उत्तर दिया।

“फादर विभीषण शाक्य” नाम सुनते ही ब्यूटी अपना सिर पकड़ कर बैठ गई। फिर मैत्रेयी को विचारों में डूबा छोड़ वह लाइब्रेरी की तरफ भागी।

*

शाम के पांच बजने ही वाले थे। लाइब्रेरी के अन्दर फर्श की मरम्मत का काम चल रहा था। वह लगभग दौड़ती हुई लाइब्रेरी के सबसे दायें कोने वाले हिस्से में पहुँची। उसने याद किया- इसी कोने में उस दिन प्रो० विभीषण लाल-जिल्द वाली पुस्तक लिए खड़ा था।

उसने सेल्फ में से किताबों को हटा-हटा कर मुआयना करना आरम्भ कर दिया। लगभग दस मिनट की मेहनत के बाद लाल जिल्द वाली पुस्तक मिल गई। यह वही पुस्तक थी, जिसे उसने प्रो० विभीषण के पास देखा था।

उसने जल्दी से उस पुस्तक को आलमारी से बाहर निकला और उसके पन्नों को पलटने लगी। अचानक, उसका कलेजा धक्क से रह गया। शृंग-

सातवाहन वंश की वंशावली के सबसे नीचे एक काले धब्बे के ऊपर हरे पॉइंट पेन से एक नया नाम जोड़ा गया था- “मैत्रेयी शाक्य ।” और, नाम के ऊपर लाल घेरा बना कर उस पर क्रॉस का चिन्ह बना दिया गया था ।

“राय की बात गलत थी । तिस्स के निशाने पर वह नहीं बल्कि मैत्रेयी थी ।”, उसने सोचा ।

उसने इधर-उधर नजर डाली । फिर, उसने जल्दी से पुस्तक को अपने बैग में डाला और वहाँ से तेजी से बाहर भागी ।

*

होस्टल वापस आकर उसने पुस्तक के आखरी पन्ने का मोबाइल फोन से फोटो लेकर पुस्तक के टुकड़े-टुकड़े कर उसे फ्लश कर दिया, और रजाई में घुस गई । आज वह एक निश्चित नींद के साथ सो सकती थी ।

लेकिन, रात इतनी निरापद भी नहीं थी । ठीक, साढ़े ग्यारह बजे उसकी नींद अचानक खुल गई । उसने बैचनी से इधर-उधर देखा । कमरे के भीतर अजीब सा भारीपन था । वह बिस्तर से उठी और आगे बढ़ कर खिड़की के दोनों पट खोल दिए ।

फरवरी की ठंड को समेटे पवन का एक झोंका उसके चेहरे से टकराया । एक पल के लिए उसे थोड़ी राहत मिली । उसने खिड़की से बाहर की तरफ देखा । बाहर स्ट्रीट लाईट की दूधिया रौशनी में पेड़ों पर खिले पलास के फूल अद्भुत सौन्दर्य बिखेर रहे थे । उसे लगा जैसे एक ही रात में सारे के सारे पेड़ पलास के फूलों से ढँक गए हो । अब पेड़ों पर एक भी पत्ता नहीं दिख रहा था ।

लेकिन, अचानक उसकी आँखों के सामने मैत्रेयी का गमगीन चेहरा उभर आया । न जाने किस भाव से अभिभूत हो वह जल्दी से तैयार हुई और मैत्रेयी के घर की तरफ भागी ।

16

उसे मैत्रेयी के घर पहुँचने में सिर्फ पांच मिनट लगे। सारा कोल्हानम गहरी नींद में सोया था, लेकिन प्रो० विभीषण शाक्य के घर का दरवाजा अभी भी आधा से थोड़ा कम खुला हुआ था। अन्दर बत्ती जल रही थी। उसने धीरे से दरवाजा खोला और अन्दर घुसी तो सन्न रह गयी। सामने जो मंजर था, वह आत्मा को हिला देने वाला था। ठीक दरवाजे के सामने मैत्रेयी पेट के बल गिरी हुई थी। उसकी पीठ पर एक लम्बा खंजर धंसा हुआ था और उसका सारा जिस्म खून से सरोबार था।

ब्यूटी ने धीरे से उसके शरीर को छुआ। शरीर ठंडा था। फिर उसने धीरे से उसके शरीर को थोड़ा सीधा किया। मैत्रेयी की छाती से उसकी मम्मी का बैग चिपका हुआ था। ब्यूटी ने काँपते हाथों से उसकी छाती से बैग को अलग किया। बैग खोला और अंदर झाँक कर देखा। बैग के अन्दर भगवान बुद्ध की एक खुबसूरत मूर्ति के अलावा लाल, नीले और हरे रंगों के तीन बाल पॉइंट पेन, और छोटी सी डायरी मौजूद थी।

ब्यूटी ने सावधानीपूर्वक से बैग से तमाम चीजों को बाहर निकाला। डायरी के कवर पर मैत्रेयी ने बहुत सुन्दर हैण्ड राइटिंग से अपना नाम 'मैत्रेयी शाक्य' लिखा था।

यह वही हैंडराइटिंग थी जो उसने लाल जिल्द वाली पुस्तक के अन्दर शृंग और सातवाहनों की वंशावली पर लिखा देखा था। यकीनन, मैत्रेयी ने डायरी पर से उसका नाम काट कर उसकी जगह पर अपना नाम लिख दिया था। ब्यूटी की आँखों से आंसुओं की धार फूटकर मैत्रेयी के चेहरे पर बरसने लगी।

अचानक उसे लगा जैसे उसके ठीक पीछे कोई खड़ा है। वह बिजली की फुर्ती के साथ पीछे पलटी, उसके हाथ की बुद्ध मूर्ति और पीछे खड़े शरक्स

के सिर के बीच महज तीन इंच का फासला था। लेकिन, उस ने शस्त्र अपनी जगह से हिलने तक की जहमत नहीं उठायी।

उसके पीछे खड़ा व्यक्ति राय था।

वह तड़प कर बोली- “राय, तुमने इस दुखी लड़की को मार डाला। इतनी नफरत करते हो बौद्ध धर्म वालों से?”

“मैंने नहीं उसने! राय ने कमरे के एक कोने में गठरी बनकर बैठे एक शक्स की तरफ इशारा किया। बहुत अधिक नशे में है। इसलिए, हमने इसके हाथ बांध दिए हैं।

ब्यूटी ने अँधेरे में आँखें फाड़ कर देखा- सामने पलंग के किनारे, धुप्य अँधेरे में मदहोशी की स्थिति में अविनाश गिरा ऊँघ रहा था।

“राय, आपने तो कहा था कि ये मर चुका है? तिस्स के इस हत्यारे ने, इस गरीब जान को मार दिया। जानते हो, मैत्रेयी ने मुझे बचाने के लिए अपनी जान दे दी।”, ब्यूटी तड़पकर बोली।

राय, खेद भरे स्वर में बोला, “इसे मेरे सामने ही मरी हुई अवस्था में नदी में फेंका गया था। लेकिन, उस दिन ये मरा नहीं था शायद। हो सकता है कि इसपर भी नाग के विष का असर न होता हो। शायद, सांस रोकने की कला भी इसने किसी बौद्ध साधक से सीखी हो।

ब्यूटी उसकी बात अनसुनी करते हुए दुखी स्वर में बोली- “एक बुद्धिस्ट ने हजारों साल पुराने अपने तथाकथित दुश्मन के वंशबीज की रक्षा के लिए अपनी जान दे दी।”

फिर वह गुस्से से चिल्लाई- “राय, आपकी तिस्स वाली कहानी बकवास है!!”

जवाब में राय बोला- “आओ, तुम्हें मैं एक दिलचस्प चीज दिखाता हूँ।” राय, उसे प्रो० विभीषण के अध्ययन कक्ष में लेकर गया। कमरे में मनुस्मृति

की हजारों प्रतियाँ बिखरी पड़ी थी- भारत की लगभग हर छोटी-बड़ी भाषा में। राय व्यंग से बोला- “ये असली मनु स्मृति नहीं हैं। ये विभीषण स्मृति हैं। दोनों गुरु-शिष्य दिन-भर बैठ कर मनुस्मृति के नाम पर खुद की स्मृति लिखते थे, और इन्हें छपवा कर देश के कोने-कोने में बंटवाते थे। ये देश में जातीय नफरत की कभी न खत्म होने वाली दरार डाल रहे थे।”

ब्यूटी ने वहाँ पड़ी दूसरी किताबों का मुआइना किया। पूरा का पूरा कमरा घोर साम्प्रदायिक और जातिवादी भडकाऊ साहित्य और प्रो० विभीषण के झूठे रिसर्च रिपोर्टों से भरा पड़ा था।

थोड़ी देर बाद जब वह कमरे से बाहर निकली तो देखा- अविनाश अपने पैरों पर खड़ा होने की कोशिश कर रहा था।

ब्यूटी उसके ठीक सामने जाकर खड़ी हो गई और कहर भरे स्वर में पूछा - “तूने मैत्रेयी की हत्या की?”

“हाँ मारा! मैंने शुंग-सातवाहन के अंतिम वंशबीज को खतम कर दिया!, विभीषण सर ने सच ही कहा था, बुद्ध का ये महान कार्य मेरे ही हाथों होना निर्धारित था।”, वह गर्व से अपनी छाती चौड़ी करते हुए बोला।

“अरे मुर्ख! क्या प्रो० विभीषण ने यह कहा था कि मैत्रेयी, उसकी अपनी बेटी, शुंग-सातवाहन की अंतिम जीवित वंशबीज हैं, और उसकी हत्या करनी है?”, ब्यूटी ने चीखते हुए पूछा।

उत्तर में अविनाश ने काँपते हाथों से अपना मोबाइल फोन निकला और एक फोटो दिखाता हुआ बोला- “ये देख!”, और वह एक विजेता की तरह अट्टहास करने लगा।

ब्यूटी ने एक नजर उसके मोबाइल स्क्रीन पर डाली- ये वंशावली के उस आखरी पन्ने की फोटो थी, जिसपर उसका नाम काट कर उसकी जगह पर ‘मैत्रेयी शाक्य’ लिखा गया था।

राय उसकी मोबाइल फोन छिनने के लिए आगे बढ़ा, लेकिन, ब्यूटी ने आँखों ही आँखों में उसे मना कर दिया।

“मैं तुम्हारी बुद्ध भक्ति को मान गयी। लेकिन, मैत्रेयी की माँ कैसे मरी थी?”, ब्यूटी ने खुशी से झूमते अविनाश को उकसाया।

“उन्हें तो सर ने खुद ही उफनती कांची नदी में धकेल दिया था।”, अविनाश अपनी सनक में बोलता गया।

ब्यूटी ने सामने पड़े बैग की तरफ इशारा करते हुए अविनाश से पूछा। वह यही बैग लेकर गई थी न उस दिन हाराडीह, कांची नदी के किनारे?”

अविनाश ने ‘हाँ’ की मुद्रा, में अपना सिर हिलाया।

ब्यूटी ने एक नजर अविनाश की तरफ देखा, वह एक बार फिर से नशे से ऊँघ रहा था। यकीनन, उसने कत्ल करने से पहले कोई गहरा नशा किया था।

“राय आपको पता है, विभीषण बौद्ध नहीं था। उसने धर्म-परिवर्तन कर लिया था। उस धर्मान्ध ने धर्म-परिवर्तन नहीं करने पर अपनी ही बौद्ध पत्नी की हत्या कर दी थी।”- ब्यूटी एक पुस्तक के पन्ने को अपने हाथों से पलटती हुई राय से बोली।

“मतलब, इस पढ़े-लिखे प्रोफेसर ने धर्म परिवर्तन के उन्माद में अपना पूरा का पूरा परिवार ही खत्म कर दिया।”, राय अपना सिर ठोकते हुए बोला।

वह बोली- “सिर्फ धर्म परिवर्तन ही नहीं, बल्कि सनातन धर्म संस्कृति से नफरत की वजह से। बौद्ध, जैन, वैदिक सभी धर्मों से उसे नफरत थी।

“राय, आप अपने कांसेप्ट को सुधार लें, ये तिस्स अब कट्टर बौद्ध धर्मावलम्बियों का संगठन नहीं रहा। ये संगठन पूरी तरह से किसी और के हाथों में जा चुका है। वे बौद्ध धर्म का इस्तेमाल ‘मुखौटे’ के रूप में कर रहे

हैं। इनके इरादे कुछ और हैं।”, पुस्तक को वापस मेज पर रखते हुए ब्यूटी बोली।

“हाँ मुझे इसका अंदेशा था”, राय ने सहमति की मुद्रा में अपना सिर हिलाते हुए कहा।

इसके बाद राय ने अविनाश की तरफ इशारा करते हुए पूछा- “इसका क्या करे?”

ब्यूटी निर्णायक स्वर में बोली- “छोड़ दीजिये इसे। इस देश में इसके जैसे लाखों पढ़े-लिखे जातिवादी नशेड़ी हैं, जो अपनी ही सनातन संस्कृति की जड़ें खोद रहे हैं। किसको-किसको मारोगे? इस रेडिकल पागल की जान लेने से कोई फायदा नहीं, क्योंकि, इसके दिमाग का प्रोग्रामर कोई और है।”

“लेकिन इसे इस तरह छोड़ना तुम्हारे लिए खतरनाक है। ये शायद तुम्हे पहचान चुका है। ये पलट कर वार करेगा।”, राय चिंतित स्वर में बोला।

ब्यूटी ने अविनाश की तरफ देखा। उनकी बातें सुनकर जिसके चेहरे का रंग अचानक ही उड़ गया था।

ब्यूटी ने हिकारतभरी नजर से उसकी तरफ देखते हुए पूछा- “क्या सोच रहे हो अविनाश?”

अविनाश निराश भरे स्वर में बोला- “मैं चूक गया?”

“अब तुम्हारे सामने दो ही विकल्प हैं। फांसी की सजा भुगतो या फिर इसे गटक जाओं।”, ब्यूटी जहर भरे स्वर में बोली।

“ये क्या है?” अविनाश निराशा भरे स्वर पूछा।

“ब्लू रिंग ऑक्टोपस का गंगा जल! ये नाग के जहर से भी ज्यादा जहरीला है। महज तीन सेकेण्ड लगेंगे, तुम्हें अपने गुरु के पास पहुँचने में।”, ब्यूटी ने उत्तर दिया।

अविनाश ने अपने काँपते हाथों में सीसी ले ली, एक झटके से उसके अन्दर के तरल को अपने हलक के अन्दर डाल दिया और अगले ही पल, वह खड़े-खड़े उसी जगह पर ढेर हो गया।

“जो नाग के जहर से नहीं मरा उसे कौन सा जहर देकर मार दिया तुमने?, राय ने अविनाश की नब्ज टटोलते हुए पूछा।

“डर का जहर!” ब्यूटी ने बर्फ जैसी ठंडी आवाज में उत्तर दिया।

“अब मुझे क्या करना है? क्या मैं इसे अपने साथ लेता जाऊं? मेरे पास कार भी है, और आदमी भी।”, राय ने विनम्रता से पूछा।

“कुछ नहीं, आप इसके हाथ खोल दीजिये और रांची वापस लौट जाइए। मैं यहाँ सबकुछ संभाल लूंगी।”, ब्यूटी ने उसे आश्चस्त किया।

राय ने सहमति की मुद्रा में अपना सर हिलाया, और अविनाश की हाथों की रस्सी खोलते के बाद मकान से बाहर निकलकर सड़क के उसपार अँधेरे में कहीं गुम हो गया।

राय के ओझल होते ही ब्यूटी वापस अविनाश के पास पहुँची और एक जोरदार लात उसके पेट पर मारा। असहनीय दर्द से बिलबिलाते हुए अविनाश ने अपनी आँखें खोल दी।

ब्यूटी के दाहिने हाथ में एक खंजर था। वही खंजर जो थोड़ी ही देर पहले अविनाश ने मैत्रेयी की पीठ पर घोपा था। आसन्न मौत को निकट जान अविनाश ने कातर नजरों से ब्यूटी की तरफ देखा।

अचानक ही ब्यूटी के चेहरे पर करुणा के भाव उभर आये। अपनी बायीं हाथ से पकड़े बुद्ध की मूर्ति को अविनाश के हाथों में थमाती हुई बोली-

“भगवान् बुद्ध ने भी अंगुलिमाल को एक मौका दिया था। मैं भी देती हूँ। जा, भाग जा तू यहाँ से।”

अविनाश को पुष्पमित्र शृंग के वंशबीज से इतनी दया की उम्मीद कतई नहीं थी। वह इस अप्रत्याशित जीवन-दान से विह्वल होकर बुद्ध की मूर्ति को अपने माथे से लगा कर फूट-फूट कर रोने लगा।

थोड़ी देर बाद जब उसके आंसू थमते तो उसने पलट कर ब्यूटी की तरफ देखा। वह, मैत्रेयी के शव के पास बैठी उसके चेहरे को अलपक निहार रही थी।

अविनाश भी उसके पास जाकर बगल में बैठ गया। अचानक ब्यूटी ने सिर झुका कर अपने दाहिने हाथ में पड़े खंजर की तरफ देखा। फिर अविनाश की तरफ देखा। दोनों की आँखें टकरायीं। एक पल के लिए अविनाश की आँखों में खौफ उतर आया।

लेकिन, उसकी आशंका के उलट, ब्यूटी वह खंजर उसे थमाते हुए बोली- “इस खंजर को अपने पास रख लो, ये तुम्हें तमाम उग्र धर्म के नाम पर किये गए तुम्हारे अधर्म की याद दिलायेगा, और बुद्ध के बताये मार्ग से भटकने नहीं देगा।”

अविनाश ने अपने काँपते हाथों से खंजर ले लिया।

ब्यूटी उसके ठीक सामने अपनी पीठ कर बैठ गयी और अविनाश की तरफ से किसी हिंसक प्रतिक्रिया का इन्तजार करती रही। लेकिन, अविनाश निश्चल था।

थोड़ी देर बाद यँ ही बैठी रहने के बाद ब्यूटी बोली- “हमें अभी, इसी वक्त मैत्रेयी का अंतिम संस्कार करना होगा।”

अविनाश ने सहमति की मुद्रा में धीरे से सिर हिलाया।

इसके बाद अविनाश की मदद से वह मैत्रेयी के शव को प्रो० विभीषण के अध्ययन कक्ष में ले गयी। यह वही जगह थी जहाँ विभीषण के झूठे रिसर्च वर्क और भड़काऊ साहित्य की सैकड़ों पांडुलिपियाँ और किताबें पड़ी हुई थीं।

अविनाश आँगन से आम, करंज और साल की सूखी लकड़ियाँ लेकर आया। फिर, दोनों ने मिलकर चिता के रूप में सजायी गयी इन लकड़ियों के ऊपर बेहद सम्मान के साथ मैत्रेयी के शव को रखा।

फिर, ब्यूटी ने अपने हाथों से मैत्रेयी की चिता को अग्नि के हवाले कर दिया।

थोड़ी ही देर बाद प्रचंड अग्नि के आवेग से प्रो० विभीषण का अध्ययन कक्ष धू-धू कर जलने लगा। साथ ही जलने लगा, वह पाप साहित्य जिसमें सनातन समाज को टुकड़े-टुकड़े करने का बारूद भरा हुआ था।

जलते कक्ष के पास खड़ा अविनाश, अपने हाथों में बुद्ध की मूर्ति को जकड़े धीरे-धीरे लगातार बुदबुदाता जा रहा था- “जन्म-मृत्यु सत्य है, जन्म-मृत्यु सत्य है!”

लगभग आधे घंटे बाद दो मानव आकृतियाँ उस जलते मकान से बाहर निकलीं, एक लड़कियों के होस्टल की तरफ बढ़ गई और दूसरी कोल्हानम के मुख्य द्वार की तरफ ३३३ फिर कभी वापस न लौटने के लिए।

दूसरी आकृति के गेट से बाहर निकलते ही एक हरे रंग की मारुती वेन ठीक उसके सामने आकर रुकी। पिछली बार की भांति ही अविनाश किंकर्तव्यविमूढ़ सा उस कार की पिछली सीट पर जाकर बैठ गया। उसके एक हाथ में बुद्ध की मूर्ति और दूसरे में खंजर अब भी मौजूद था।

17

मैत्रेयी और प्रो० विभीषण की मौत के साल लगते-लगते पूर्ववर्ती घटनाएँ किसी पुराने चलचित्र की तरह कोल्हानम् के मानस-पटल से धीरे-धीरे ओझल हो गईं। और, कोल्हानम् की जिन्दगी अपने पुराने ढर्रे पर चलने लगी। कॉलेज के कैटीन में रिसर्च गुरुओं की महफिलें फिर से सजने लगीं।

इधर ब्यूटी ने भी दो साल होते-होते 'असुर, मुंडा और उनके सनातन धर्म के साथ अंतर्संबंधों पर अपनी पीएचडी का काम समाप्त लिया। आश्चर्यजनक रूप से उसे इस काम में प्रो० मित्रा और प्रो० पांडा से अनपेक्षित सहयोग मिला था। उसकी आशंकाओं के विपरीत प्रो० मित्रा एक बेहतर शिक्षक निकले थे। जाहिर तौर पर हम अपने शिक्षकों के बारे में जितनी बुरी राय बनाते हैं, वे हकीकत में उतने बुरे होते नहीं!

एक दिन, प्रो० मित्रा ने उसे सलाह दी कि उसे रिसर्च के निष्कर्षों पर एक पुस्तक लिखनी चाहिए। प्रो० मित्रा की सलाह पर उसने अपने रिसर्च को मूर्त रूप देने के लिए एक पुस्तक लिखनी शुरू की। नाम रखा- 'कोल्हानम्'

यह नाम इस के पठार मुंडा और असुर सनातन धर्मरक्षकों के प्रति एक श्रद्धांजलि थी, जिन्होंने मरकर भी इस सनातन संस्कृति की रक्षा की थी।

छः महीने की अथक मेहनत के बाद उसकी पुस्तक 'कोल्हानम्' छप कर आ भी गयी। इस पुस्तक में ब्यूटी ने असुर, मुंडा और उनके सनातन धर्म के साथ अंतर्संबंधों की अद्भुत जानकारीयों उपलब्ध करायी थी।

प्रो० पांडा और प्रो० मित्रा के परामर्श से 'कोल्हानम्' के विशाल ऑडिटोरियम में इसी पुस्तक के विमोचन का कार्यक्रम रखा गया। तारीख निर्धारित की गई थी- **शनिवार 28 सितम्बर 2019**

*

निशांत ने पूरी डायरी पढ़ लेने के बाद घड़ी की तरफ देखा। सुबह के चार बज रहे थे। ब्यूटी की डायरी टेबल पर वापस रख वह सोने की कोशिश करने लगा।

अगले दिन जब निशांत की नींद खुली तो दिन के ग्यारह बज रहे थे। फ्रेश होकर निशांत ने जल्दी-जल्दी कपड़े बदले और हॉस्पिटल की तरफ भागा।

हॉस्पिटल की गेट पर पहुँचा तो पाया कि दो पुलिस वाले रिसेप्शन काउंटर पर पहरा दे रहे थे।

वह तेज कदमों से रिसेप्शन काउंटर की तरफ बढ़ा। अपनी जेब से परिचय-पत्र निकाल कर धीरे से काउंटर पर रख, रिसेप्शनिस्ट से पूछा- “जिसे कल रात गोली लगी थी वह लड़की किस कमरे में है?”

रिसेप्शनिस्ट ने उसका परिचय पत्र जांचते हुए हलके से सिर हिलाकर उत्तर दिया- “सात नम्बर रूम, ग्राउंड फ्लोर।”

निशांत तेजी से कदम बढ़ाता हुआ, सात नंबर रूम की तरफ बढ़ा, किन्तु दरवाजे पर पहुँचकर उसे रुकना पड़ा। दो सिपाही कमरे के गेट पर ड्यूटी कर रहे थे।

वह उनसे धीरे से बोला- “मरीज से मिलना है।” सिपाही बहुत रुखाई से बोला- “ऊपर से आदेश है। कोई नहीं मिल सकता।”

निशांत ने अपना कार्ड निकाला और उन्हें दिखाते हुए बोला- “कॉलेज की दोस्त है, पांच मिनट में मिलकर वापस आ जाऊंगा।”

उनमे से एक सिपाही बोला- “ठीक है सर, लेकिन सिर्फ पांच मिनट!

निशांत तेजी से अंदर घुसा। वह ब्यूटी के बेड के पास गया। मरीजों वाली बेड खाली थी। वह लपककर बाथरूम की तरफ भागा। बाथरूम भी खाली था। लेकिन, बाथरूम की खिड़की का सीसा टूटा हुआ था।

वह धीमे कदमों से कमरे से बाहर निकला। सिपाही उसे देख कर शरारत से मुस्कराया- “कॉलेज वाली फ्रेंड से मुलाकात हो गई?”

उसकी बातों को नजरंदाज करते हुए निशांत गंभीरता से बोला- “भाई! तेरी नौकरी तो गई।”

क्यों? सिपाही के चेहरे की मुस्कान एक झटके से गायब हो गई।

“अंदर जाकर देखो!” वह धीरे से बोला।

उसकी बात सुनकर दोनो सिपाही अंदर भागे।

निशांत तेज कदमों से चलता हुआ अस्पताल से बाहर निकल तेजी से घर की तरफ भागा।

उसके मकान का दरवाजा खुला हुआ था। वह दौड़ता हुआ बेडरूम की तरफ भागा। कोल्हानम् की रक्तरंजित प्रति अब भी टेबल पड़ी हुई थी, किन्तु, डायरी गायब थी।

सामने मेज पर एक कप पड़ा था। शायद, किसी ने यहाँ चाय पी थी। वह किचन की तरफ गया। किचन में गैस का बर्नर अभी भी थोड़ा-थोड़ा गर्म था।

उसने अनुमान लगाया- ‘ब्यूटी यहाँ जरूर आई होगी।’

वह वापस बेडरूम की तरफ लपका- काँपते हाथों से कोल्हानम् की प्रति को उठाया। पहले पन्ने को पलटा- बहुत ही खुबसूरत अक्षरों में लिखा था- ‘अलविदा दोस्त!’

इसके बाद वह तेजी से बाहर की तरफ भागा। मोटरसायकिल स्टार्ट कर बिजली की गति से राँची युनिवर्सिटी के जनजातीय विभाग पहुँचा। विभाग का दरवाजा बंद था। उसने ताले पर हाथ फेरा। उसपर जंग लगी हुई थी। मतलब, इसे लम्बे समय से नहीं खोला गया था।

उसने अपनी मोटरसायकिल खूटी जिले की तरफ मोड़ दी। गोली की रफ्तार से मोटर साईकिल चलाते हुए वह एक घंटे में बिमल असुर के घर पहुँचा। दरवाजा खटखटाया तो एक अनजान महिला ने दरवाजा खोला।

उसने धीरे से कहा- “जी, मुझे पार्वती और बिमल असुर से मिलना है।”

तभी एक लम्बे कद का एक काला कलूटा आदमी सिर पर काली पगड़ी बांधे दरवाजे से निकलकर बाहर आया-

“जी मैं ही हूँ बिमल असुर और ये है मेरी पत्नी पार्वती असुर! कहिये, मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ? मैं लोहा गलाता हूँ और ये लोहे के आभूषण बनाती है।”

निशांत ने निराश होकर पश्चिम की तरफ कोल्हान की पहाड़ियों के पार डूबते सूरज की तरफ देखा और वापस जाने ले लिए मुड़ा।

निशांत!” बिमल ने पुकारा।

निशांत ने चौक कर बिमल की तरफ देखा।

अचानक बिमल ने उसकी आँखों में झाँकते हुए एक छोटा सा काला नाग उसकी तरफ तरफ उछाल दिया।

निशांत ने नाग को अपने दाहिने हाथ से पकड़ा और उस भयानक सरीसृप के लपलपाते फन पर अपनी जीभ रख दी। इसके बाद उसने शांत भाव से बिमल की तरफ देखा। पल भर के लिए बिमल और पार्वती के चेहरे पर एक राहतभरी रहस्यमयी मुस्कान कौंध गयी।

तभी पीछे से पार्वती असुर ने आवाज लगाई- “क्या आप निशांत है?”

“जी हाँ!” उसने चौकते हुए उत्तर दिया।

“कोई इसे आपके लिए छोड़ गया है।”, कहते हुए उसने निशांत की तरफ एक छोटा सा बक्सा बढ़ा दिया।

निशांत को राय के स्टील के डब्बे में नाग वाली घटना की याद आ गई। लेकिन, उसने हिम्मत करके डब्बा अपने हाथों में ले लिया और उसे खोलने लगा। डब्बे के अंदर एक छोटी सी हस्तलिखित पर्ची थी, जिसमें लिखा था:

”श्रीमान निशांत सिंह मुंडा, ‘कोल्हानम्’ के सनातन, सरना धर्म संस्कृति रक्षक दल में आपका स्वागत है।”

“धन्यवाद!” निशांत के मुख से शब्द फूटे! इसके बाद वह अपनी मोटरसायकिल को तेजी ड्राइव करता हुआ मुख्य सड़क पर आ गया।

सड़क के पार एक आदिवासी गाँव में, गोद में आदिवासी शिशु लिए एक विदेशी महिला की मूर्ति को लाल पाद के किनारे वाली सफेद साड़ी पहनाकर एक संधाल आदिवासी स्त्री का रूप दिया जा रहा था।

निशांत ने तड़प कर अपने पूर्वजों के बंजर खेतों के उस पार खड़े विशाल पहाड़ों की तरफ देखा। उसे लगा मानों अपने कंठ में हलाहल समेटे, अरबों सालों से साधना में लीन पर्वतों के देवता ‘नीलकंठ मरंगबुरु’, अनायास ही आँखे खोल उसे कोई आदेश दे रहे हों। अचानक, उसे लगा जैसे उसके शरीर में पुष्यमित्र शृंग की आत्मा समा गयी हो।

उसके जबड़े सख्त हो गए और उसकी फौलादी मुठियाँ मोटरसायकिल के हैंडल पर ठीक वैसे ही जकड़ गयीं जैसे तेईस सौ साल पहले असुरों द्वारा निर्मित लोहे तलवार की मूठ पर पुष्यमित्र शृंग की फौलादी उंगलियाँ कसी थीं।

वह धीरे से बुदबुदाया- “हे ब्रह्मांड के प्रथम आदिवासी! हे पहाड़ों के देवता ‘नीलकंठ शिव’! मैं निशांत सिंह मुंडा शपथ लेता हूँ कि बहुत जल्द वापस वापस लौटूँगा।”

*

उससे कुछ ही दूर राँची-खूँटी राजमार्ग पर अपनी कार में बैठे राय ने किसी को फोन किया और उत्साहित स्वर में बोला- “बधाई हो देवी! कोल्हानम् को उसका नया सेनापति मिल गया है!

“आपको भी बधाई!” दूसरी ओर से किसी स्त्री के स्वर उसके कानों में पड़े।

“क्या आपको पता था कि ऐसा होगा? निशांत चयन अनपेक्षित नहीं क्या? राय ने पूछा।

“नहीं! निशांत सिंह मुंडा तो सिर्फ नाम का सेनापति है, असल सेनापति तो उसके अंदर बसी वह सनातन आत्मा है, जो अपने लोगों पर हो रहे सांस्कृतिक आक्रमणों से मर्माहत है। इस पवित्र देश की संस्कृति की आत्मा सिर्फ शहरों और गांवों में नहीं बसती, जंगलों और पहाड़ों में भी बसती हैं. शहर और गाँव नष्ट हो जाते हैं, किन्तु संस्कृतियाँ अनंत सालों तक इन वियावान जंगलों और दुर्गम पहाड़ों की कंदराओं में जीवित रहती हैं। यह प्रकृति पूजक सनातनियों का प्रदेश है, आक्रान्ता देवालयों को तोड़ सकते हैं, लेकिन लाखों एकड़ में फैले इन जंगलों और पहाड़ों में फैली इन वनवासियों की संस्कृति की आत्मा को नष्ट नहीं कर सकते।”

राय ने चिंतित स्वर में पूछा-“अब आपके जख्म कैसे हैं?”

“पहले से बेहतर हैं।”, उधर से उत्तर मिला।

राय ने राहत की साँस लेते हुए प्रश्न किया-“कुछ पता चला, आप पर गोलियाँ चलाने वाले कौन थे?

“पिस्तौल की ट्रिगर पर तिस्स की अलगाववादी विचारधारा की उंगली थी।” उधर से उत्तर मिला।

राय ने सहमति की मुद्रा में सिर हिलाया और पूछा- “अविनाश के लिए क्या आदेश है? वह बौद्ध धर्म त्यागना चाहता है।”

उधर से आदेश मिला- “सरना, सनातन और बौद्ध धर्म एक-दूसरे से अलग नहीं हैं। इस भारत की मिटटी से जन्मा हर धर्म श्रद्धेय है। उसे आदेश दीजिये कि वह तिस्स के सरना-सनातन विरोधी षड्यंत्रों के खिलाफ इस वन-प्रदेश में सांस्कृतिक युद्ध का नेतृत्व करे।” राय ने सहमति की मुद्रा में अपना सिर हिलाया।

दूर पहाड़ों से रात धीरे-धीरे नीचे उतर रही थी। उसने पीछे पलट कर पहाड़ों के पीछे डूबते सूर्य की तरफ देखा। शाम के धुंधलके में निराशा उसके मन पर हावी होने लगी। लेकिन, अगले ही पल उसकी आँखों के सामने निशांत सिंह मुंडा का गुस्से से तमतमाया हुआ चेहरा कौंध गया। “क्या यह मुमकिन है कि कल सुबह यही सूर्य अपनी प्रचंड उर्जा और प्रकाश के साथ वापस नहीं लौटे? सूर्य और सनातन धर्म एक समान हैं- नित्य, नवनीत और पुरातन।” सोचते-सोचते उसके दोनों होठों के मध्य आत्म-विश्वास एक उजली सी रेखा आकाशीय बिजली की मानिंद कौंध गयी।

*

छोटानागपुर के हरित प्रदेश और कोल्हान के पवित्र पहाड़ों से सैकड़ों किलोमीटर दूर महाराष्ट्र के एक छोटे से गाँव के एक छोटे से मकान की छत पर बैठी ब्यूटी नागनिका ने अपना फोन बंद कर एक तरफ रखा और दोनों आँखें मूंद लीं-

‘उसके लिए कोल्हानम का यह सफर आत्मावलोकन का वो सफर था जिसने उसे एक ऐसे युद्ध का नेतृत्व सौंप दिया था जिसका नेतृत्व उसके पूर्वज हजारों साल से करते आ रहे थे और धर्म और संस्कृति की बलिवेदी पर अपना सबकुछ निछावर करते आये थे। उन्हें इतिहास याद नहीं करेगा क्योंकि सीमा पर युद्ध करते हुए उन्होंने अपना बलिदान नहीं दिया था।’

*

फिर ब्यूटी के अनायास ही अपनी आँखे खोल कर सामने बैठी अपनी मां की तरफ देखा जो निर्विकार भाव से चावल के दानों से कंकड़ अलग रही थी। ये वो मां थी जिसने उसे बचपन में अपने स्तन के दूध के साथ नागों का जहर मिला कर पिलाया था क्योंकि उसे पता था कि उसकी बेटी को भविष्य में अपने पिता की तरह ही एक महान युद्ध का नेतृत्व करना था, लेकिन इससे पहले उसे अपनी बेटी को एक कठिन परीक्षा के लिए तैयार भी तो करना था।

।समाप्त।

सन्दर्भ स्रोत एवं ग्रन्थ:

इस उपन्यास के लेखन में क्रम में कई महान इतिहासकारों के द्वारा प्रदत्त सूचनाओं का इस्तेमाल किया गया है। भारतीय संजातिवृत्तक परम आदरणीय शरत्चन्द्र राय (1871-1942) एक भारतीय नृविज्ञानी थे। उन्हें प्रायः भारतीय नृविज्ञान का जनक कहा जाता है। इस उपन्यास के लेखन में शरत्चन्द्र रायजी की कई कृतियों जैसे: 'The Mundas and Their Country' (1912), 'The Oraons of Chota Nagpur' (1915), 'The Birhors' (1925), 'Oraon Religion and Customs' (1927), 'The Hill Bhuiyas of Orissa' (1935), 'The Kharias' Vol-1 (1937), 'The Kharias Vol-2' (1937) आदि की मदद ली गई है। संजीव सान्याल की वर्ष 2016 में प्रकाशित पुस्तक, 'The truth about Ashoka' तथा एक अन्य पुस्तक 'The ocean of churn' का प्रकाशन वाइकिंग पब्लिकेशन द्वारा किया गया है। दोनों किताबों में मगध के सम्राट अशोक के धार्मिक चरित्र को एक नए तरीके से प्रस्तुत कर, कई स्थापित मान्यताओं को चुनौती दी है। कोल्हानम् में वर्णित अशोक का चरित्र इन्हीं किताबों पर आधारित है। भारतीय पुरातात्विक विभाग, राँची द्वारा झारखण्ड के कई स्थानों पर प्रागैतिहासिक असुर स्थलों पर उत्खनन का कार्य किया गया है। इनमे झारखण्ड के खूँटी जिले के हंसा खूँटीटोला, कुंजला, सरिदकेल हैं।

स्रोत:<http://www.asiranchi-g/Attractions&Of&ASI/Asura&Site&Hensa-html,-http://www-asiranchig/Attractions&Of&ASI/Asura&Site&Khuntitola-html,http://www-asiranchig/Attractions&Of&ASI/Asura&Site&Kunjala-html>)

इस उपन्यास में वर्णित काँची नदी के किनारे अवस्थित प्राचीन हाराडीह मंदिर भी भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित एक ऐतिहासिक धरोहर है। इस मंदिर से सम्बंधित सूचनाओं के प्रमुख स्रोत भारतीय पुतातात्विक विभाग द्वारा प्रदत्त सूचनायें तथा जमशेदपुर रिसर्च रिव्यू (ISSN-2320-2750) तथा रिसर्च गेट के वेबलिंग्क <https://www-researchgate-t/publication/327174685> पर उपलब्ध सूचनायें हैं। गुमला के टंगीनाथ धाम से सम्बंधित जानकारी भी भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा प्रदत्त सूचनाओं और अखबारों में छपी खबरों से प्राप्त की गई है। इनमें से प्रमुख स्रोत हैं: <https://hindi-asianetnews-com/jharkhand/mystical&and&interesting&information&related&to&ancient&tanginath&dham&of&jharkhand&kpa&q61ve>। झारखण्ड के पश्चिमी सिंहभूम जिले के चाईबासा से सरजामहातू के प्रसिद्ध प्रागैतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्व का स्थान है। इस स्थान पर हजारों साल पुराने नागों के शिलाचित्र मिले हैं। असुरों और अन्य जनजातियों के सनातन संपर्कों की आरम्भिक जानकारी के स्रोत ऋग्वेद, ऐतरेय ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण हैं। असुरों की उत्पत्ति एवं वंशावली के स्रोत महाभारत एवं पुराण हैं। बिहार के कैमूर में जिले में अवस्थित मुंडेश्वरी देवी का मंदिर भारत के सबसे प्राचीन मंदिरों में से एक है। इस मंदिर से सम्बंधित सूचनायें निम्न स्रोतों से ली गई है। The information plaque erected by the Archaeological Survey of India (ASI) at the site indicates the dating of the temple to 1995 CE BUT The BSRTB fixed it's date in 108 AD। "Alphabetical List of Monuments – Bihar", Serial number 62। Archaeological Survey of India. Archived from the original on 2011-11-03. Times of India. 1 January 2011. छोटानागपुर के नागवंशी राजाओं से सम्बंधित सूचनायें निम्न स्रोतों से ली गई है। Eye on Nagvanshi remains & Culture department dreams of another Hampi at Gumla heritage site www-telegraphindia-com. Archaeologists uncover remains of ancient empire in [Jharkhand] The Lost Kingdom of Navratangarh IndiaMike-

com-1600s% Heera Raja and The Nagvanshis of Chotanagpur, पुष्यमित्र शुंग के शासन काल तथा तथा उसके वंश की जानकारी के प्रमुख स्रोत है-घोष, जे०सी०, “The Dynastic&Name of the Kings of the Pushyamitra Family, J-B-O-R-S] Vol- XXXIII] 193. इसी प्रकार दक्षिण के आंध्र भृत्य सातवाहनों से सम्बंधित सूचनाओं के स्रोत हैं: Nagaswamy, N (1995) Roman Karur, Brahadrakashan, OCLC 191007985, Panneerselvam] R(1969), Further light on the bilingual coin of the Satwahan, Indo&Iranian Journal, 4 10-1163/000000069790078428, Yandel, Keith (2000), Religion and Public Culture% Encounters and Identities in Modern South India] Routledge Curzonए पृ० 235, 253, । सातवाहन रानी नगनिका से सम्बंधित सूचनाओं के स्रोत मुख्यतः महाराष्ट्र का नानाघाट अभिलेख, तथा शुभांगी भडबाहे की मराठी किताब ‘नागनिका’ है। इस उपन्यास को लिखने के क्रम में कई बौद्ध ग्रंथों यथा- अशोकवदन, दिव्यावदान तथा जैन धर्म पर आधारित आलेखों E- Allen(2014), ‘Rude Travel: Down The Sages vir sanghavi’- Richardson(2012), ‘Seeing Krishna in America% The Hindu Bhakti Tradition of Vallabhacharya in India and Its Movement to the West] McFarland’] ISBN 9780786459735- Shukla] U N; Kulshreshtha] Sharad Kumar (2019)] ‘Emerging Trends in Indian Tourism and Hospitality% Transformation and Innovation’] Copal Publishing Group] ISBN 9789383419760 आदि की भी मदद ली गई है।

संदर्भ स्रोत एवं ग्रन्थ:

1. शरतचन्द्र राय(1912), 'द मुंडस एंड देस कंट्री'
2. शरतचन्द्र राय(1915), 'द ओरांस ऑफ छोटा नागपुर'
3. शरतचन्द्र राय(1925), 'द बिरहोर्स'
4. शरतचन्द्र राय(1927), 'ओरोन धर्म और रीति-रिवाज'
5. संजीव सान्याल(2015), 'द टुथ अबाउट अशोका', वायकिंग प्रकाशन
6. संजीव सान्याल(2016), 'द ओसन आफ चर्न', वायकिंग प्रकाशन

7. <http://www-asiranchi-g/Attractions&Of&ASI/Asura&Site&Hensa-html>,
8. <http://www-asiranchi-g/Attractions&Of&ASI/Asura&Site&Khuntitola-html>
9. <http://www-asiranchi-rg/Attractions&Of&ASI/Asura&Site&Kunjala-html>
10. <https://www-researchgate-t/publication/327174685>
11. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) द्वारा साइट पर लगाई गई सूचना पट्टिका मंदिर के निर्माण काल का संकेत देती है 1995 CE BUT बीएसआरटीबी ने तय किया कि यह तारीख 108 ईस्वी सन् की तारीख है (https://en.wikipedia.org/wiki/File:Information_board_at_Mundeshwari_devi_temple.jpg)
12. स्मारकों की वर्णमाला सूची-बिहार", क्रमांक 62, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
13. L.S.S. O'malley (2005), बिहार और उड़ीसा गजेटियर्स शाहाबाद, संकल्पना प्रकाशन कंपनी, पीपी, 36, 157. आईएसबीएन 978-81-7268-122-7
14. "बिहार के मंदिर और महापुरुष, मुंडेश्वरी", Hindubooks.org,
15. <https://www.oneindia.com/2009/05/11/archaeologist-suncover-remains-of-ancient-empire-injharkhan.html>
16. रावत, एस (2015), हिंदू धर्म की जनजातीय जड़ें, भारत: वंदना प्रकाशन
17. कुमार तिवारी, शिव (2002), हिंदू धर्म के आदिवासी मूल, सरूप एंड संस, पी, 264. आईएसबीएन 8176252999
18. पालीवाल, बी.बी. (2005), पुराणों का संदेश, डायमंड पॉकेट बुक्स लिमिटेड पी, 21. आईएसबीएन 978-8-12881-174-6
19. अशोक कुमार सेन (2017), अविभाज्यता, लैंडस्केप और इतिहास: भारत में आदिवासी स्व-फैशन, टेलर और फ्रांसिस, आईएसबीएन 978-1-351-61186-2
20. घोष जे० सी० (1937), "पुष्यमित्र परिवार के राजाओं के वंश और नाम, J-B-O-R-S, Vol- XXXIII,

21. <https://www-indiaolddays-com/kanv&vansh&ka&sansthaapak&kaun&tha>
22. शुभांगी भदभडे (२०१४), नागनिका, प्रकाशक: एनआईपी और डी-भारतीय ज्ञानपीठ, आईएसबीएन 93323233263523, 6932635223748
23. नागनिका: द क्वीन हू लेफ्ट ए मार्क, <https://www.livehistoryindia.com/herstory/2017/06/23/the-queen-who-left-a-mark>
24. नागास्वामी, एन (1995), रोमन करूर, ब्रहाड प्रकाशन, ओसीएलसी 19100798
25. यंडेल, कीथ (2000), धर्म और सार्वजनिक संस्कृति: आधुनिक दक्षिण भारत में मुठभेड़ और पहचान, रूटलेज कर्जन, आईएसबीएन 0-7007-1101-5

©सर्वाधिकार सुरक्षित